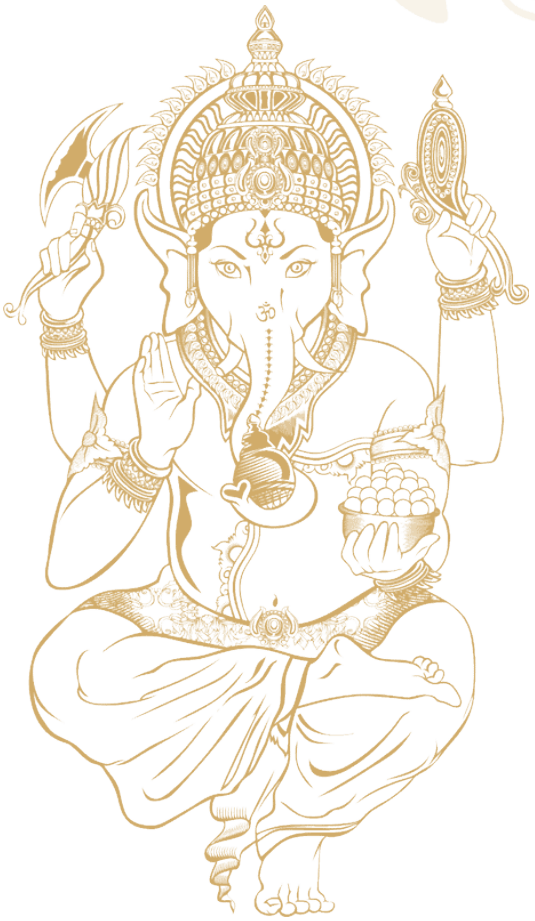

Mr.

02 Sep 2025

12:33 PM

Mumbai

Model: Web-KundliDarpan **Order No: 119468701**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**02/09/2025**
दिवस	मंगळवार
जन्म समय	**12:33:00 कला**
इष्ट	15:22:26 घटी
स्थान	**Mumbai**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	18:58:00 उत्तर
रेखांश	72:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:38:40 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	11:54:20 कला
वेलान्तर	00:00:19 कला
साम्पातिक वेल	10:41:05 कला
सूर्योदय	06:24:01 कला
सूर्यास्त	18:52:10 कला
दिनमान	12:28:09 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्याचे अंश	15:51:55 सिंह
लग्नाचे अंश	10:24:38 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	वृश्चिक – मंगळ
राशि–स्वामी	**धनु – गुरु**
नक्षत्र–चरण	**मूल – 3**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	प्रीति
करण	तैतिल
गण	राक्षस
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	उंदीर
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	भा–भरत
पाया(राशि–नक्षत्र)	रजत – ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	भाद्रपद	11
पंजाबी	संवत : 2082	भाद्रपद	18
बंगाली	सन् : 1432	भाद्रपद	16
तमिल	संवत : 2082	अवानी	17
केरल	कोल्लम : 1201	चिमगम	17
नेपाली	संवत : 2082	भाद्रपद	17
चैत्रादी	संवत : 2082	भाद्रपद	शुक्ल 10
कार्तिकादी	संवत : 2082	भाद्रपद	शुक्ल 10

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 10
तिथि समाप्ति वेल _____: 27:53:13
जन्म तिथि _____: 10
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: मूल
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 21:51:02 कला
जन्म योग _____: मूल
सूर्योदय समयी योग _____: प्रीति
योग समाप्ति वेल _____: 16:39:13 कला
जन्म योग _____: प्रीति
सूर्योदय समयी करण _____: तैतिल
करण समाप्ति वेल _____: 15:23:06 कला
जन्म करण _____: तैतिल
भयात _____: 41:34:57
भभोग _____: 64:50:02
भोग्य दशा वेल _____: केतु 2 वर्ष 6 मा 10 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिवस _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मांजर
लग्न _____: धनु
रवि _____: तुला
चन्द्र _____: मीन
मंगळ _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

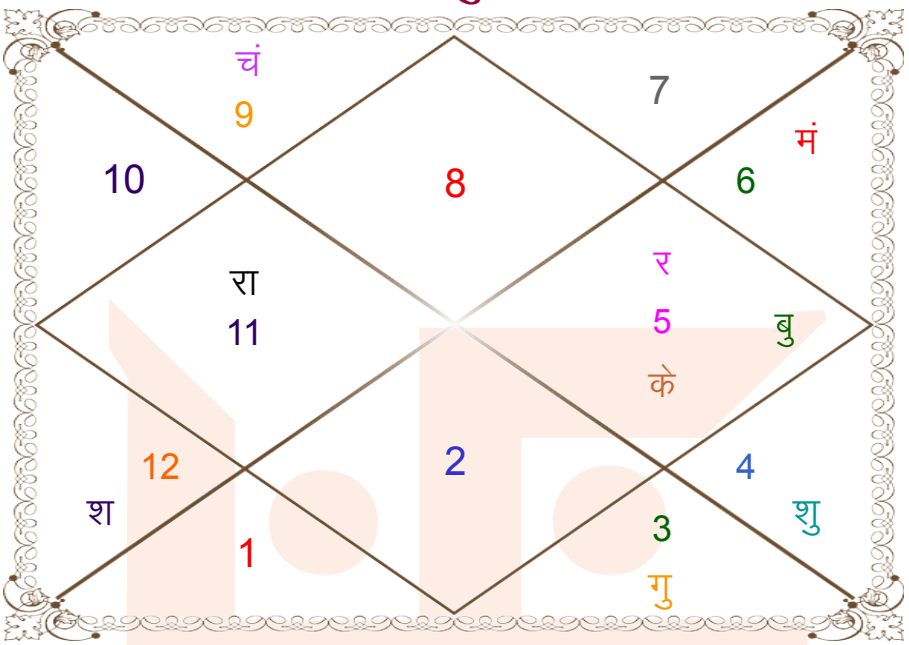

चन्द्र कुंडली

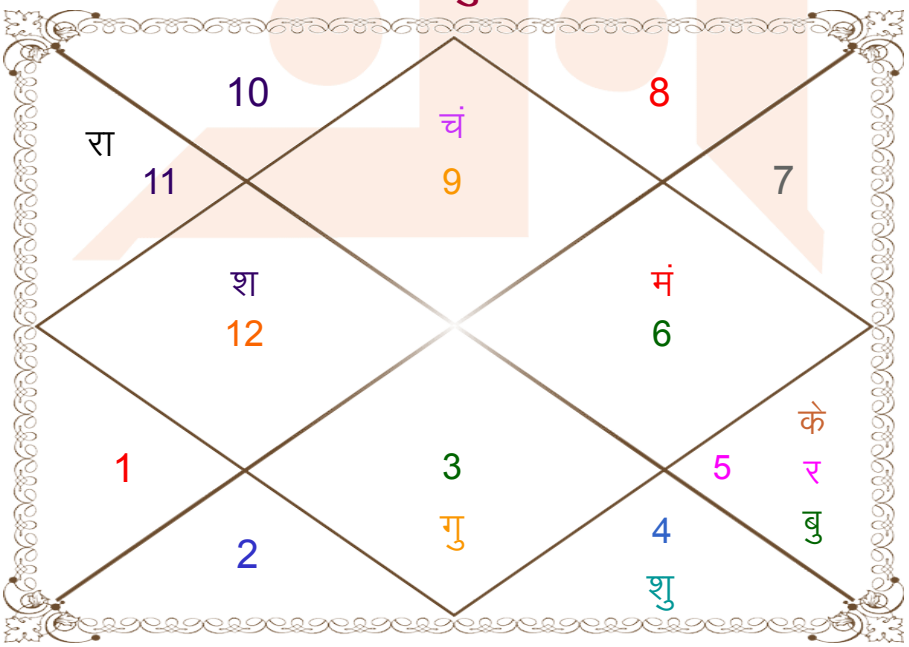

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

लग्न कुंडली

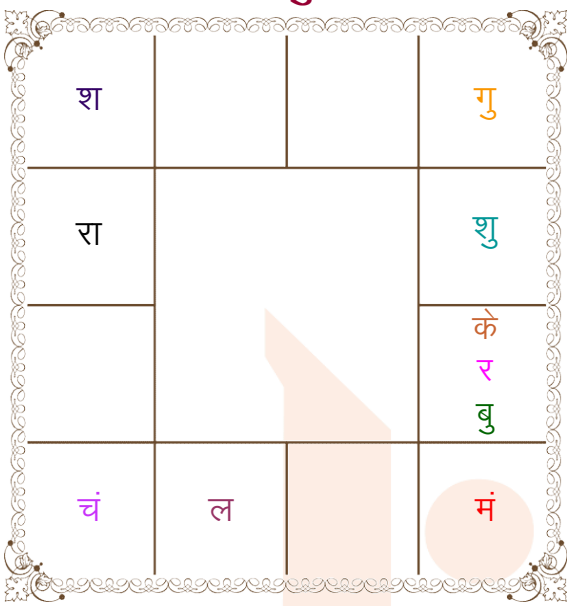

विंशोत्तरी

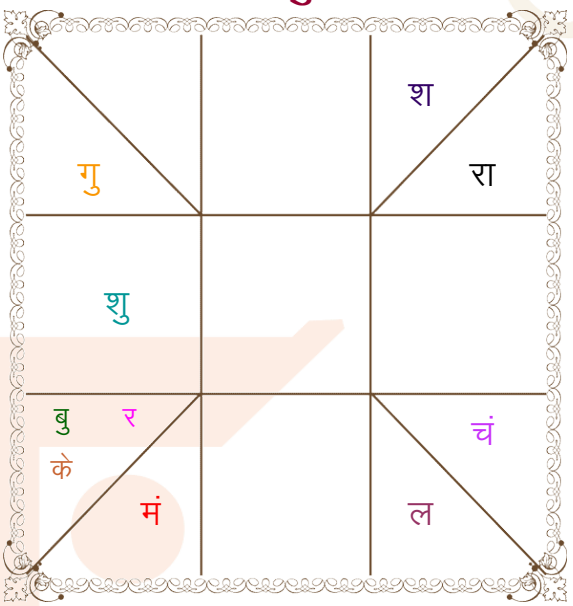

केतु 2वर्ष 6मा 10दि

केतु

02/09/2025

15/03/2141

केतु	14/03/2028
शुक्र	14/03/2048
रवि	14/03/2054
चन्द्र	14/03/2064
मंगळ	15/03/2071
राहु	14/03/2089
गुरु	15/03/2105
शनि	15/03/2124
बुध	15/03/2141

योगिनी

उल्का 2वर्ष 2मा 0दि

उल्का

02/09/2025

03/11/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	02/09/2025
पिंगला	02/11/2025
धान्या	04/05/2026
भ्रामरी	03/01/2027
भद्रिका	03/11/2027

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	10:24:38	320:29:57	अनुराधा	3	17	मंगळ	शनि	सूर्य	———
सूर्य			सिंह	15:51:55	00:58:05	पू.फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	सूर्य	मूलत्रिकोण
चंद्र			धनु	08:30:56	12:22:38	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	सम राशि
मंगळ			कन्या	22:32:15	00:39:02	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि
बुध			सिंह	05:16:48	01:54:19	मघा	2	10	सूर्य	केतु	मंगळ	मित्र राशि
गुरु			मिथु	23:53:12	00:10:39	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	शनि	शत्रु राशि
शुक्र			कर्क	14:53:48	01:12:08	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	गुरु	शत्रु राशि
शनि	व		मीन	05:42:59	00:04:13	उ.भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	सम राशि
राहु	व		कुंभ	24:09:55	00:00:58	पू.भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	24:09:55	00:00:58	पू.फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			वृष	07:14:26	00:00:12	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	केतु	———
नेप	व		मीन	07:06:44	00:01:31	उ.भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	———
प्लूटो	व		मक	07:32:11	00:01:02	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	———
दशम भाव			सिंह	14:26:04	--	पू.फाल्गुनी	--	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 24:13:00

लग्न–चलित

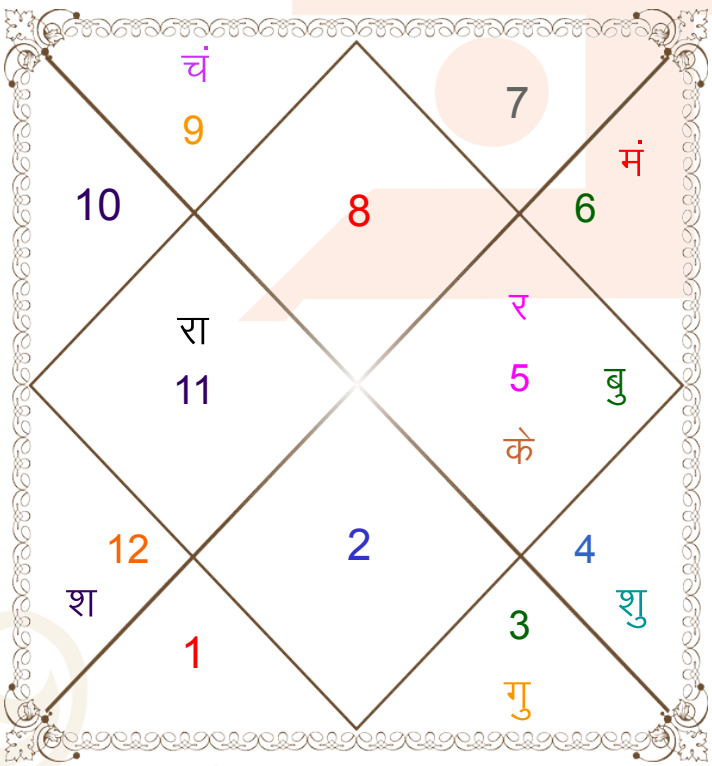

चन्द्र कुंडली

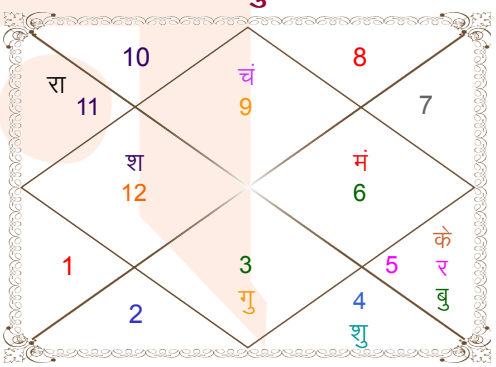

नवमांश कुंडली

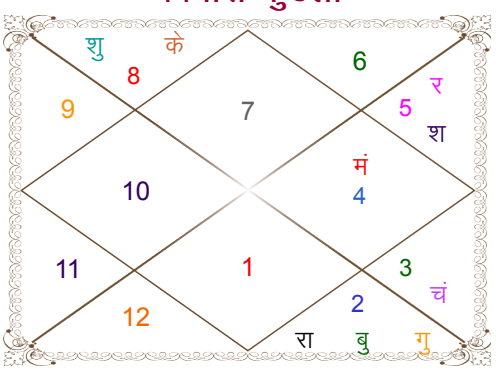

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	तुला	26:04:52	वृश्चिक	10:24:38
2	वृश्चिक	26:04:52	धनु	11:45:06
3	धनु	27:25:21	मकर	13:05:35
4	मकर	28:45:49	कुम्भ	14:26:04
5	कुम्भ	28:45:49	मीन	13:05:35
6	मीन	27:25:21	मेष	11:45:06
7	मेष	26:04:52	वृषभ	10:24:38
8	वृषभ	26:04:52	मिथुन	11:45:06
9	मिथुन	27:25:21	कर्क	13:05:35
10	कर्क	28:45:49	सिंह	14:26:04
11	सिंह	28:45:49	कन्या	13:05:35
12	कन्या	27:25:21	तुला	11:45:06

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	10:24:38
2	धनु	09:59:03
3	मकर	11:26:27
4	कुम्भ	14:26:04
5	मीन	16:25:55
6	मेष	15:01:50
7	वृषभ	10:24:38
8	मिथुन	09:59:03
9	कर्क	11:26:27
10	सिंह	14:26:04
11	कन्या	16:25:55
12	तुला	15:01:50

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली

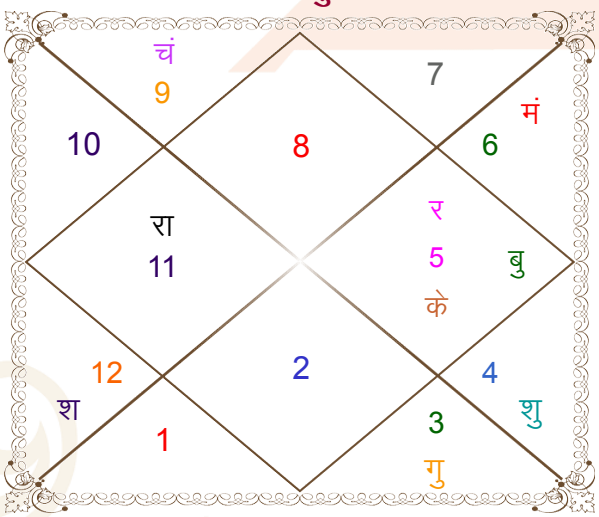

भाव कुंडली

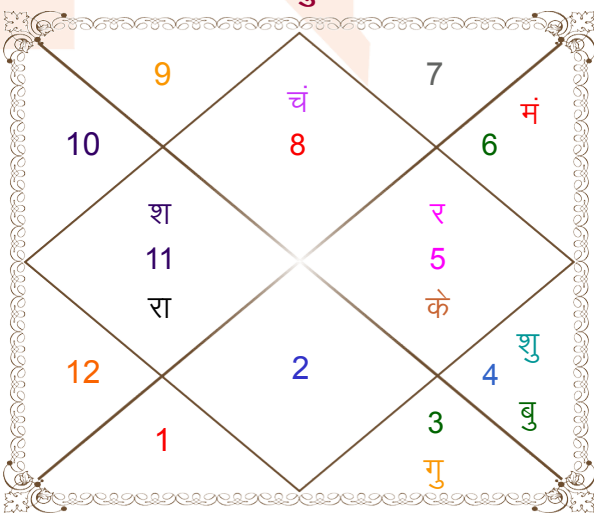

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भ्रातृ	पितृ	युवा	स्वस्थ	शयन	6.01	95 %
चंद्र	पुत्र	मातृ	कुमार	शान्त	निद्रा	0.89	21 %
मंगळ	अमात्य	भ्रातृ	कुमार	खल	नेत्रपाणि	1.51	28 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	बाल	मुदित	उपवेशन	3.90	55 %
गुरु	आत्मा	धन	वृद्ध	खल	नृत्यलिप्सा	6.57	55 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	युवा	खल	आगमन	1.28	62 %
शनि	ज्ञाति	आयुष्य	मृत	शक्त	नृत्यलिप्सा	1.48	30 %
राहु	———	ज्ञान	मृत	मुदित	नृत्यलिप्सा	0.00	32 %
केतु	———	मोक्ष	मृत	खल	आगमन	0.00	32 %
एकुण						**21.64**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली

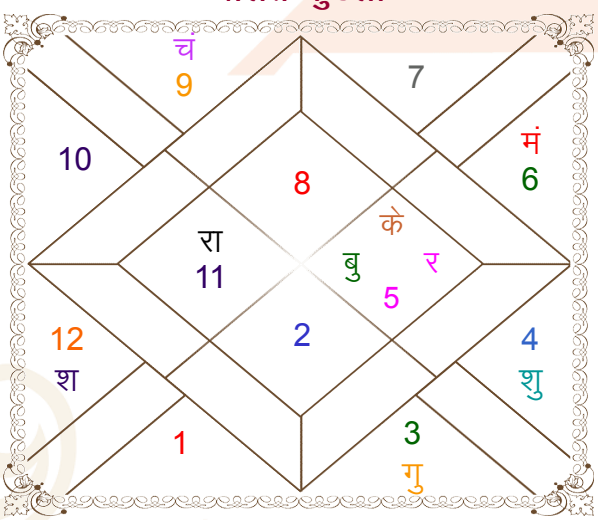

लग्न–चलित

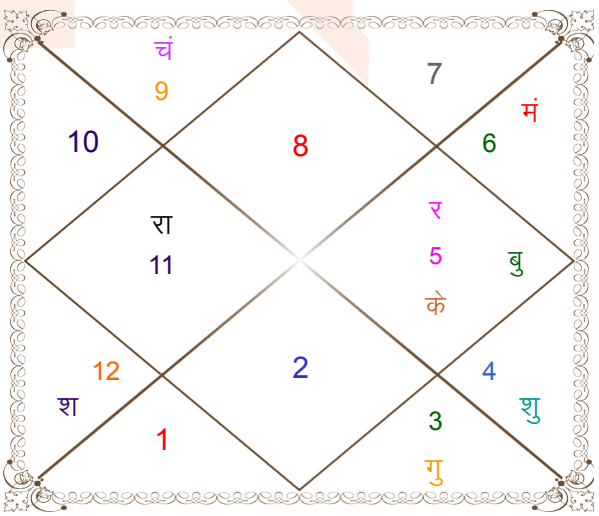

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

सुदर्शन चक्र

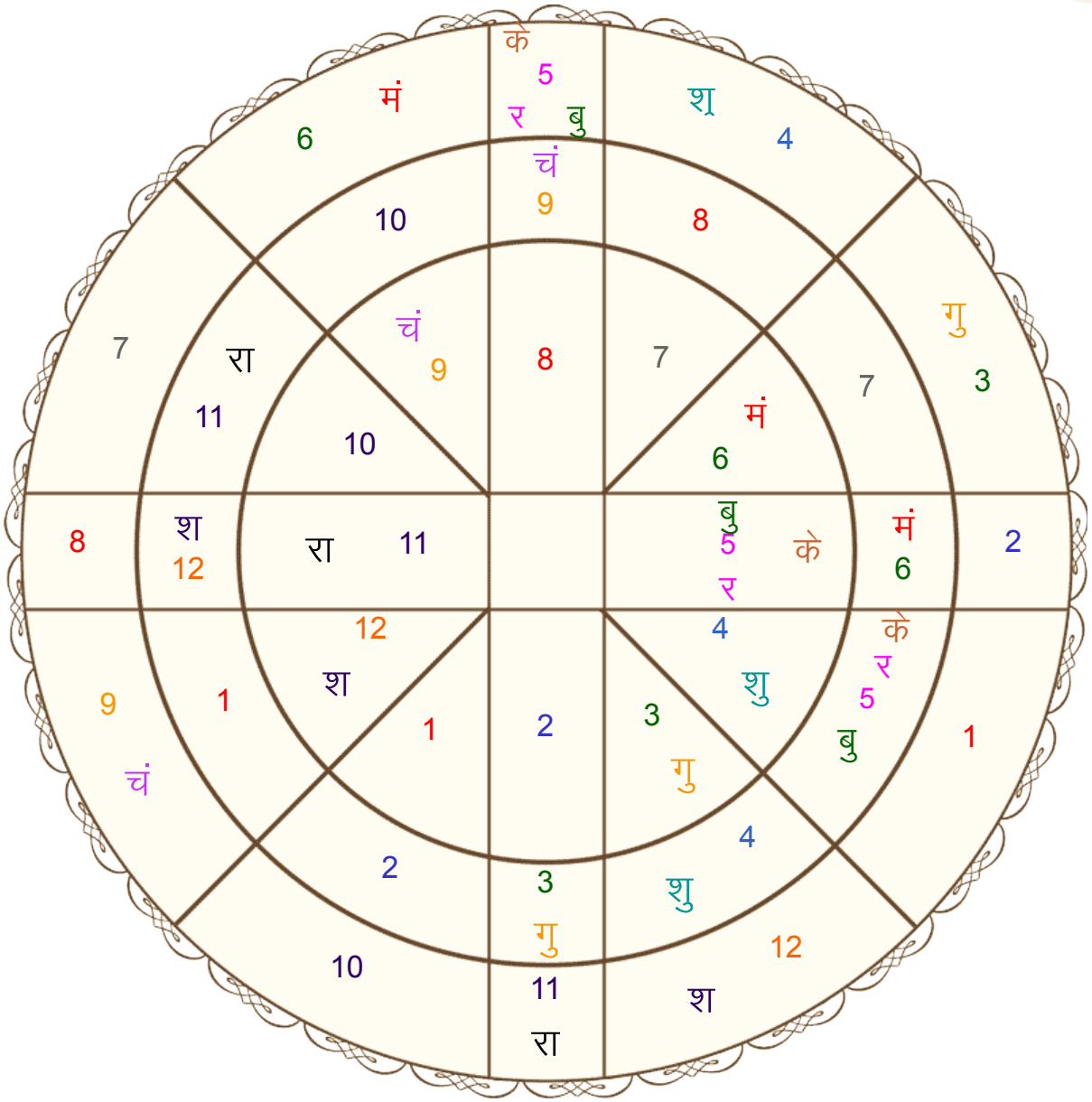

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहेरील वृत्ता पासून अन्तर वृत्ता पर्यंत रवि, चन्द्र व जन्मागं कुंडली मधील ग्रहांची तुलनात्मक स्थिती दर्शावित आहे. कोणत्या ही भावाचा विचार करन्या साठी त्या भावाला प्रकट करनारया तीनी राशिचां विचार करावा.

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा वेल : केतु 2 वर्ष 5 महिना 20 दिवस

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		सिंह	15:58:21	सूर्य	शुक्र	सूर्य	शनि
चंद्र		धनु	08:37:22	गुरु	केतु	गुरु	शुक्र
मंगळ		कन्या	22:38:42	बुध	चंद्र	शुक्र	केतु
बुध		सिंह	05:23:15	सूर्य	केतु	मंगळ	शुक्र
गुरु		मिथु	23:59:38	बुध	गुरु	बुध	बुध
शुक्र		कर्क	15:00:14	चंद्र	शनि	गुरु	गुरु
शनि	व	मीन	05:49:26	गुरु	शनि	बुध	शुक्र
राहु	व	कुंभ	24:16:22	शनि	गुरु	बुध	शुक्र
केतु	व	सिंह	24:16:22	सूर्य	शुक्र	बुध	केतु
हर्ष		वृष	07:20:52	शुक्र	सूर्य	केतु	राहु
नेप	व	मीन	07:13:10	गुरु	शनि	बुध	शनि
प्लूटो	व	मक	07:38:38	शनि	सूर्य	केतु	शनि

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	वृशि	10:31:04	मंगळ	शनि	सूर्य	राहु
2	धनु	10:05:30	गुरु	केतु	शनि	शुक्र
3	मक	11:32:54	शनि	चंद्र	मंगळ	बुध
4	कुंभ	14:32:30	शनि	राहु	केतु	शुक्र
5	मीन	16:32:21	गुरु	शनि	गुरु	राहु
6	मेष	15:08:17	मंगळ	शुक्र	शुक्र	बुध
7	वृष	10:31:04	शुक्र	चंद्र	चंद्र	शनि
8	मिथु	10:05:30	बुध	राहु	गुरु	मंगळ
9	कर्क	11:32:54	चंद्र	शनि	चंद्र	शनि
10	सिंह	14:32:30	सूर्य	शुक्र	शुक्र	गुरु
11	कन्या	16:32:21	बुध	चंद्र	शनि	शुक्र
12	तुला	15:08:17	शुक्र	राहु	केतु	बुध

के.पी. अयनांश : 24:06:34

फॉरच्युना : मीन 03:10:06

लग्न कुंडली

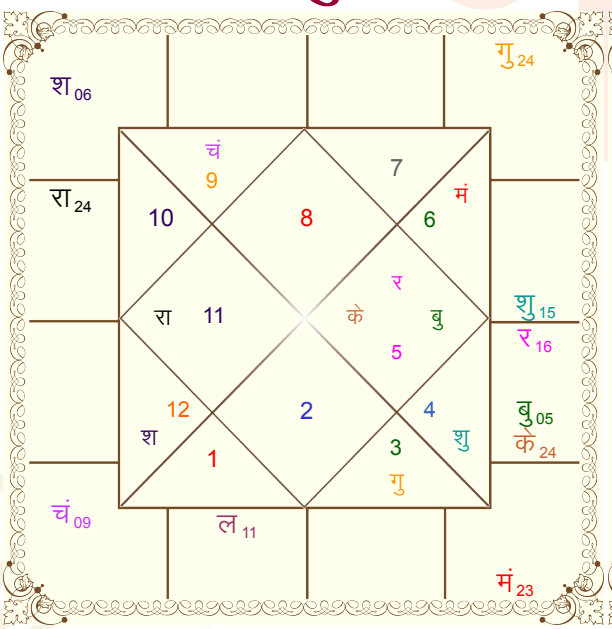

भाव कुंडली

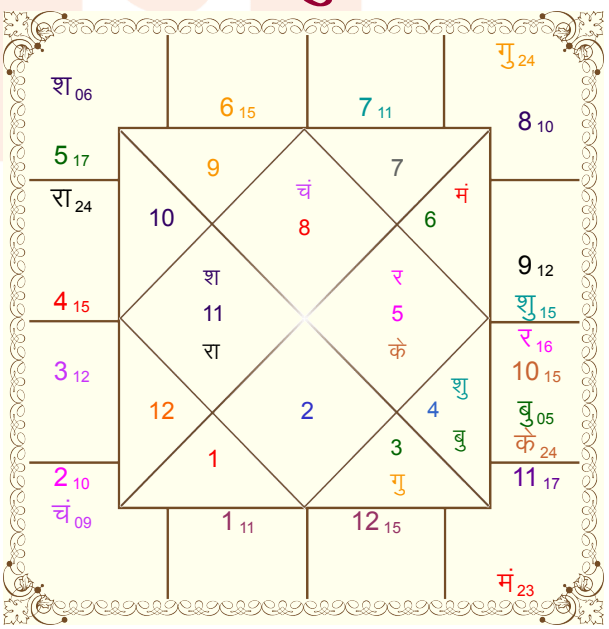

SURESH MAHARAJ

ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .

+91 9860000004

suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र, मंगळ+
2	गुरु, राहु–
3	शुक्र– शनि,
4	शुक्र+ शनि+ राहु,
5	गुरु, राहु–
6	मंगळ–
7	सूर्य– शुक्र– केतु–
8	बुध– गुरु+ राहु,
9	सूर्य, चंद्र– मंगळ– बुध, शुक्र, केतु,
10	सूर्य, चंद्र, बुध, केतु,
11	मंगळ, बुध–
12	सूर्य– शुक्र– केतु–

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	7- 9, 10, 12-
चंद्र	1, 9- 10,
मंगळ	1+ 6- 9- 11,
बुध	8- 9, 10, 11-
गुरु	2, 5, 8+
शुक्र	3- 4+ 7- 9, 12-
शनि	3, 4+
राहु	2- 4, 5- 8,
केतु	7- 9, 10, 12-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	मंगळ
राशि नक्षत्र स्वामी	केतु
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	मंगळ
लग्न अन्तर स्वामी	रवि
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न चा विस्तार होत आहेत. प्रत्येक कुंडली चा एक विशेष लक्ष्य होत आहेत, खालील पत्रिका मदी वर्णन दिले आहेत. हे कुंडलिया कुटला विषय चा प्रतिनिधित्व करते ते आपण समझु शकते. हे चा अध्ययन मूल जन्मपत्रिका बरोबर केला पाहिजे. पूर्ण लक्ष देउन हे पत्रिकाचा अभ्यास करायचे, कारण ईथे ग्रहांची दृष्टि नाहीं होती. साधारणपणे ग्रहांचा आचरण ते राशि चा भाव पर्यंत सिमित राहतो, ते हे वर्गीय पत्रिकेत स्थित आहे.

रवि कुंडली

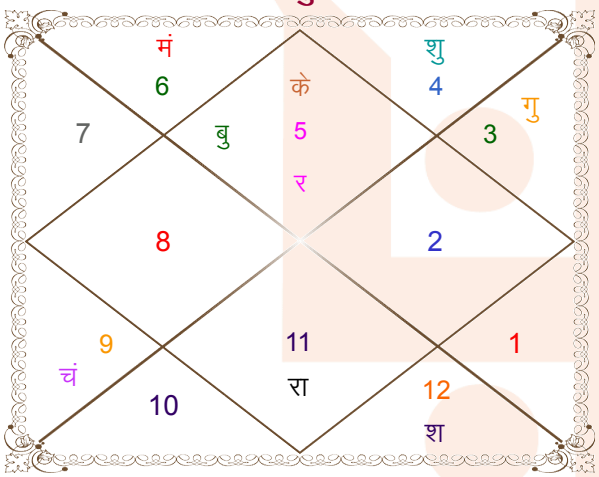

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

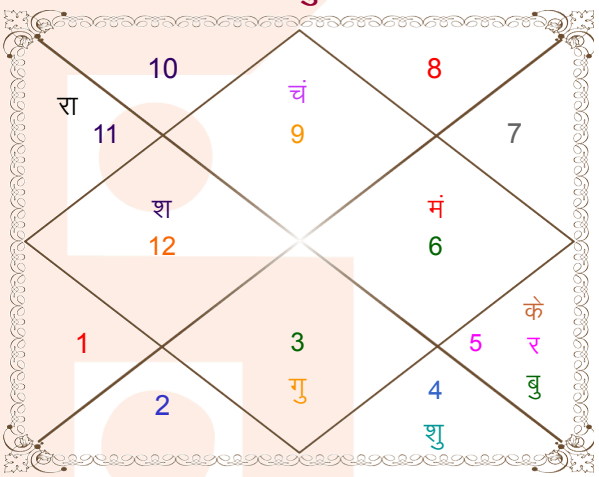

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

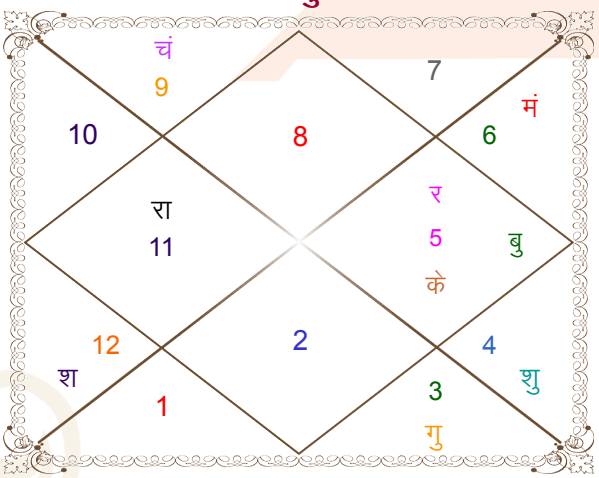

देह विचारः

होरा कुंडली

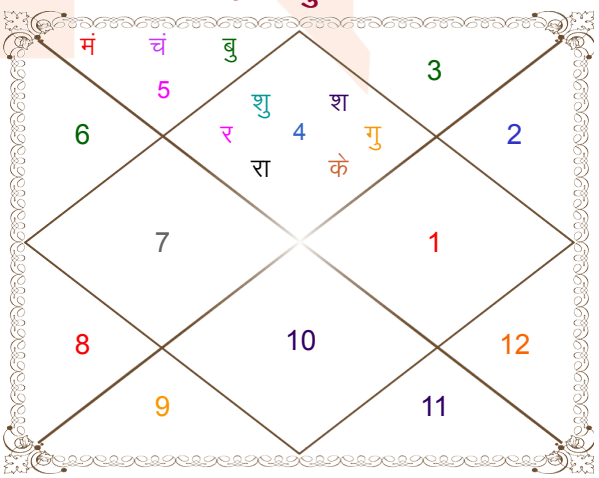

सम्पदाविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

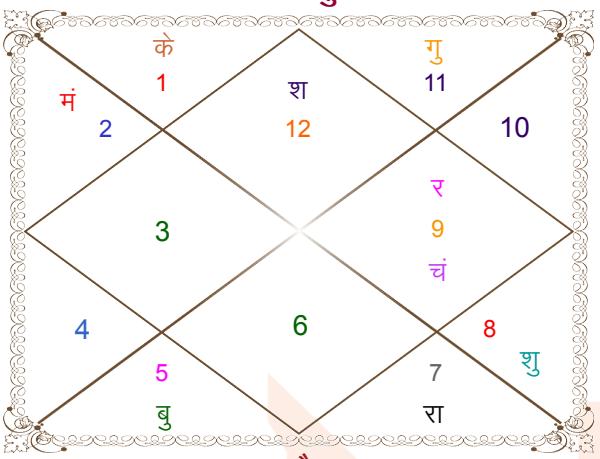

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

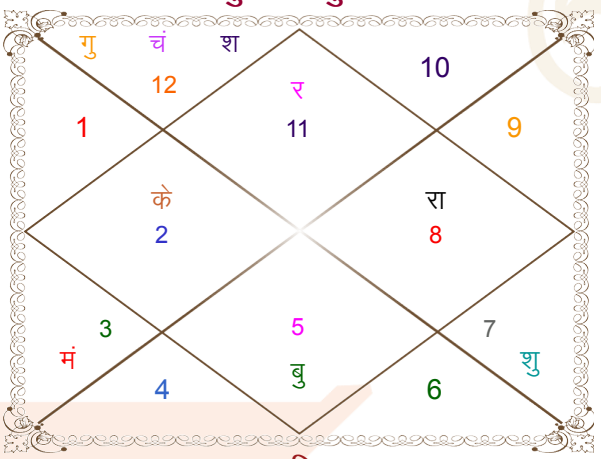

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

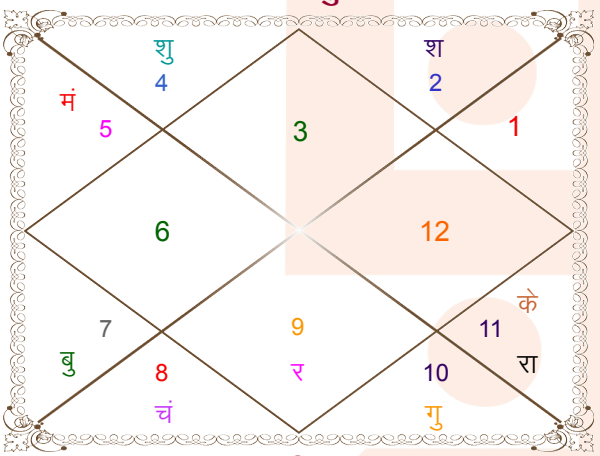

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

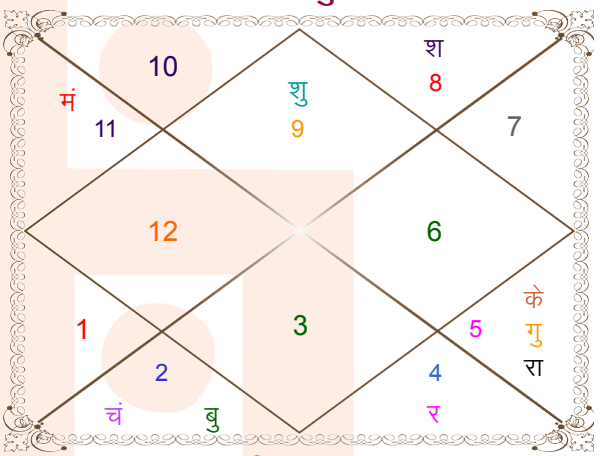

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

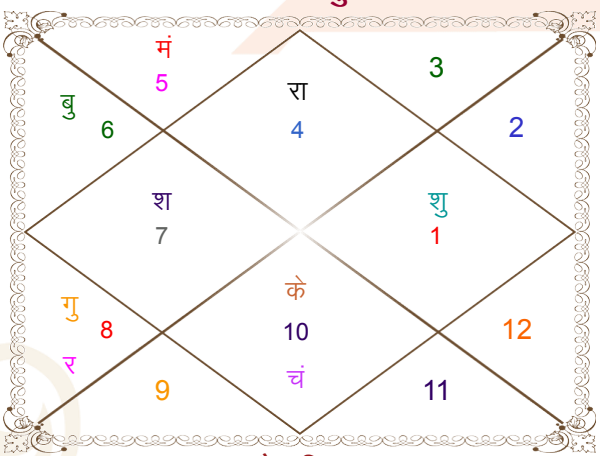

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

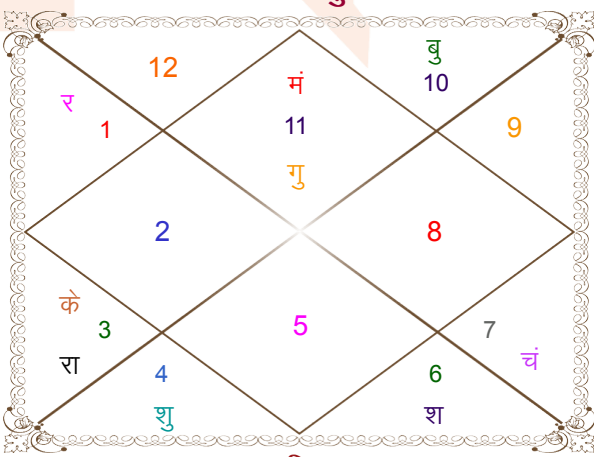

आयुविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

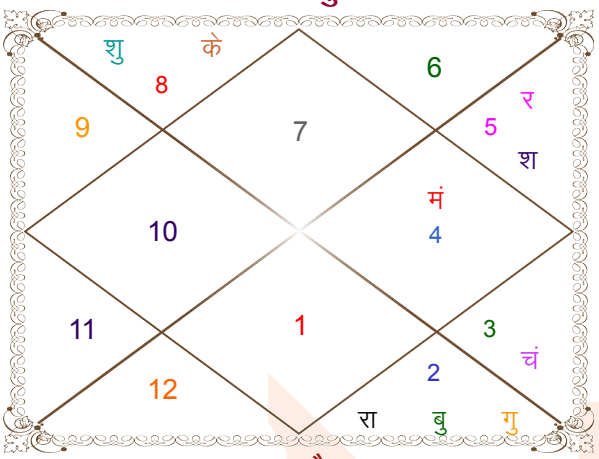

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

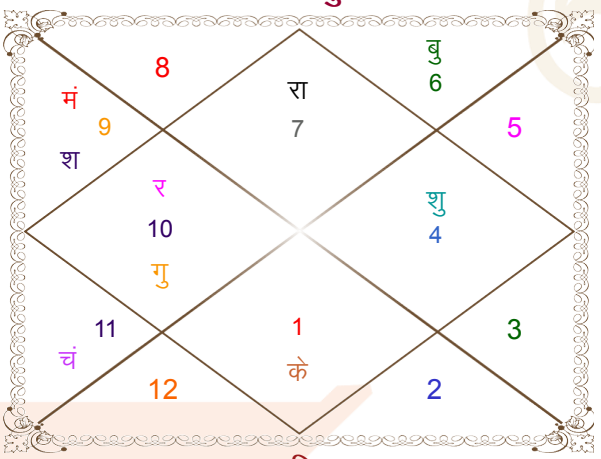

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

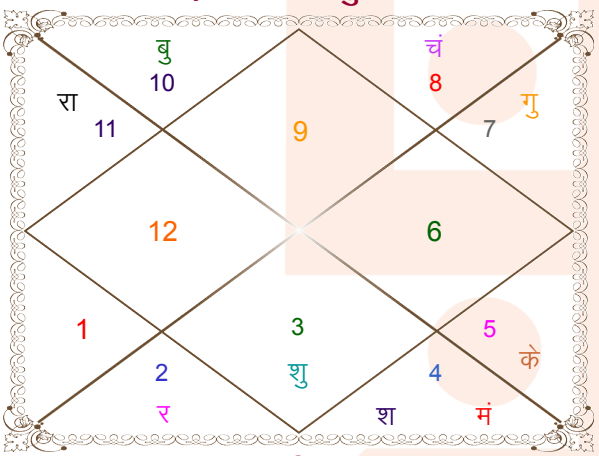

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

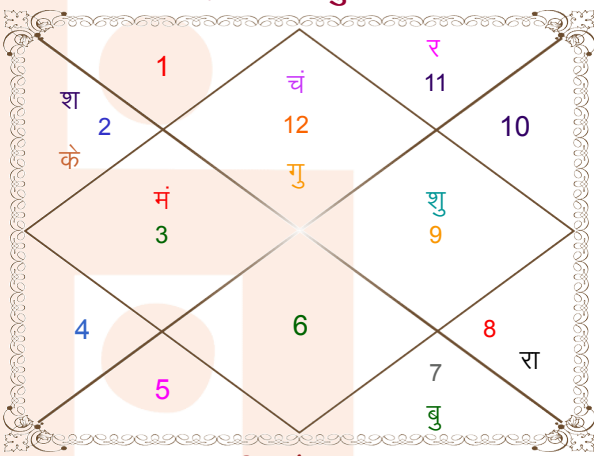

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

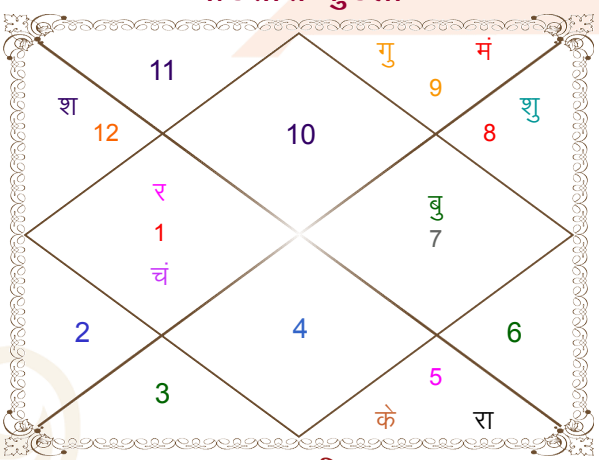

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

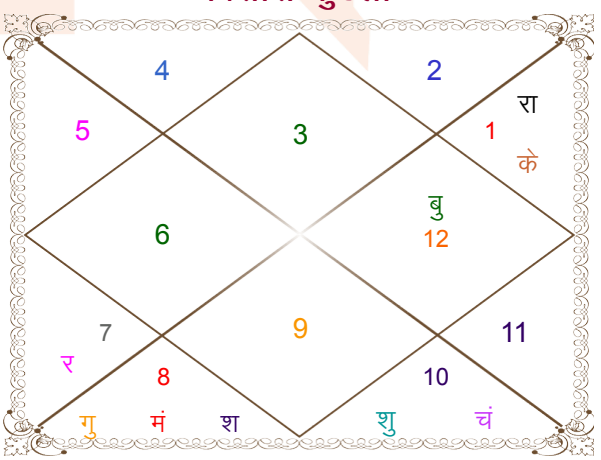

उपासनाज्ञानम्

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

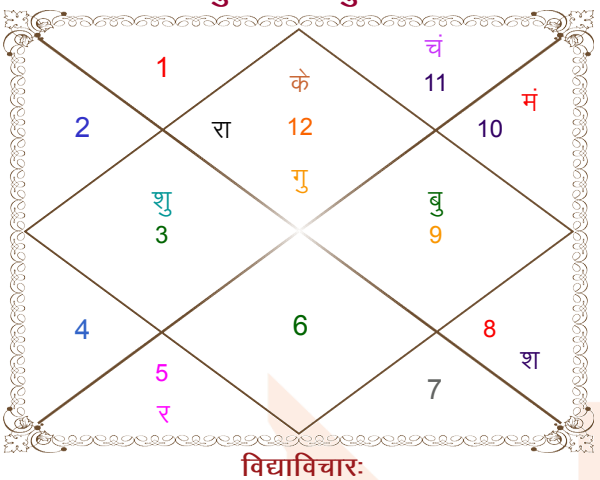

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

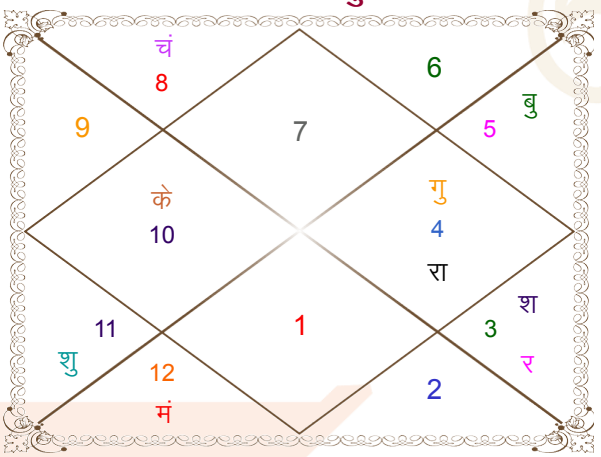

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

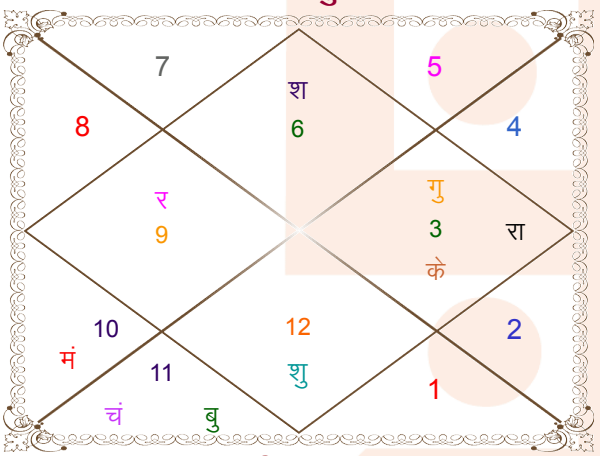

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

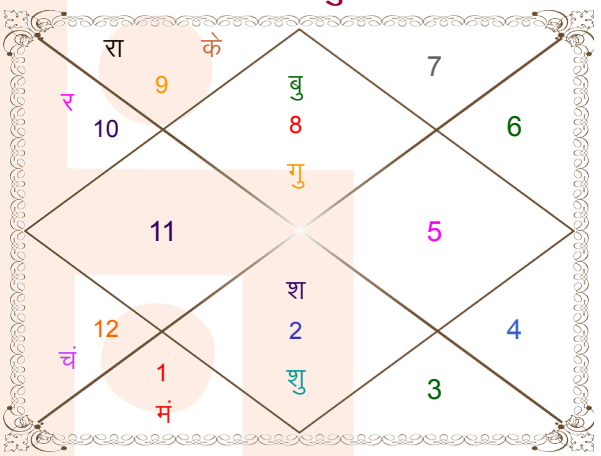

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

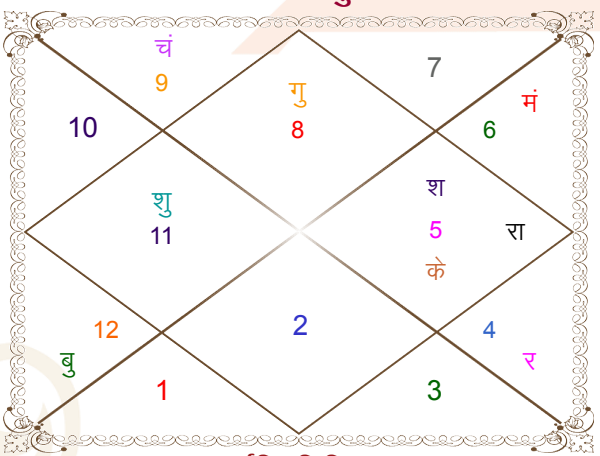

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

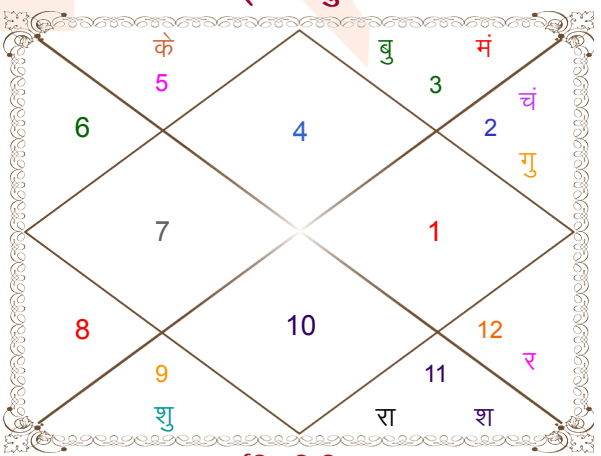

सर्वास्थितिविचारः

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	वृश्चि	सिंह	धनु	कन्या	सिंह	मिथु	कर्क	मीन	कुंभ	सिंह
होरा	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क	कर्क
द्रेष्काण	मीन	धनु	धनु	वृष	सिंह	कुंभ	वृश्चि	मीन	तुला	मेष
चतुर्थांश	कुंभ	कुंभ	मीन	मिथु	सिंह	मीन	तुला	मीन	वृश्चि	वृष
सप्तमांश	कर्क	वृश्चि	मक	सिंह	कन्या	वृश्चि	मेष	तुला	कर्क	मक
नवमांश	तुला	सिंह	मिथु	कर्क	वृष	वृष	वृश्चि	सिंह	वृष	वृश्चि
दशमांश	तुला	मक	कुंभ	धनु	कन्या	मक	कर्क	धनु	तुला	मेष
द्वादशांश	मीन	कुंभ	मीन	मिथु	तुला	मीन	धनु	वृष	वृश्चि	वृष
षोडशांश	मक	मेष	मेष	धनु	तुला	धनु	वृश्चि	मीन	सिंह	सिंह
विंशांश	मिथु	तुला	मक	वृश्चि	मीन	वृश्चि	मक	वृश्चि	मेष	मेष
चतुर्विंशांश	मीन	सिंह	कुंभ	मक	धनु	मीन	मिथु	वृश्चि	मीन	मीन
सप्तविंशांश	तुला	मिथु	वृश्चि	मीन	सिंह	कर्क	कुंभ	मिथु	कर्क	मक
त्रिंशांश	कन्या	धनु	कुंभ	मक	कुंभ	मिथु	मीन	कन्या	मिथु	मिथु
खवेदांश	वृश्चि	मक	मीन	मेष	वृश्चि	वृश्चि	वृष	वृष	धनु	धनु
अक्षवेदांश	वृश्चि	कर्क	धनु	कन्या	मीन	वृश्चि	कुंभ	सिंह	सिंह	सिंह
षष्ट्यंश	कर्क	मीन	वृष	मिथु	मिथु	वृष	धनु	कुंभ	कुंभ	सिंह

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
रवि	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	4 नागपुष्प
चन्द्र	0 ———	0 ———	1 ———	1 ———
मंगळ	1 ———	1 ———	1 ———	4 नागपुष्प
बुध	0 ———	1 ———	3 उत्तम	3 कुसुम
गुरु	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	6 केरल
शुक्र	1 ———	1 ———	1 ———	3 कुसुम
शनि	0 ———	1 ———	2 पारिजात	2 भेदक
राहु	1 ———	1 ———	1 ———	1 ———
केतु	0 ———	0 ———	0 ———	2 भेदक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	17.00	8.45	13.65	12.65	12.00	11.00	11.25	11.75	12.25
सप्तवर्ग	16.85	9.38	14.20	13.70	12.75	11.50	10.88	11.35	11.28
दशवर्ग	15.90	9.85	13.15	15.58	12.85	12.00	14.00	12.23	9.05
षोडशवर्ग	16.33	9.80	13.53	15.05	12.93	12.45	12.75	11.70	9.50

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	———	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगळ	मित्र	मित्र	———	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	———	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	———	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	———	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	———	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	———	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	———

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	शत्रु	———	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
मंगळ	मित्र	मित्र	———	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	———	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	———	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	———	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	———	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	———	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	———

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	सम	अधिमित्र	शत्रु	अधिमित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	सम	———	मित्र	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगळ	अधिमित्र	अधिमित्र	———	सम	अधिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	अधिमित्र
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	———	मित्र	अधिमित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
गुरु	अधिमित्र	सम	अधिमित्र	सम	———	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	अधिमित्र	मित्र	———	सम	सम	अधिमित्र
शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	———	अधिमित्र	अधिशत्रु
राहु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	अधिमित्र	———	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिमित्र	शत्रु	मित्र	अधिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	———

षट्बल आणि भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	18	12	18	47	56	24	15
सप्तवर्गज बल	152	56	101	101	98	79	62
ओजयुग्मक बल	30	0	0	15	15	30	15
केन्द्र बल	60	30	30	60	30	15	30
द्रेष्काण बल	0	0	0	0	0	0	0
एकुण स्थान बल	260	98	149	223	199	148	122
एकुण दिग्बल	60	38	47	28	14	10	38
नतोन्नत बल	60	0	0	60	60	60	0
पक्ष बल	22	75	22	22	38	38	22
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	15	0	0
महिना बल	0	30	0	0	0	0	0
वार बल	0	0	45	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	80	60	21	45	59	53	30
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
एकुण कालबल	222	166	89	128	291	150	53
एकुण चेष्टाबल	0	0	17	13	20	20	54
एकुण नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
एकुण दृग्बल	4	-29	3	9	1	4	2
एकुण षट्बल	606	324	322	427	559	375	278
रूप षट्बल	10.1	5.4	5.4	7.1	9.3	6.3	4.6
किमान आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
प्रमाण	2.0	0.9	1.1	1.0	1.4	1.1	0.9
तौलनिक स्थिति	1	7	4	5	2	3	6

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	25.71	21.08	17.39	25.10	33.60	21.90	28.17
कष्ट फल	31.31	32.88	42.58	24.82	12.16	37.95	16.80

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	322	559	278	278	559	322	375	427	324	606	427	375
भावदिग्बल	0	50	10	30	50	20	30	10	10	60	40	50
भावदृष्टि बल	75	29	68	90	88	22	-19	-2	4	13	31	54
एकुण भाव बल	397	638	355	398	697	365	386	436	338	679	498	479
रूप भाव बल	6.6	10.6	5.9	6.6	11.6	6.1	6.4	7.3	5.6	11.3	8.3	8.0
तौलनिक स्थिति	8	3	11	7	1	10	9	6	12	2	4	5

उपग्रह आणि आरूढ

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	वृशि	10:24:38	––	––	अनुराधा	3	17
गुलिक	गु	धनु	02:44:43	––	––	मूल	1	19
काल	का	धनु	24:37:55	––	––	पूर्वाषाढ़ा	4	20
मृत्यु	मृ	कन्या	07:10:29	––	––	उ.फाल्गुनी	4	12
यमघंटक	यम	तुला	20:49:11	––	––	विशाखा	1	16
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	कन्या	29:02:45	––	––	चित्रा	2	14
धूम	धू	धनु	29:11:55	––	––	उत्तराषाढ़ा	1	21
व्यतिपात	व्य	कर्क	00:48:05	––	––	पुनर्वसु	4	7
परिवेश	परि	मक	00:48:05	––	––	उत्तराषाढ़ा	2	21
इन्द्रचाप	इ	मिथु	29:11:55	नीच	––	पुनर्वसु	3	7
उपकेतु	उप	कर्क	15:51:55	––	मूल	पुष्य	4	8

प्राणपद	:	मिथु	00:44:12	कारकाँश लग्न	:	वृष	07:29:19
भाव लग्न	:	कुंभ	12:39:15	होरा लग्न	:	वृष	14:53:52
घटी लग्न	:	वृशि	27:04:59	वर्णद लग्न	:	धनु	25:18:29

उपग्रह कुंडली

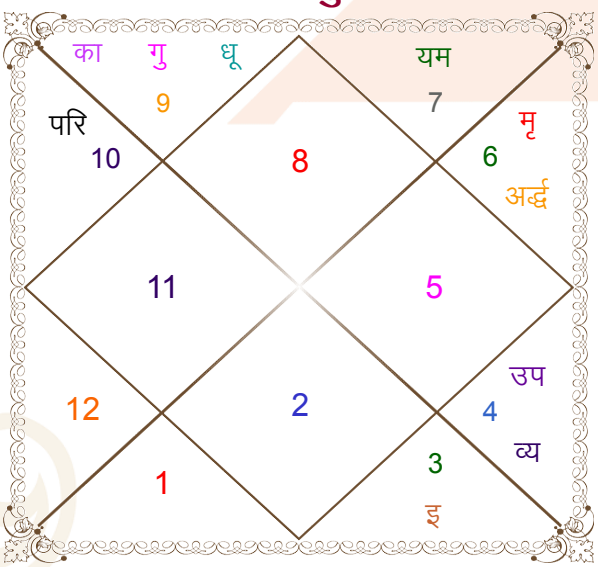

आरूढ़ कुंडली

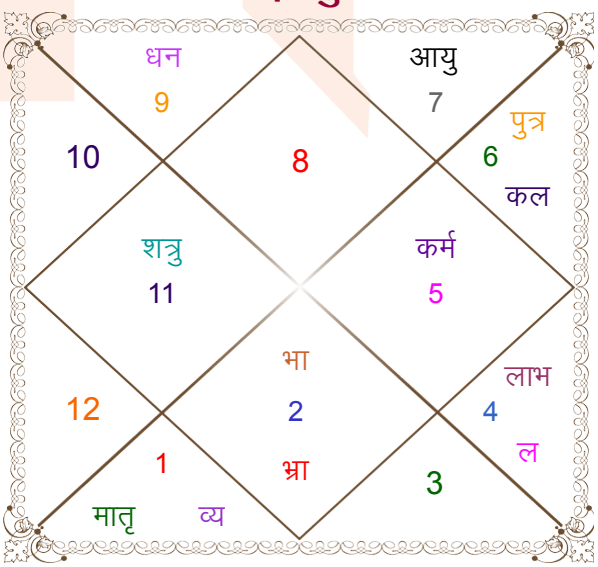

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्कुण
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0 8
गुरु	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0 4
मंगळ	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1 8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0 8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0 3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1 7
चंद्र	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0 4
लग्न	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0 6
एकुण	**2**	**5**	**6**	**3**	**4**	**4**	**4**	**3**	**6**	**4**	**5**	**2 48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चिकुण
शनि	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0 4
गुरु	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0 7
मंगळ	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1 6
सूर्य	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0 6
शुक्र	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1 7
बुध	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1 8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0 7
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0 4
एकुण	**3**	**6**	**4**	**4**	**3**	**5**	**5**	**3**	**4**	**4**	**5**	**3 49**

मंगळ का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सिंकुण
शनि	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0 7
गुरु	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0 4
मंगळ	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0 7
सूर्य	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0 5
शुक्र	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0 4
बुध	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0 4
चंद्र	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0 3
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1 5
एकुण	**3**	**5**	**3**	**5**	**4**	**2**	**3**	**3**	**4**	**5**	**1**	**1 39**

बुद्ध का अष्टकवर्ग

	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्कुण
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0 8
गुरु	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0 4
मंगळ	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1 8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1 5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1 8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1 8
चंद्र	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1 6
लग्न	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0 7
एकुण	**3**	**5**	**5**	**4**	**5**	**5**	**2**	**4**	**6**	**5**	**5**	**5 54**

गुरू का अष्टकवर्ग

	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृकुण
शनि	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1 4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0 8
मंगळ	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0 7
सूर्य	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1 9
शुक्र	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1 6
बुध	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1 8
चंद्र	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0 5
लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1 9
एकुण	**5**	**4**	**7**	**5**	**3**	**4**	**5**	**3**	**3**	**5**	**7**	**5 56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मिकुण
शनि	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1 7
गुरु	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0 5
मंगळ	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0 6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1 3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0 9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1 5
चंद्र	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0 9
लग्न	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1 8
एकुण	**6**	**3**	**2**	**5**	**5**	**5**	**5**	**5**	**5**	**4**	**3**	**4 52**

शनि का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुंकुण
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0 4
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0 4
मंगळ	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1 6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1 7
शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0 3
बुध	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0 6
चंद्र	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1 3
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1 6
एकुण	**2**	**3**	**6**	**4**	**3**	**4**	**2**	**2**	**4**	**1**	**4**	**4 39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कर्क	सि	कं	तुकुण
शनि	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0 6
गुरु	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1 9
मंगळ	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0 5
सूर्य	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1 6
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1 7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0 7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1 5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0 4
एकुण	**6**	**2**	**4**	**4**	**4**	**2**	**4**	**5**	**4**	**4**	**6**	**4 49**

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	एकुण
शनि	3	6	4	3	4	2	2	4	1	4	4	2	39
गुरु	7	5	5	4	7	5	3	4	5	3	3	5	56
मंगळ	3	4	5	1	1	3	5	3	5	4	2	3	39
सूर्य	6	4	5	2	2	5	6	3	4	4	4	3	48
शुक्र	4	3	4	6	3	2	5	5	5	5	5	5	52
बुध	6	5	5	5	3	5	5	4	5	5	2	4	54
चंद्र	3	5	5	3	4	4	5	3	3	6	4	4	49
बिन्दु	32	32	33	24	24	26	31	26	28	31	24	26	337
रेखा	24	24	23	32	32	30	25	30	28	25	32	30	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	एकुण
शनि	2	4	2	1	3	0	0	2	0	2	2	0	18
गुरु	2	2	2	0	2	2	0	0	0	0	0	1	11
मंगळ	2	1	3	0	0	0	3	2	4	1	0	2	18
सूर्य	4	0	1	0	0	1	2	1	2	0	0	1	12
शुक्र	1	1	0	1	0	0	1	0	2	3	1	0	10
बुध	3	0	3	1	0	0	3	0	2	0	0	0	12
चंद्र	0	1	1	0	1	0	1	0	0	2	0	1	7
रेखा	14	9	12	3	6	3	10	5	10	8	3	5	88

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	एकुण
शनि	0	4	2	1	3	0	0	0	0	0	0	0	10
गुरु	2	2	2	0	2	2	0	0	0	0	0	1	11
मंगळ	0	1	3	0	0	0	2	0	4	1	0	2	13
सूर्य	3	0	1	0	0	1	2	1	2	0	0	1	11
शुक्र	1	0	0	1	0	0	0	0	2	2	1	0	7
बुध	3	0	3	1	0	0	3	0	2	0	0	0	12
चंद्र	0	0	1	0	1	0	0	0	0	2	0	1	5
रेखा	9	7	12	3	6	3	7	1	10	5	1	5	69

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	86	40	113	88	92	50	90
ग्रह पिंड	33	25	60	47	61	17	57
शोध्य पिंड	119	65	173	135	153	67	147

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

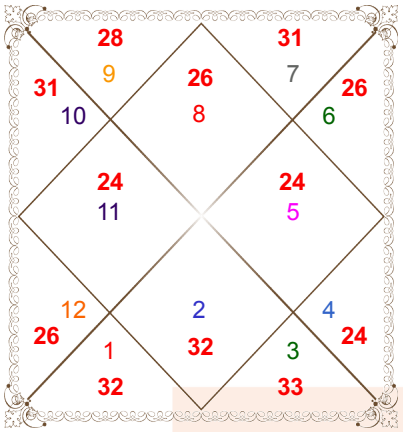

सूर्य का अष्टकवर्ग

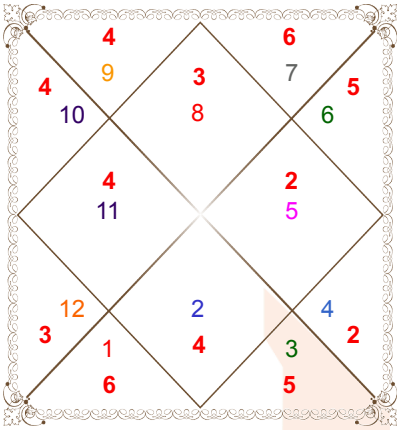

चंद्र का अष्टकवर्ग

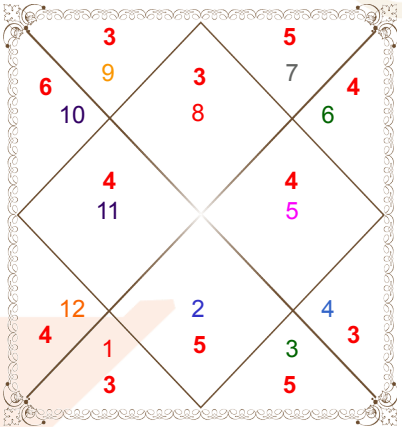

मंगळ का अष्टकवर्ग

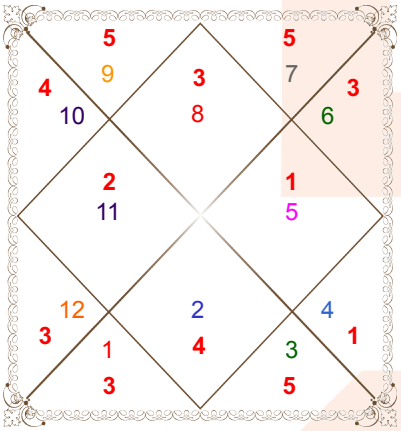

बुद्ध का अष्टकवर्ग

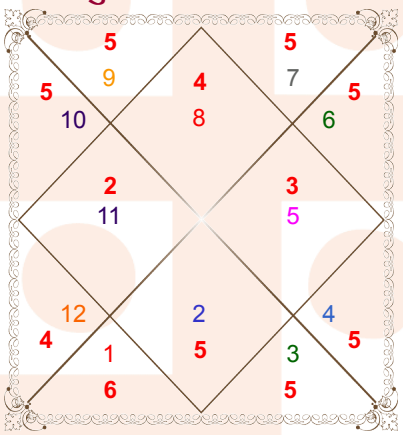

गुरू का अष्टकवर्ग

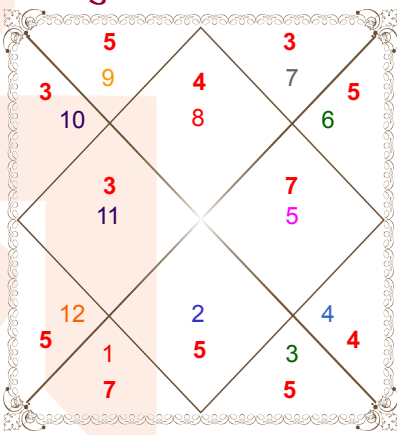

शुक्र का अष्टकवर्ग

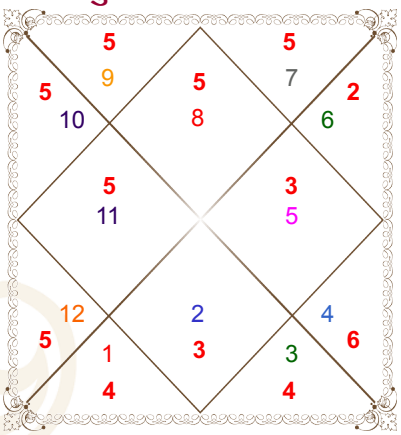

शनि का अष्टकवर्ग

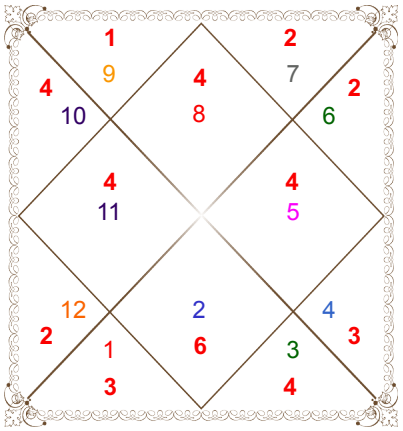

लग्न का अष्टकवर्ग

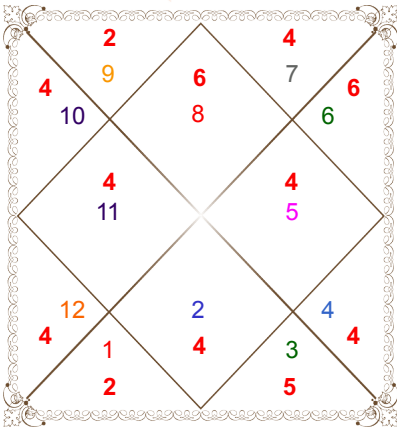

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : केतु 2 वर्ष 6 महिना 10 दिवस

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष	
02/09/2025		14/03/2028		14/03/2048		14/03/2054		14/03/2064	
14/03/2028		14/03/2048		14/03/2054		14/03/2064		15/03/2071	
	00/00/0000	शुक्र	14/07/2031	सूर्य	01/07/2048	चंद्र	13/01/2055	मंगळ	10/08/2064
	00/00/0000	सूर्य	14/07/2032	चंद्र	31/12/2048	मंगळ	14/08/2055	राहु	29/08/2065
	00/00/0000	चंद्र	14/03/2034	मंगळ	08/05/2049	राहु	12/02/2057	गुरु	04/08/2066
	00/00/0000	मंगळ	14/05/2035	राहु	02/04/2050	गुरु	14/06/2058	शनि	13/09/2067
	00/00/0000	राहु	14/05/2038	गुरु	19/01/2051	शनि	13/01/2060	बुध	09/09/2068
	02/09/2025	गुरु	12/01/2041	शनि	01/01/2052	बुध	13/06/2061	केतु	06/02/2069
गुरु	06/02/2026	शनि	14/03/2044	बुध	06/11/2052	केतु	12/01/2062	शुक्र	08/04/2070
शनि	18/03/2027	बुध	13/01/2047	केतु	14/03/2053	शुक्र	13/09/2063	सूर्य	14/08/2070
बुध	14/03/2028	केतु	14/03/2048	शुक्र	14/03/2054	सूर्य	14/03/2064	चंद्र	15/03/2071

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
15/03/2071		14/03/2089		15/03/2105		15/03/2124		15/03/2141	
14/03/2089		15/03/2105		15/03/2124		15/03/2141		00/00/0000	
राहु	25/11/2073	गुरु	02/05/2091	शनि	18/03/2108	बुध	12/08/2126	केतु	11/08/2141
गुरु	19/04/2076	शनि	13/11/2093	बुध	26/11/2110	केतु	09/08/2127	शुक्र	11/10/2142
शनि	24/02/2079	बुध	19/02/2096	केतु	05/01/2112	शुक्र	09/06/2130	सूर्य	16/02/2143
बुध	13/09/2081	केतु	24/01/2097	शुक्र	06/03/2115	सूर्य	15/04/2131	चंद्र	17/09/2143
केतु	01/10/2082	शुक्र	25/09/2099	सूर्य	16/02/2116	चंद्र	13/09/2132	मंगळ	13/02/2144
शुक्र	01/10/2085	सूर्य	15/07/2100	चंद्र	17/09/2117	मंगळ	11/09/2133	राहु	03/03/2145
सूर्य	26/08/2086	चंद्र	14/11/2101	मंगळ	27/10/2118	राहु	30/03/2136	गुरु	03/09/2145
चंद्र	25/02/2088	मंगळ	21/10/2102	राहु	02/09/2121	गुरु	06/07/2138		00/00/0000
मंगळ	14/03/2089	राहु	15/03/2105	गुरु	15/03/2124	शनि	15/03/2141		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल केतु 2 वर्ष 6 मा 4 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
02/09/2025		06/02/2026		18/03/2027		14/03/2028		14/07/2031	
06/02/2026		18/03/2027		14/03/2028		14/07/2031		14/07/2032	
	00/00/0000	शनि	11/04/2026	बुध	08/05/2027	शुक्र	03/10/2028	सूर्य	02/08/2031
	00/00/0000	बुध	07/06/2026	केतु	29/05/2027	सूर्य	03/12/2028	चंद्र	01/09/2031
	00/00/0000	केतु	01/07/2026	शुक्र	28/07/2027	चंद्र	14/03/2029	मंगळ	22/09/2031
	02/09/2025	शुक्र	06/09/2026	सूर्य	16/08/2027	मंगळ	24/05/2029	राहु	16/11/2031
शुक्र	12/10/2025	सूर्य	27/09/2026	चंद्र	15/09/2027	राहु	23/11/2029	गुरु	04/01/2032
सूर्य	29/10/2025	चंद्र	30/10/2026	मंगळ	06/10/2027	गुरु	04/05/2030	शनि	02/03/2032
चंद्र	27/11/2025	मंगळ	23/11/2026	राहु	29/11/2027	शनि	13/11/2030	बुध	22/04/2032
मंगळ	17/12/2025	राहु	23/01/2027	गुरु	17/01/2028	बुध	04/05/2031	केतु	14/05/2032
राहु	06/02/2026	गुरु	18/03/2027	शनि	14/03/2028	केतु	14/07/2031	शुक्र	14/07/2032

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगळ		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
14/07/2032		14/03/2034		14/05/2035		14/05/2038		12/01/2041	
14/03/2034		14/05/2035		14/05/2038		12/01/2041		14/03/2044	
चंद्र	02/09/2032	मंगळ	08/04/2034	राहु	26/10/2035	गुरु	21/09/2038	शनि	14/07/2041
मंगळ	08/10/2032	राहु	11/06/2034	गुरु	20/03/2036	शनि	22/02/2039	बुध	25/12/2041
राहु	07/01/2033	गुरु	07/08/2034	शनि	09/09/2036	बुध	10/07/2039	केतु	03/03/2042
गुरु	29/03/2033	शनि	13/10/2034	बुध	12/02/2037	केतु	05/09/2039	शुक्र	11/09/2042
शनि	04/07/2033	बुध	13/12/2034	केतु	17/04/2037	शुक्र	14/02/2040	सूर्य	08/11/2042
बुध	28/09/2033	केतु	07/01/2035	शुक्र	16/10/2037	सूर्य	03/04/2040	चंद्र	13/02/2043
केतु	02/11/2033	शुक्र	19/03/2035	सूर्य	10/12/2037	चंद्र	23/06/2040	मंगळ	21/04/2043
शुक्र	12/02/2034	सूर्य	09/04/2035	चंद्र	11/03/2038	मंगळ	19/08/2040	राहु	12/10/2043
सूर्य	14/03/2034	चंद्र	14/05/2035	मंगळ	14/05/2038	राहु	12/01/2041	गुरु	14/03/2044

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगळ	
14/03/2044		13/01/2047		14/03/2048		01/07/2048		31/12/2048	
13/01/2047		14/03/2048		01/07/2048		31/12/2048		08/05/2049	
बुध	07/08/2044	केतु	07/02/2047	सूर्य	19/03/2048	चंद्र	17/07/2048	मंगळ	08/01/2049
केतु	07/10/2044	शुक्र	19/04/2047	चंद्र	28/03/2048	मंगळ	27/07/2048	राहु	27/01/2049
शुक्र	28/03/2045	सूर्य	10/05/2047	मंगळ	04/04/2048	राहु	24/08/2048	गुरु	13/02/2049
सूर्य	19/05/2045	चंद्र	14/06/2047	राहु	20/04/2048	गुरु	17/09/2048	शनि	05/03/2049
चंद्र	13/08/2045	मंगळ	09/07/2047	गुरु	05/05/2048	शनि	16/10/2048	बुध	23/03/2049
मंगळ	13/10/2045	राहु	11/09/2047	शनि	22/05/2048	बुध	11/11/2048	केतु	31/03/2049
राहु	17/03/2046	गुरु	07/11/2047	बुध	07/06/2048	केतु	22/11/2048	शुक्र	21/04/2049
गुरु	02/08/2046	शनि	14/01/2048	केतु	13/06/2048	शुक्र	22/12/2048	सूर्य	27/04/2049
शनि	13/01/2047	बुध	14/03/2048	शुक्र	01/07/2048	सूर्य	31/12/2048	चंद्र	08/05/2049

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
08/05/2049		02/04/2050		19/01/2051		01/01/2052		06/11/2052	
02/04/2050		19/01/2051		01/01/2052		06/11/2052		14/03/2053	
राहु	26/06/2049	गुरु	11/05/2050	शनि	15/03/2051	बुध	14/02/2052	केतु	14/11/2052
गुरु	09/08/2049	शनि	26/06/2050	बुध	03/05/2051	केतु	03/03/2052	शुक्र	05/12/2052
शनि	30/09/2049	बुध	06/08/2050	केतु	23/05/2051	शुक्र	24/04/2052	सूर्य	11/12/2052
बुध	16/11/2049	केतु	23/08/2050	शुक्र	20/07/2051	सूर्य	09/05/2052	चंद्र	22/12/2052
केतु	05/12/2049	शुक्र	11/10/2050	सूर्य	06/08/2051	चंद्र	04/06/2052	मंगळ	30/12/2052
शुक्र	29/01/2050	सूर्य	26/10/2050	चंद्र	04/09/2051	मंगळ	22/06/2052	राहु	18/01/2053
सूर्य	14/02/2050	चंद्र	19/11/2050	मंगळ	25/09/2051	राहु	08/08/2052	गुरु	04/02/2053
चंद्र	13/03/2050	मंगळ	06/12/2050	राहु	16/11/2051	गुरु	18/09/2052	शनि	24/02/2053
मंगळ	02/04/2050	राहु	19/01/2051	गुरु	01/01/2052	शनि	06/11/2052	बुध	14/03/2053

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगळ		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
14/03/2053		14/03/2054		13/01/2055		14/08/2055		12/02/2057	
14/03/2054		13/01/2055		14/08/2055		12/02/2057		14/06/2058	
शुक्र	14/05/2053	चंद्र	09/04/2054	मंगळ	25/01/2055	राहु	04/11/2055	गुरु	18/04/2057
सूर्य	01/06/2053	मंगळ	26/04/2054	राहु	26/02/2055	गुरु	16/01/2056	शनि	04/07/2057
चंद्र	02/07/2053	राहु	11/06/2054	गुरु	27/03/2055	शनि	12/04/2056	बुध	11/09/2057
मंगळ	23/07/2053	गुरु	22/07/2054	शनि	29/04/2055	बुध	28/06/2056	केतु	09/10/2057
राहु	16/09/2053	शनि	08/09/2054	बुध	29/05/2055	केतु	30/07/2056	शुक्र	29/12/2057
गुरु	03/11/2053	बुध	21/10/2054	केतु	11/06/2055	शुक्र	30/10/2056	सूर्य	23/01/2058
शनि	31/12/2053	केतु	08/11/2054	शुक्र	16/07/2055	सूर्य	26/11/2056	चंद्र	04/03/2058
बुध	21/02/2054	शुक्र	29/12/2054	सूर्य	27/07/2055	चंद्र	11/01/2057	मंगळ	02/04/2058
केतु	14/03/2054	सूर्य	13/01/2055	चंद्र	14/08/2055	मंगळ	12/02/2057	राहु	14/06/2058

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
14/06/2058		13/01/2060		13/06/2061		12/01/2062		13/09/2063	
13/01/2060		13/06/2061		12/01/2062		13/09/2063		14/03/2064	
शनि	13/09/2058	बुध	26/03/2060	केतु	26/06/2061	शुक्र	24/04/2062	सूर्य	22/09/2063
बुध	04/12/2058	केतु	25/04/2060	शुक्र	31/07/2061	सूर्य	24/05/2062	चंद्र	08/10/2063
केतु	07/01/2059	शुक्र	21/07/2060	सूर्य	11/08/2061	चंद्र	14/07/2062	मंगळ	18/10/2063
शुक्र	13/04/2059	सूर्य	16/08/2060	चंद्र	29/08/2061	मंगळ	19/08/2062	राहु	15/11/2063
सूर्य	12/05/2059	चंद्र	28/09/2060	मंगळ	10/09/2061	राहु	18/11/2062	गुरु	09/12/2063
चंद्र	29/06/2059	मंगळ	28/10/2060	राहु	12/10/2061	गुरु	07/02/2063	शनि	07/01/2064
मंगळ	02/08/2059	राहु	14/01/2061	गुरु	10/11/2061	शनि	14/05/2063	बुध	02/02/2064
राहु	28/10/2059	गुरु	24/03/2061	शनि	13/12/2061	बुध	09/08/2063	केतु	12/02/2064
गुरु	13/01/2060	शनि	13/06/2061	बुध	12/01/2062	केतु	13/09/2063	शुक्र	14/03/2064

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगळ - मंगळ		मंगळ - राहु		मंगळ - गुरु		मंगळ - शनि		मंगळ - बुध	
14/03/2064		10/08/2064		29/08/2065		04/08/2066		13/09/2067	
10/08/2064		29/08/2065		04/08/2066		13/09/2067		09/09/2068	
मंगळ	23/03/2064	राहु	07/10/2064	गुरु	13/10/2065	शनि	08/10/2066	बुध	04/11/2067
राहु	14/04/2064	गुरु	27/11/2064	शनि	06/12/2065	बुध	04/12/2066	केतु	25/11/2067
गुरु	04/05/2064	शनि	26/01/2065	बुध	23/01/2066	केतु	27/12/2066	शुक्र	24/01/2068
शनि	27/05/2064	बुध	22/03/2065	केतु	12/02/2066	शुक्र	05/03/2067	सूर्य	11/02/2068
बुध	18/06/2064	केतु	13/04/2065	शुक्र	10/04/2066	सूर्य	25/03/2067	चंद्र	12/03/2068
केतु	26/06/2064	शुक्र	16/06/2065	सूर्य	27/04/2066	चंद्र	28/04/2067	मंगळ	02/04/2068
शुक्र	21/07/2064	सूर्य	05/07/2065	चंद्र	25/05/2066	मंगळ	22/05/2067	राहु	27/05/2068
सूर्य	29/07/2064	चंद्र	06/08/2065	मंगळ	14/06/2066	राहु	21/07/2067	गुरु	14/07/2068
चंद्र	10/08/2064	मंगळ	29/08/2065	राहु	04/08/2066	गुरु	13/09/2067	शनि	09/09/2068

मंगळ - केतु		मंगळ - शुक्र		मंगळ - सूर्य		मंगळ - चंद्र		राहु - राहु	
09/09/2068		06/02/2069		08/04/2070		14/08/2070		15/03/2071	
06/02/2069		08/04/2070		14/08/2070		15/03/2071		25/11/2073	
केतु	18/09/2068	शुक्र	18/04/2069	सूर्य	14/04/2070	चंद्र	31/08/2070	राहु	10/08/2071
शुक्र	13/10/2068	सूर्य	09/05/2069	चंद्र	25/04/2070	मंगळ	13/09/2070	गुरु	19/12/2071
सूर्य	20/10/2068	चंद्र	13/06/2069	मंगळ	02/05/2070	राहु	15/10/2070	शनि	23/05/2072
चंद्र	02/11/2068	मंगळ	08/07/2069	राहु	21/05/2070	गुरु	12/11/2070	बुध	10/10/2072
मंगळ	11/11/2068	राहु	10/09/2069	गुरु	07/06/2070	शनि	16/12/2070	केतु	06/12/2072
राहु	03/12/2068	गुरु	06/11/2069	शनि	28/06/2070	बुध	15/01/2071	शुक्र	20/05/2073
गुरु	23/12/2068	शनि	12/01/2070	बुध	16/07/2070	केतु	27/01/2071	सूर्य	08/07/2073
शनि	15/01/2069	बुध	14/03/2070	केतु	23/07/2070	शुक्र	04/03/2071	चंद्र	28/09/2073
बुध	06/02/2069	केतु	08/04/2070	शुक्र	14/08/2070	सूर्य	15/03/2071	मंगळ	25/11/2073

राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र	
25/11/2073		19/04/2076		24/02/2079		13/09/2081		01/10/2082	
19/04/2076		24/02/2079		13/09/2081		01/10/2082		01/10/2085	
गुरु	22/03/2074	शनि	01/10/2076	बुध	06/07/2079	केतु	05/10/2081	शुक्र	02/04/2083
शनि	07/08/2074	बुध	26/02/2077	केतु	30/08/2079	शुक्र	08/12/2081	सूर्य	27/05/2083
बुध	10/12/2074	केतु	27/04/2077	शुक्र	01/02/2080	सूर्य	27/12/2081	चंद्र	26/08/2083
केतु	30/01/2075	शुक्र	18/10/2077	सूर्य	18/03/2080	चंद्र	28/01/2082	मंगळ	29/10/2083
शुक्र	25/06/2075	सूर्य	09/12/2077	चंद्र	04/06/2080	मंगळ	20/02/2082	राहु	10/04/2084
सूर्य	08/08/2075	चंद्र	06/03/2078	मंगळ	28/07/2080	राहु	18/04/2082	गुरु	03/09/2084
चंद्र	20/10/2075	मंगळ	05/05/2078	राहु	15/12/2080	गुरु	08/06/2082	शनि	24/02/2085
मंगळ	10/12/2075	राहु	09/10/2078	गुरु	18/04/2081	शनि	08/08/2082	बुध	29/07/2085
राहु	19/04/2076	गुरु	24/02/2079	शनि	13/09/2081	बुध	01/10/2082	केतु	01/10/2085

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगळ		गुरु - गुरु		गुरु - शनि	
01/10/2085		26/08/2086		25/02/2088		14/03/2089		02/05/2091	
26/08/2086		25/02/2088		14/03/2089		02/05/2091		13/11/2093	
सूर्य	17/10/2085	चंद्र	10/10/2086	मंगळ	18/03/2088	गुरु	26/06/2089	शनि	26/09/2091
चंद्र	14/11/2085	मंगळ	11/11/2086	राहु	15/05/2088	शनि	27/10/2089	बुध	04/02/2092
मंगळ	03/12/2085	राहु	02/02/2087	गुरु	05/07/2088	बुध	15/02/2090	केतु	29/03/2092
राहु	21/01/2086	गुरु	16/04/2087	शनि	03/09/2088	केतु	01/04/2090	शुक्र	30/08/2092
गुरु	06/03/2086	शनि	11/07/2087	बुध	28/10/2088	शुक्र	09/08/2090	सूर्य	15/10/2092
शनि	27/04/2086	बुध	27/09/2087	केतु	19/11/2088	सूर्य	17/09/2090	चंद्र	31/12/2092
बुध	13/06/2086	केतु	29/10/2087	शुक्र	22/01/2089	चंद्र	21/11/2090	मंगळ	23/02/2093
केतु	02/07/2086	शुक्र	28/01/2088	सूर्य	10/02/2089	मंगळ	05/01/2091	राहु	12/07/2093
शुक्र	26/08/2086	सूर्य	25/02/2088	चंद्र	14/03/2089	राहु	02/05/2091	गुरु	13/11/2093

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
13/11/2093		19/02/2096		24/01/2097		25/09/2099		15/07/2100	
19/02/2096		24/01/2097		25/09/2099		15/07/2100		14/11/2101	
बुध	10/03/2094	केतु	09/03/2096	शुक्र	06/07/2097	सूर्य	10/10/2099	चंद्र	24/08/2100
केतु	27/04/2094	शुक्र	05/05/2096	सूर्य	23/08/2097	चंद्र	03/11/2099	मंगळ	22/09/2100
शुक्र	12/09/2094	सूर्य	22/05/2096	चंद्र	13/11/2097	मंगळ	20/11/2099	राहु	04/12/2100
सूर्य	24/10/2094	चंद्र	20/06/2096	मंगळ	08/01/2098	राहु	03/01/2100	गुरु	07/02/2101
चंद्र	01/01/2095	मंगळ	10/07/2096	राहु	04/06/2098	गुरु	11/02/2100	शनि	25/04/2101
मंगळ	18/02/2095	राहु	30/08/2096	गुरु	11/10/2098	शनि	29/03/2100	बुध	03/07/2101
राहु	22/06/2095	गुरु	14/10/2096	शनि	15/03/2099	बुध	10/05/2100	केतु	31/07/2101
गुरु	10/10/2095	शनि	07/12/2096	बुध	31/07/2099	केतु	27/05/2100	शुक्र	20/10/2101
शनि	19/02/2096	बुध	24/01/2097	केतु	25/09/2099	शुक्र	15/07/2100	सूर्य	14/11/2101

गुरु - मंगळ		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
14/11/2101		21/10/2102		15/03/2105		18/03/2108		26/11/2110	
21/10/2102		15/03/2105		18/03/2108		26/11/2110		05/01/2112	
मंगळ	04/12/2101	राहु	01/03/2103	शनि	05/09/2105	बुध	04/08/2108	केतु	20/12/2110
राहु	24/01/2102	गुरु	26/06/2103	बुध	08/02/2106	केतु	01/10/2108	शुक्र	25/02/2111
गुरु	10/03/2102	शनि	12/11/2103	केतु	13/04/2106	शुक्र	13/03/2109	सूर्य	17/03/2111
शनि	03/05/2102	बुध	15/03/2104	शुक्र	13/10/2106	सूर्य	02/05/2109	चंद्र	20/04/2111
बुध	20/06/2102	केतु	05/05/2104	सूर्य	07/12/2106	चंद्र	22/07/2109	मंगळ	14/05/2111
केतु	10/07/2102	शुक्र	28/09/2104	चंद्र	08/03/2107	मंगळ	18/09/2109	राहु	13/07/2111
शुक्र	05/09/2102	सूर्य	11/11/2104	मंगळ	12/05/2107	राहु	12/02/2110	गुरु	05/09/2111
सूर्य	22/09/2102	चंद्र	23/01/2105	राहु	23/10/2107	गुरु	23/06/2110	शनि	09/11/2111
चंद्र	21/10/2102	मंगळ	15/03/2105	गुरु	18/03/2108	शनि	26/11/2110	बुध	05/01/2112

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगळ		शनि - राहु	
05/01/2112		06/03/2115		16/02/2116		17/09/2117		27/10/2118	
06/03/2115		16/02/2116		17/09/2117		27/10/2118		02/09/2121	
शुक्र	16/07/2112	सूर्य	24/03/2115	चंद्र	05/04/2116	मंगळ	10/10/2117	राहु	01/04/2119
सूर्य	11/09/2112	चंद्र	22/04/2115	मंगळ	08/05/2116	राहु	10/12/2117	गुरु	18/08/2119
चंद्र	17/12/2112	मंगळ	12/05/2115	राहु	03/08/2116	गुरु	02/02/2118	शनि	29/01/2120
मंगळ	22/02/2113	राहु	03/07/2115	गुरु	19/10/2116	शनि	07/04/2118	बुध	25/06/2120
राहु	15/08/2113	गुरु	18/08/2115	शनि	19/01/2117	बुध	04/06/2118	केतु	25/08/2120
गुरु	16/01/2114	शनि	12/10/2115	बुध	11/04/2117	केतु	27/06/2118	शुक्र	14/02/2121
शनि	18/07/2114	बुध	30/11/2115	केतु	14/05/2117	शुक्र	03/09/2118	सूर्य	07/04/2121
बुध	29/12/2114	केतु	21/12/2115	शुक्र	19/08/2117	सूर्य	23/09/2118	चंद्र	03/07/2121
केतु	06/03/2115	शुक्र	16/02/2116	सूर्य	17/09/2117	चंद्र	27/10/2118	मंगळ	02/09/2121

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
02/09/2121		15/03/2124		12/08/2126		09/08/2127		09/06/2130	
15/03/2124		12/08/2126		09/08/2127		09/06/2130		15/04/2131	
गुरु	03/01/2122	बुध	17/07/2124	केतु	02/09/2126	शुक्र	28/01/2128	सूर्य	24/06/2130
शनि	29/05/2122	केतु	07/09/2124	शुक्र	01/11/2126	सूर्य	20/03/2128	चंद्र	20/07/2130
बुध	08/10/2122	शुक्र	31/01/2125	सूर्य	19/11/2126	चंद्र	14/06/2128	मंगळ	07/08/2130
केतु	01/12/2122	सूर्य	16/03/2125	चंद्र	19/12/2126	मंगळ	14/08/2128	राहु	23/09/2130
शुक्र	04/05/2123	चंद्र	29/05/2125	मंगळ	09/01/2127	राहु	16/01/2129	गुरु	03/11/2130
सूर्य	19/06/2123	मंगळ	19/07/2125	राहु	05/03/2127	गुरु	03/06/2129	शनि	22/12/2130
चंद्र	04/09/2123	राहु	28/11/2125	गुरु	22/04/2127	शनि	14/11/2129	बुध	04/02/2131
मंगळ	28/10/2123	गुरु	25/03/2126	शनि	18/06/2127	बुध	09/04/2130	केतु	22/02/2131
राहु	15/03/2124	शनि	12/08/2126	बुध	09/08/2127	केतु	09/06/2130	शुक्र	15/04/2131

बुध - चंद्र		बुध - मंगळ		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
15/04/2131		13/09/2132		11/09/2133		30/03/2136		06/07/2138	
13/09/2132		11/09/2133		30/03/2136		06/07/2138		15/03/2141	
चंद्र	28/05/2131	मंगळ	05/10/2132	राहु	28/01/2134	गुरु	18/07/2136	शनि	09/12/2138
मंगळ	27/06/2131	राहु	28/11/2132	गुरु	02/06/2134	शनि	27/11/2136	बुध	27/04/2139
राहु	13/09/2131	गुरु	15/01/2133	शनि	27/10/2134	बुध	24/03/2137	केतु	23/06/2139
गुरु	21/11/2131	शनि	14/03/2133	बुध	08/03/2135	केतु	11/05/2137	शुक्र	04/12/2139
शनि	11/02/2132	बुध	04/05/2133	केतु	01/05/2135	शुक्र	26/09/2137	सूर्य	22/01/2140
बुध	24/04/2132	केतु	25/05/2133	शुक्र	04/10/2135	सूर्य	07/11/2137	चंद्र	13/04/2140
केतु	24/05/2132	शुक्र	24/07/2133	सूर्य	19/11/2135	चंद्र	15/01/2138	मंगळ	10/06/2140
शुक्र	19/08/2132	सूर्य	12/08/2133	चंद्र	05/02/2136	मंगळ	04/03/2138	राहु	04/11/2140
सूर्य	13/09/2132	चंद्र	11/09/2133	मंगळ	30/03/2136	राहु	06/07/2138	गुरु	15/03/2141

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

केतु - गुरु - शुक्र	
02/09/2025 12:33	
12/10/2025 20:59	
	00/00/0000 00:00
	02/09/2025 12:33
चंद्र	03/09/2025 02:28
मंगळ	06/09/2025 10:00
राहु	14/09/2025 22:33
गुरु	22/09/2025 12:21
शनि	01/10/2025 12:16
बुध	09/10/2025 13:26
केतु	12/10/2025 20:59

केतु - गुरु - सूर्य	
12/10/2025 20:59	
29/10/2025 22:04	
सूर्य	13/10/2025 17:26
चंद्र	15/10/2025 03:32
मंगळ	16/10/2025 03:23
राहु	18/10/2025 16:45
गुरु	20/10/2025 23:18
शनि	23/10/2025 16:04
बुध	26/10/2025 02:01
केतु	27/10/2025 01:53
शुक्र	29/10/2025 22:04

केतु - गुरु - चंद्र	
29/10/2025 22:04	
27/11/2025 07:52	
चंद्र	01/11/2025 06:53
मंगळ	02/11/2025 22:39
राहु	07/11/2025 04:55
गुरु	10/11/2025 23:50
शनि	15/11/2025 11:47
बुध	19/11/2025 12:22
केतु	21/11/2025 04:08
शुक्र	25/11/2025 21:46
सूर्य	27/11/2025 07:52

केतु - गुरु - मंगळ	
27/11/2025 07:52	
17/12/2025 05:07	
मंगळ	28/11/2025 11:42
राहु	01/12/2025 11:17
गुरु	04/12/2025 02:56
शनि	07/12/2025 06:29
बुध	10/12/2025 02:06
केतु	11/12/2025 05:57
शुक्र	14/12/2025 13:29
सूर्य	15/12/2025 13:21
चंद्र	17/12/2025 05:07

केतु - गुरु - राहु	
17/12/2025 05:07	
06/02/2026 08:22	
राहु	24/12/2025 21:12
गुरु	31/12/2025 16:50
शनि	08/01/2026 19:09
बुध	16/01/2026 01:01
केतु	19/01/2026 00:36
शुक्र	27/01/2026 13:08
सूर्य	30/01/2026 02:30
चंद्र	03/02/2026 08:46
मंगळ	06/02/2026 08:22

केतु - शनि - शनि	
06/02/2026 08:22	
11/04/2026 10:40	
शनि	16/02/2026 11:56
बुध	25/02/2026 13:51
केतु	01/03/2026 07:35
शुक्र	11/03/2026 23:58
सूर्य	15/03/2026 04:53
चंद्र	20/03/2026 13:05
मंगळ	24/03/2026 06:49
राहु	02/04/2026 21:34
गुरु	11/04/2026 10:40

केतु - शनि - बुध	
11/04/2026 10:40	
07/06/2026 19:03	
बुध	19/04/2026 13:40
केतु	22/04/2026 21:57
शुक्र	02/05/2026 11:21
सूर्य	05/05/2026 08:10
चंद्र	10/05/2026 02:52
मंगळ	13/05/2026 11:09
राहु	22/05/2026 01:37
गुरु	29/05/2026 17:08
शनि	07/06/2026 19:03

केतु - शनि - केतु	
07/06/2026 19:03	
01/07/2026 09:48	
केतु	09/06/2026 04:07
शुक्र	13/06/2026 02:34
सूर्य	14/06/2026 06:55
चंद्र	16/06/2026 06:08
मंगळ	17/06/2026 15:12
राहु	21/06/2026 04:13
गुरु	24/06/2026 07:47
शनि	28/06/2026 01:31
बुध	01/07/2026 09:48

केतु - शनि - शुक्र	
01/07/2026 09:48	
06/09/2026 21:05	
शुक्र	12/07/2026 15:41
सूर्य	16/07/2026 00:39
चंद्र	21/07/2026 15:35
मंगळ	25/07/2026 14:03
राहु	04/08/2026 16:56
गुरु	13/08/2026 16:50
शनि	24/08/2026 09:13
बुध	02/09/2026 22:37
केतु	06/09/2026 21:05

केतु - शनि - सूर्य	
06/09/2026 21:05	
27/09/2026 02:52	
सूर्य	07/09/2026 21:22
चंद्र	09/09/2026 13:51
मंगळ	10/09/2026 18:11
राहु	13/09/2026 19:03
गुरु	16/09/2026 11:49
शनि	19/09/2026 16:44
बुध	22/09/2026 13:34
केतु	23/09/2026 17:54
शुक्र	27/09/2026 02:52

केतु - शनि - चंद्र	
27/09/2026 02:52	
30/10/2026 20:30	
चंद्र	29/09/2026 22:20
मंगळ	01/10/2026 21:34
राहु	06/10/2026 23:00
गुरु	11/10/2026 10:57
शनि	16/10/2026 19:09
बुध	21/10/2026 13:51
केतु	23/10/2026 13:05
शुक्र	29/10/2026 04:01
सूर्य	30/10/2026 20:30

केतु - शनि - मंगळ	
30/10/2026 20:30	
23/11/2026 11:15	
मंगळ	01/11/2026 05:33
राहु	04/11/2026 18:34
गुरु	07/11/2026 22:08
शनि	11/11/2026 15:52
बुध	15/11/2026 00:10
केतु	16/11/2026 09:13
शुक्र	20/11/2026 07:41
सूर्य	21/11/2026 12:01
चंद्र	23/11/2026 11:15

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

केतु - शनि - राहु		केतु - शनि - गुरु		केतु - बुध - बुध		केतु - बुध - केतु	
23/11/2026 11:15		**23/01/2027 04:35**		**18/03/2027 04:01**		**08/05/2027 11:31**	
23/01/2027 04:35		**18/03/2027 04:01**		**08/05/2027 11:31**		**29/05/2027 14:36**	
राहु	02/12/2026 13:51	गुरु	30/01/2027 09:19	बुध	25/03/2027 10:28	केतु	09/05/2027 17:06
गुरु	10/12/2026 16:10	शनि	07/02/2027 22:25	केतु	28/03/2027 10:19	शुक्र	13/05/2027 05:36
शनि	20/12/2026 06:54	बुध	15/02/2027 13:56	शुक्र	05/04/2027 23:34	सूर्य	14/05/2027 06:58
बुध	28/12/2026 21:22	केतु	18/02/2027 17:30	सूर्य	08/04/2027 13:08	चंद्र	16/05/2027 01:13
केतु	01/01/2027 10:23	शुक्र	27/02/2027 17:25	चंद्र	12/04/2027 19:46	मंगळ	17/05/2027 06:48
शुक्र	11/01/2027 13:16	सूर्य	02/03/2027 10:11	मंगळ	15/04/2027 19:36	राहु	20/05/2027 10:52
सूर्य	14/01/2027 14:08	चंद्र	06/03/2027 22:08	राहु	23/04/2027 12:19	गुरु	23/05/2027 06:28
चंद्र	19/01/2027 15:35	मंगळ	10/03/2027 01:42	गुरु	30/04/2027 08:31	शनि	26/05/2027 14:46
मंगळ	23/01/2027 04:35	राहु	18/03/2027 04:01	शनि	08/05/2027 11:31	बुध	29/05/2027 14:36

केतु - बुध - शुक्र		केतु - बुध - सूर्य		केतु - बुध - चंद्र		केतु - बुध - मंगळ	
29/05/2027 14:36		**28/07/2027 23:26**		**16/08/2027 02:04**		**15/09/2027 06:29**	
28/07/2027 23:26		**16/08/2027 02:04**		**15/09/2027 06:29**		**06/10/2027 09:35**	
शुक्र	08/06/2027 16:04	सूर्य	29/07/2027 21:10	चंद्र	18/08/2027 14:26	मंगळ	16/09/2027 12:04
सूर्य	11/06/2027 16:31	चंद्र	31/07/2027 09:23	मंगळ	20/08/2027 08:42	राहु	19/09/2027 16:08
चंद्र	16/06/2027 17:15	मंगळ	01/08/2027 10:44	राहु	24/08/2027 21:22	गुरु	22/09/2027 11:44
मंगळ	20/06/2027 05:46	राहु	04/08/2027 03:56	गुरु	28/08/2027 21:57	शनि	25/09/2027 20:02
राहु	29/06/2027 07:05	गुरु	06/08/2027 13:53	शनि	02/09/2027 16:39	बुध	28/09/2027 19:52
गुरु	07/07/2027 08:16	शनि	09/08/2027 10:42	बुध	06/09/2027 23:16	केतु	30/09/2027 01:27
शनि	16/07/2027 21:40	बुध	12/08/2027 00:17	केतु	08/09/2027 17:32	शुक्र	03/10/2027 13:58
बुध	25/07/2027 10:55	केतु	13/08/2027 01:38	शुक्र	13/09/2027 18:16	सूर्य	04/10/2027 15:19
केतु	28/07/2027 23:26	शुक्र	16/08/2027 02:04	सूर्य	15/09/2027 06:29	चंद्र	06/10/2027 09:35

केतु - बुध - राहु		केतु - बुध - गुरु		केतु - बुध - शनि		शुक्र - शुक्र - शुक्र	
06/10/2027 09:35		**29/11/2027 17:31**		**17/01/2028 00:35**		**14/03/2028 08:58**	
29/11/2027 17:31		**17/01/2028 00:35**		**14/03/2028 08:58**		**03/10/2028 06:58**	
राहु	14/10/2027 13:10	गुरु	06/12/2027 04:04	शनि	26/01/2028 02:30	शुक्र	17/04/2028 04:38
गुरु	21/10/2027 19:02	शनि	13/12/2027 19:35	बुध	03/02/2028 05:30	सूर्य	27/04/2028 08:08
शनि	30/10/2027 09:29	बुध	20/12/2027 15:47	केतु	06/02/2028 13:47	चंद्र	14/05/2028 05:58
बुध	07/11/2027 02:12	केतु	23/12/2027 11:23	शुक्र	16/02/2028 03:11	मंगळ	26/05/2028 02:03
केतु	10/11/2027 06:16	शुक्र	31/12/2027 12:34	सूर्य	18/02/2028 24:00	राहु	25/06/2028 12:33
शुक्र	19/11/2027 07:36	सूर्य	02/01/2028 22:31	चंद्र	23/02/2028 18:42	गुरु	22/07/2028 13:53
सूर्य	22/11/2027 00:48	चंद्र	06/01/2028 23:06	मंगळ	27/02/2028 02:59	शनि	23/08/2028 16:58
चंद्र	26/11/2027 13:27	मंगळ	09/01/2028 18:43	राहु	06/03/2028 17:27	बुध	21/09/2028 10:53
मंगळ	29/11/2027 17:31	राहु	17/01/2028 00:35	गुरु	14/03/2028 08:58	केतु	03/10/2028 06:58

योगिनी दशा

भोग्य दशा वेल : उल्का 2 वर्ष 2 महिना 0 दिवस

उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगळा 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष
02/09/2025	**03/11/2027**	**03/11/2034**	**03/11/2042**	**03/11/2043**
03/11/2027	**03/11/2034**	**03/11/2042**	**03/11/2043**	**02/11/2045**
00/00/0000	सिद्ध 14/03/2029	संक 13/08/2036	मंग 13/11/2042	पिंग 13/12/2043
00/00/0000	संक 03/10/2030	मंग 02/11/2036	पिंग 03/12/2042	धान्य 12/02/2044
00/00/0000	मंग 13/12/2030	पिंग 13/04/2037	धान्य 03/01/2043	भ्राम 04/05/2044
02/09/2025	पिंग 04/05/2031	धान्य 13/12/2037	भ्राम 12/02/2043	भद्रि 13/08/2044
पिंग 02/11/2025	धान्य 03/12/2031	भ्राम 03/11/2038	भद्रि 04/04/2043	उल्क 13/12/2044
धान्य 04/05/2026	भ्राम 12/09/2032	भद्रि 13/12/2039	उल्क 04/06/2043	सिद्ध 04/05/2045
भ्राम 03/01/2027	भद्रि 03/09/2033	उल्क 13/04/2041	सिद्ध 14/08/2043	संक 13/10/2045
भद्रि 03/11/2027	उल्क 03/11/2034	सिद्ध 03/11/2042	संक 03/11/2043	मंग 02/11/2045

धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष
02/11/2045	**02/11/2048**	**02/11/2052**	**02/11/2057**	**03/11/2063**
02/11/2048	**02/11/2052**	**02/11/2057**	**03/11/2063**	**03/11/2070**
धान्य 02/02/2046	भ्राम 13/04/2049	भद्रि 14/07/2053	उल्क 03/11/2058	सिद्ध 14/03/2065
भ्राम 03/06/2046	भद्रि 02/11/2049	उल्क 14/05/2054	सिद्ध 03/01/2060	संक 03/10/2066
भद्रि 03/11/2046	उल्क 04/07/2050	सिद्ध 04/05/2055	संक 04/05/2061	मंग 13/12/2066
उल्क 04/05/2047	सिद्ध 14/04/2051	संक 13/06/2056	मंग 04/07/2061	पिंग 04/05/2067
सिद्ध 03/12/2047	संक 04/03/2052	मंग 03/08/2056	पिंग 02/11/2061	धान्य 03/12/2067
संक 03/08/2048	मंग 13/04/2052	पिंग 12/11/2056	धान्य 04/05/2062	भ्राम 12/09/2068
मंग 02/09/2048	पिंग 03/07/2052	धान्य 13/04/2057	भ्राम 03/01/2063	भद्रि 03/09/2069
पिंग 02/11/2048	धान्य 02/11/2052	भ्राम 02/11/2057	भद्रि 03/11/2063	उल्क 03/11/2070

नोट :– योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :–

मंगला : चन्द्र पिंगला : सूर्य धान्या : गुरु भ्रामरी : मंगल

भद्रिका : बुध उल्का : शनि सिद्धा : शुक्र संकटा : राहु/केतु

वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते.

योगिनी दशा पूर्ण 36 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

योगिनी दशा

संकटा 8 वर्ष		मंगळा 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष	
03/11/2070		03/11/2078		03/11/2079		02/11/2081		02/11/2084	
03/11/2078		03/11/2079		02/11/2081		02/11/2084		02/11/2088	
संक	13/08/2072	मंग	13/11/2078	पिंग	13/12/2079	धान्य	02/02/2082	भ्राम	13/04/2085
मंग	02/11/2072	पिंग	03/12/2078	धान्य	12/02/2080	भ्राम	03/06/2082	भद्रि	02/11/2085
पिंग	13/04/2073	धान्य	03/01/2079	भ्राम	04/05/2080	भद्रि	03/11/2082	उल्क	04/07/2086
धान्य	13/12/2073	भ्राम	12/02/2079	भद्रि	13/08/2080	उल्क	04/05/2083	सिद्ध	14/04/2087
भ्राम	03/11/2074	भद्रि	04/04/2079	उल्क	13/12/2080	सिद्ध	03/12/2083	संक	04/03/2088
भद्रि	13/12/2075	उल्क	04/06/2079	सिद्ध	04/05/2081	संक	03/08/2084	मंग	13/04/2088
उल्क	13/04/2077	सिद्ध	14/08/2079	संक	13/10/2081	मंग	02/09/2084	पिंग	03/07/2088
सिद्ध	03/11/2078	संक	03/11/2079	मंग	02/11/2081	पिंग	02/11/2084	धान्य	02/11/2088

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगळा 1 वर्ष	
02/11/2088		02/11/2093		03/11/2099		04/11/2106		04/11/2114	
02/11/2093		03/11/2099		04/11/2106		04/11/2114		04/11/2115	
भद्रि	14/07/2089	उल्क	03/11/2094	सिद्ध	15/03/2101	संक	14/08/2108	मंग	14/11/2114
उल्क	14/05/2090	सिद्ध	03/01/2096	संक	04/10/2102	मंग	03/11/2108	पिंग	04/12/2114
सिद्ध	04/05/2091	संक	04/05/2097	मंग	14/12/2102	पिंग	14/04/2109	धान्य	04/01/2115
संक	13/06/2092	मंग	04/07/2097	पिंग	05/05/2103	धान्य	14/12/2109	भ्राम	13/02/2115
मंग	03/08/2092	पिंग	02/11/2097	धान्य	04/12/2103	भ्राम	04/11/2110	भद्रि	05/04/2115
पिंग	12/11/2092	धान्य	04/05/2098	भ्राम	13/09/2104	भद्रि	14/12/2111	उल्क	05/06/2115
धान्य	13/04/2093	भ्राम	03/01/2099	भद्रि	04/09/2105	उल्क	14/04/2113	सिद्ध	15/08/2115
भ्राम	02/11/2093	भद्रि	03/11/2099	उल्क	04/11/2106	सिद्ध	04/11/2114	संक	04/11/2115

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
04/11/2115		03/11/2117		03/11/2120		03/11/2124		03/11/2129	
03/11/2117		03/11/2120		03/11/2124		03/11/2129		00/00/0000	
पिंग	14/12/2115	धान्य	03/02/2118	भ्राम	14/04/2121	भद्रि	15/07/2125	उल्क	04/11/2130
धान्य	13/02/2116	भ्राम	04/06/2118	भद्रि	03/11/2121	उल्क	15/05/2126	सिद्ध	04/01/2132
भ्राम	05/05/2116	भद्रि	04/11/2118	उल्क	05/07/2122	सिद्ध	05/05/2127	संक	05/05/2133
भद्रि	14/08/2116	उल्क	05/05/2119	सिद्ध	15/04/2123	संक	14/06/2128	मंग	05/07/2133
उल्क	14/12/2116	सिद्ध	04/12/2119	संक	05/03/2124	मंग	04/08/2128	पिंग	03/09/2133
सिद्ध	05/05/2117	संक	04/08/2120	मंग	14/04/2124	पिंग	13/11/2128		00/00/0000
संक	14/10/2117	मंग	03/09/2120	पिंग	04/07/2124	धान्य	14/04/2129		00/00/0000
मंग	03/11/2117	पिंग	03/11/2120	धान्य	03/11/2124	भ्राम	03/11/2129		00/00/0000

SURESH MAHARAJ
ASTROLOGER AND VASTU CONSULTANT .
+91 9860000004
suresh.maharaj64@gmail.com, www.sureshmaharaj.com

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	2
भाग्यांक	2
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिवस	रवि, सोम, मंगळ
शुभ ग्रह	रवि, चन्द्र, मंगळ
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पोवले
शुभ उपरत्न	लाल हकीक
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सकाली के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	तूप

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	85%	व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	78%	सुख, सन्तति सुख
पोवले	मंगळ	77%	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
नीलम	शनि	77%	सन्तति सुख, पराक्रम, सुख
मोती	चंद्र	72%	धन, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	66%	व्यावसायिक उन्नति
पुष्कराज	गुरु	61%	दुर्घटणा पासून सुरक्षा, धन, सन्तति सुख
पन्ना	बुध	25%	व्यावसायिक हानि, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	22%	नेष्ट भाग्य, दाम्पत्य कष्ट, व्यय

रत्न की शुभता

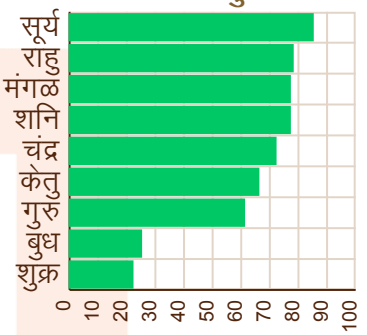

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	14/03/2028	72%	59%	83%	25%	61%	34%	64%	66%	78%
शुक्र	14/03/2048	72%	59%	77%	38%	61%	47%	83%	84%	72%
सूर्य	14/03/2054	97%	78%	83%	25%	67%	0%	64%	66%	53%
चंद्र	14/03/2064	91%	84%	77%	38%	61%	22%	77%	66%	53%
मंगळ	15/03/2071	91%	78%	89%	0%	67%	22%	77%	66%	72%
राहु	14/03/2089	72%	59%	64%	25%	61%	34%	83%	91%	53%
गुरु	15/03/2105	91%	78%	83%	0%	73%	0%	77%	78%	66%
शनि	15/03/2124	72%	59%	64%	38%	61%	34%	89%	84%	53%
बुध	15/03/2141	91%	59%	77%	50%	61%	34%	77%	78%	66%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए माणिक्य, गोमेद, मूंगा व नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

माणिक्य, गोमेद व नीलम रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए मोती, लहसुनिया एवं पुखराज रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पन्ना रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

हीरा पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत

विवरण निम्न प्रकार से है :-

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य दशम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको बुद्धिमान, विद्वान और प्रसिद्ध बनाएगा। इसकी शुभता से आप आत्मविश्वास से भरे हुए आर्थिक रूप से सुदृढ़ व्यक्ति होंगे। रत्न शक्तियां आपको कार्यक्षत्र में अधिकारिक शक्तियां प्राप्त करने में सहयोग करेंगी। आपको सरकारी क्षेत्र में नौकरी प्राप्त हो सकती है। आजीविका क्षेत्र में भी आपको उच्चाधिकारियों का सुख-सहयोग सहजता से प्राप्त होगा। यह रत्न आपको कार्यक्षेत्र में बड़ी सफलता दिला सकता है। रत्न शुभता से नेतृत्त्व करने की अद्भुत योग्यता सामने आयेगी।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में सूर्य दशमेश है। आजीविका क्षेत्र को प्रबल करने के लिए आप सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर सकते है। माणिक्य रत्न आपको उत्तम स्वास्थ्य सुख दे सकता है। रत्न शुभता से कार्यक्षेत्र में आपको उच्च सम्मानित पद, आधिकारिक शक्तियां, प्रशासनिक कुशलता की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न आपको व्यवसाय में सफलता भी देगा। माणिक्य रत्न की शुभता से आपके अपने पिता से संबंध मजबूत होंगे। माणिक्य रत्न के प्रभाव से आप किसी सरकारी क्षेत्र में कार्यरत हो सकते है। सरकारी विभागों से जुड़े कार्य रत्न शुभता से शीघ्र पूरे हो सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। गोमेद रत्न धारण करने से आपके साहस भाव में वृद्धि होगी। सरकारी पक्ष से सहयोग प्राप्त होगा। प्रशासनिक व्यक्तियों के द्वार आपका हित साधन हो सकता है। यह रत्न आपको माता से सुख देगा। भ्रम की स्थिति दूर होगी। आपके पास भौतिक सुख-सुविधाओं का भंड़ार हो सकता है। विदेश प्रवास अनुकूल होगा। नौकरी के क्षेत्र में राहु ग्रह की शुभता प्राप्त होगी। गोमेद रत्न आजीविका क्षेत्र में शुभता बनाये रखेगा।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि पंचम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शिक्षा क्षेत्र में विशेष सम्मान, पद और सफलता प्राप्त होगी। रत्न शुभता आपको अधिकार शक्ति प्रदान करेगी। आप शिक्षा क्षेत्र या मनोरंजन क्षेत्र में अपनी विशेष योग्यता दिखा पाएंगे। इस रत्न को धारण करने से आप धन-संपत्ति का संचय करने में सफल होंगे। अध्ययन कार्यों में आपका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा रहेगा। एवं यह रत्न आपके संतान सुख को बढ़ाएगा। आपको कम परिश्रम करने पर भी अधिक लाभ देगा। विद्याध्ययन में आपकी रुचि जागृत होगी तथा धार्मिक क्रिया-कलापों में आपको सुख का अनुभव होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको धैर्यवान बनाएगा। आपको साहसपूर्ण कार्यों से लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण बनाए रखेंगे। मूंगे रत्न शुभता से आपकी वाणी में मिठास और महत्वकांक्षाओं की वृद्धि होगी। रत्न प्रभाव से आप अपने गुरुजनों का बहुत सम्मान करेंगे। मूंगा रत्न आपको ऊर्जावान, स्फूर्तिदायक रख आपके जोश को बढ़ाएगा। आपको मूंगा रत्न धारण करना चाहिए।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और षष्ठेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आपका रोगों से बचाव हो सकता है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप अपने व्यक्तित्व को बेहतर कर सकते है। यह रत्न आपके क्रोध भाव में कमी कर आपको विनम्र बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। मूंगे रत्न की शुभता से आपकी ऊर्जा शक्ति, जोश, उत्साह, साहस तथा पहल क्षमता का विकास हो सकता है। मूंगा रत्न आपके लिए षष्ठेश का रत्न भी होने के कारण आपको रोग, ऋण और कोर्ट कचहरी के मामलों में मनोकूल सफलता दे सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती

से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि पंचम भाव में स्थित है। शनि रत्न नीलम आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। नीलम रत्न अद्भुत और अचूक प्रभावशाली रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आप परिश्रमी, भ्रमणशील, प्रसन्न और सुखी रखेगा। रत्न शुभता से आप दीर्घायु होंगे। आपको अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। नीलम रत्न आपके शैक्षिक व्यवधानों को दूर करेगा। धर्म क्रियाओं की ओर उन्मुख होंगे। आपकी धन संपति में बढ़ोतरी होगी। धीरे धीरे आपकी प्रसिद्धि का विस्तार होगा। रत्न प्रभाव से आपके व्यवहार में मधुरता आयेगी।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश है। शनि शुभता प्राप्त करने के लिए आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते है। नीलम रत्न आपको दूरदर्शिता, पुरुषार्थ एवं छोटे भाई बहनों का सुख प्राप्त हो सकता है। यह रत्न आपको मातृ सुख दे सकता है। रत्न शुभता से आप भूमि व संपति से पर्याप्त लाभ प्राप्त कर सकते है। नीलम रत्न आपके शत्रुओं को परास्त कर सकता है। पिता से आपके संबंध सुधारने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न आपको यात्राओं के भरपूर अवसर प्रदान कर सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र द्वितीय भाव में स्थित है। इसलिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न आपके लिए शुभ रत्न है इससे आप मधुरभाषी, सहनशील एवं शांति प्रिय व्यक्तित्व के स्वामी होंगे। पारिवारिक स्नेह को सुखद बनाये रखने में मोती अहम भूमिका निभा सकता है। मोती रत्न से धन-धान्य और परिवार में सम्मान की प्राप्ति होगी। मोती

रत्न आपकी त्याग भावना, बुद्धिमानी, चंचलता और यश को बढ़ायेगा। चंद्र की शुभता प्राप्ति के लिए आपका मोती रत्न धारण करना शुभ रहेगा। इस रत्न की शुभता से परिवार में धन आगमन बना रहेगा।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में चंद्र नवमेश है। अपने भाग्य को बली करने के लिए आप चंद्र रत्न मोती धारण कर सकते है। मोती रत्न धारण करने से आपके रुके हुए कार्य पूर्ण होने लगेंगे। किसी कारणवश आपकी जो योजनाएं रुकी हुई है वो फिर से शुरु हो सकती है। रत्न शुभता से आपका ग्रहस्थ जीवन सुखमय होगा। रत्न प्रभाव से आपको व्यवसाय में भी सफलता प्राप्त हो सकती है। मोती रत्न धारण कर आप की धार्मिक आस्था प्रबल होगी। जिसके फलस्वरूप आपके पूर्वजन्मों के दोषों का निराकरण हो सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु ग्रह कर्म भाव में स्थित है। आपके लिए केतु रत्न लहसुनिया धारण करना शुभफलदायक रहेगा। लहसुनिया रत्न आपको आत्मज्ञानी और शिल्पकला का जानकार बना सकता है। रत्न शुभता से आप प्रतियोगियों को शांत रखने में सफल रहेंगे। इस रत्न को धारण करने के बाद आपका स्वभाव मिलनसार, प्रभावशाली और प्रशंसनीय बनेगा। केतु रत्न लहसुनिया आपको अत्यधिक यात्राएं देकर, यात्राओं से लाभ देगा। व्यर्थ के कार्यो में आपके श्रम को बचाएगा। रत्न शुभता से आप अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहेंगे।

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य दशम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु अष्टम भाव में स्थित है। इसलिए आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न की शुभता से आप को पैतृक धन की प्राप्ति हो सकती है। यह रत्न आपको दीर्घायु प्रदान कर आपको चिरंजीवी बनायेगा। रत्न प्रभाव से आपको तीर्थ यात्राएं करने के अवसर प्राप्त हो सकते है। स्वजनों से अत्यधिक लगाव बनाये रखेगा। पुखराज आपको पारिवारिक संस्कार और पंरम्पराओं का पालन करने में सुख का अनुभव करायेगा। पुखराज रत्न से आपको अच्छ मित्रों की संगति प्राप्त होगी।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में गुरु द्वितीयेश और पंचमेश है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज शुभ फलदायक रत्न है। पुखराज रत्न धारण से संतान सुख प्राप्त हो सकते है। इसकी शुभता से आप धनी और सम्मानित व्यक्ति बन सकते है। पुखराज रत्न आपको दैनिक व्यवसाय में संतोषप्रद लाभ दे सकता है। रत्न प्रभाव से आप भाग्यशाली, धर्मपरायण और प्रसन्न रहने वाले व्यक्तित्व के स्वामी बन सकते है। पुखराज रत्न आपको महत्वाकांक्षी, उदार, आत्मविश्वासी और व्यावहारिक बना सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

पन्ना

आपकी कुंड़ली में बुध दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपको उत्तम कार्य करने के लिए विशेष प्रयास करने पड़ेगें। कार्यक्षेत्र में सहयोगियों का साथ न मिल पाने के कारण आपके कार्यो में विलम्ब हो सकता है। यह रत्न आपकी सामाजिक भावना में कमी कर सकता है। आपके अत्यधिक व्यवहारिक होने से आपमें संवेदनशीलता की कमी हो सकती है। धैर्य और विनम्रता की कमी भी आपमें दृष्टिगोचर हो सकती है। व्यापारिक क्षेत्र में निर्णय लेने में आप दुविधा की स्थिति का अनुभव हो सकता है। आर्थिक रूप से स्थिरता प्राप्त करने में बौद्धिक योग्यता का सहयोग नहीं मिल पाएगा। परिस्थितियों के अनुसार बातचीत का कौशल आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। पन्ना रत्न प्रभाव से मध्यस्थता का कार्य करना आपको दिक्कत दे सकता है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में बुध एकादशेश और अष्टमेश है। आपकी कुंडली में बुध का अष्टमेश होना शुभफलदायी नहीं है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपकी विचारधारा नकारात्मक हो सकती है। रत्न धारण करने पर आप धन संचय कला में निपुण होने पर भी अपनी आदतों और शौक के कारण आर्थिक कठिनाईयों में पड़ सकते है। यह रत्न आपको आय और लाभ क्षेत्रों में प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है। पन्ना रत्न आपकी बौद्धिक योग्यता में कमी कर सकता है। इस रत्न को पहनने पर आपकी इच्छापूर्ति में कमी हो सकती है। आपको शुभचिन्तकों का अभाव हो सकता है। यह रत्न आपकी संभावित प्राप्तियों को अवरुद्ध कर सकता है। सभी प्रकार के लाभों की प्राप्तियों में भी यह रत्न विलम्ब कर सकता है।

हीरा

आपकी कुड़ली में शुक्र नवम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा आपको घर से दूर विदेश प्रवास में लेकर जा सकता है। शुक्र आपको धार्मिक कार्यो में अरुचि दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपका वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है। आपके जीवन साथी को गंभीर रोग अपने प्रभाव में ले सकते है। गायन, वादन, सिनेमा जैसी ललित कलाओं में आपका मन कम लग सकता है। हीरा रत्न आपके धन में उत्तरोत्तर कमी का कारण बन सकता है। दया, उदारता और संतोष ऐसे गुणों का आपके जीवन में अभाव हो सकता है। विवाह के बाद आपकी सफलता आंशिक रूप से मंद हो सकती है। पिता के लिए शुक्र रत्न हीरा प्रतिकूल फलदायक हो सकता है।

आपकी वृश्चिक लग्न की कुंडली में शुक्र सप्तमेश और द्वादशेश है। शुक्र ग्रह को शुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त नहीं है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए प्रतिकूल फलदायक हो सकता है। यह रत्न आपको मानसिक रूप से परेशान कर सकता है। हीरा रत्न आपको कामी और विलासी बना सकता है। आपके अधिकतर व्यय वैवाहिक जीवन पर मुख्यतः केन्द्रित हो सकते है। इस रत्न को धारण करने पर आपका अपने जीवन साथी से मतभेद हो सकता है। रत्न की अनुकूलता आपके जीवनसाथी के स्वास्थ्य में भी कमी कर सकती है। यह रत्न आपको साझेदारी व्यवसायों में हानि दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपको शुक्र जनित

व्यवसायों में हानि हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

केतु
(02/09/2025 - 14/03/2028)

केतु की दशा में आपका मूंगा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, गोमेद, नीलम, पुखराज व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा व पन्ना रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(14/03/2028 - 14/03/2048)

शुक्र की दशा में आपका गोमेद, नीलम व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, लहसुनिया, पुखराज व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा व पन्ना रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(14/03/2048 - 14/03/2054)

सूर्य की दशा में आपका माणिक्य, मूंगा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, गोमेद, नीलम व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(14/03/2054 - 14/03/2064)

चन्द्र की दशा में आपका माणिक्य, मोती, मूंगा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(14/03/2064 - 15/03/2071)

मंगल की दशा में आपका माणिक्य, मूंगा, मोती व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, पुखराज व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(15/03/2071 - 14/03/2089)

राहु की दशा में आपका गोमेद व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, मूंगा, पुखराज, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा व पन्ना रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(14/03/2089 - 15/03/2105)

गुरु की दशा में आपका माणिक्य, मूंगा, मोती, गोमेद व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन

शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(15/03/2105 - 15/03/2124)

शनि की दशा में आपका नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, मूंगा, पुखराज, मोती व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व हीरा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(15/03/2124 - 15/03/2141)

बुध की दशा में आपका माणिक्य, गोमेद, मूंगा व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, पुखराज, मोती व पन्ना रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - मून स्टोन

आपका जन्म वृश्चिक राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह मंगल होता है। मून स्टोन रत्न चंद्रमा ग्रह के लिये धारण किया जाता है और चंद्रमा वृश्चिक राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि चंद्रमा की कर्क राशि वृश्चिक लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी जातक द्वारा किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृश्चिक राशि के लग्न वाले जातकों को मून स्टोन रत्न धारण करके चंद्रमा को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। चंद्र ग्रह के लिये मून स्टोन रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी चंद्र मंत्री पद व जनता का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा अपने वरिष्ठ व उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को माता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। चंद्रमा ग्रह मन एवं माता का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको मानसिक रोग या ठंड से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा डिप्रेशन की स्थिति में डिप्रेशन से मुक्ति दिलाता है।

मून स्टोन को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है तथा चंद्र ग्रह बुध को अपना मित्र ग्रह मानता है। मून स्टोन चंद्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात सोमवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल चंद्र की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। सोमवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय चंद्र की होरा का होता है। मून स्टोन को यदि सोमवार के साथ-साथ चंद्र के नक्षत्र अर्थात् रोहिणी, हस्त और श्रवण में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है। मून स्टोन को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, चंद्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

चंद्र का मंत्र - ऊँ सों सोमाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि चंद्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चीनी, दही,

सवा मीटर सफेद कपड़े का दान करें तो मून स्टोन की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन चंद्र का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या शिवलिंग पर जल चढ़ायें और शिव आराधना करें तो यह मून स्टोन की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक सोमवार को शिव चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृश्चिक लग्न वाले जातक यदि मून स्टोन की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली वृश्चिक लग्न की हैं। वृश्चिक लग्न के प्रभाव से आपके व्यक्तित्व पर मंगल का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। स्वभाव में उग्रता होने के कारण आप नेतृत्व शक्ति अच्छी है, परन्तु स्थिर राशि लग्न में होने के कारण आपके जीवन में स्थिरता रहती हैं। आप हर कार्य को टिक कर करते हैं। जल तत्व होने के कारण जिस तरह जल कभी बहुत शान्त और कभी उसमें उग्रता आने पर सब-कुछ तहस-नहस कर देता है वहीं बातें आपमें भी पायी जाती हैं। इसलिए आपको अपने क्रोध पर नियंत्रण बनाये रखना चाहिए क्योंकि ऐसे में अक्सर आप अपना ही नुकसान कर बैठते हैं।

आप बहुत जल्दी घुल-मिल जाते हैं और सभी के बीच में अपनी जगह बना लेते हैं।

आपकी याददाश्त बहुत अच्छी है और कुछ भी भूलते नहीं है। व आपकी सहन शक्ति बहुत है। आपके स्वभाव में क्रोध रहता है परन्तु दिल के नरम हैं। आपको अनुशासनहीनता पसंद नहीं है। उदारता का गुण आपमें है। आप चंचल मस्तिष्क वाले तथा अधिक भावुक प्रकृति के हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। तथा कुंडली के विशेष अशुभ भावों की श्रेणी में आते हैं। छठा स्थान दुस्थान है। व उपचय भाव हैं। छठे भाव का स्वामी और छठे भाव में बैठे ग्रह दोनों बुरा फल देते हैं। षष्ठ भाव से शत्रु, रोग, चिंता, ऋण और विमाता का विचार किया जाता हैं। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है।

अष्टम भाव में स्थित होने वाले ग्रहों का अपना और अपने स्वामित्व वाले भावों के बलों का नाश हो जाता हैं। तथा इस भाव का स्वामी अष्टमेश जिस भाव में बैठता हैं। उस भाव के फलों का नाश करता हैं। व जिस भाव का स्वामी अपने स्थान से अष्टम स्थान में स्थित होता हैं। उस भाव के फलों की हानि होती हैं। कुंडली का द्वादश भाव व्यय का पर्याय हैं। यह भाव हानियां, टैक्स, निद्रा, शैया भोग, शत्रु, अवनति, विदेश यात्रा का भाव हैं।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृश्चिक लग्न में षष्ठ भाव के स्वामी मंगल है। लग्नेश व षष्ठेश मंगल आपके शरीर में शक्ति व आत्मबल की अल्प वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, भाग्य व कर्म के मार्ग में रुकावटें, प्रतिष्ठा में न्यूनता, व्यय अधिक, विदेश स्थानों से लाभ दे सकता हैं।

बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रह विछोह का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रहविछोह का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट, परेशानियों के साथ लाभ प्राप्ति दे सकता है।

आपके लग्न के लिए शुक्र सप्तमेश व द्वादशेश हैं। द्वादश में शुक्र की राशी तुला होने से आप धार्मिक, धर्म के प्रति निष्ठा, बचपन कष्टमय, स्वजनों तथा मित्रों से लाभ, व्यय अनियंत्रित, शान-शौकत का प्रदर्शन, क्षीण नेत्र ज्योति, नौकरी में अधिक लाभ प्राप्त दे सकता हैं।

गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपति का नाश हो सकता है। बुद्धि विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षो के उपरान्त आपको कार्यो में सफलता, धन और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यो पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध

कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	02/09/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
अष्टमस्थान चरण	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
अष्टमस्थान चरण	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसातीचा पहला चरण	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------

तृतीय चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
अष्टमस्थान चरण	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	03/12/2102-29/11/2105	----------	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	25/02/2108-29/07/2108	23/11/2108-17/02/2111	----------

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थस्थान चरण	शुभ	सन्तति
अष्टमस्थान चरण	सम	बदनामी
साढ़ेसातीचा पहला चरण	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	सम	धन
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	शुभ	पराक्रम

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमची जन्म कुंडली मधे मंगळ ची स्थिति एकादश भावात आहे हा भाव आय आणि धना चा भाव आहे यांचे प्रभाव पासून तुमची आर्थिक स्थिति उत्तम रहणारी तसेच पुष्कल धन आणि लाभ अर्जित कराय साठी समर्थ होणारे. आय श्रोत्र जास्ती होणार जीवनात भूमि, चा फायदा होणार तसेच यांचा खरेदी बेची पण करणारे आणि फायदे होणार समाजातीळ एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहणारे तसेच सर्वाला आदर सम्मान देणारे. तुम्हाळा कधी कोणी विशेष सम्मान मिळेल आणि धन ऐश्वर्य युद्ध आपला जीवन सुखी ठेवणारे. एकादश भाव पासून द्वितीय भाव वर मंगळ ची दृष्टि आहे या मुळे कुटुम्बिक सुख शांति तसेच समृद्धि सामान्य होणार कधीं–मधीं कुटुम्बात परस्पर तनाव होणार पण यांचा प्रभाव अनुकूळ रहणार. वाणी मधे काही उष्णता राहील शु आती चा शिक्षण त्रास युद्ध होणार तसेच परिश्रम पासून, आपण या मधे सफळता प्राप्त करणारे. पंचम भाव वर मंगल ची दृष्टि पासून संतति युद्ध होणारे पण काही उशीरात संतति प्राप्ति होणारी, आणि जीवनात यांचा सहयोग प्राप्त होणार. परिश्रम पासून उच्च शिक्षण प्राप्त करणारे तसेच सरकार आणि मोठे अधिकारयां पासून चांगला संबन्ध ठेवणारे आणि फायदे होणार. षष्ठ भावात मंगळ दृष्टि शत्रु पराजित करण्या ची सामर्थ देणार काही प्रतियोगी परीक्षा, मुकद्मा (दावा) किंवा चुनाव वगेरे ला फायदे अर्जित करणारे. पण शरीरा मधे उष्णता पित्त आणि रक्त विकार पासून अजारी होउ सकतो पण दुष्प्रभाव नाय होणार. मामा पासून विशेष संबन्ध नाय होणार तसेच मामा चे जीवनात सुख सहयोग ची कमी आहे ह्या प्रकारी आपण धन ऐश्वर्य आणि वैभव युद्ध होउन प्रसन्नता सह सांसारिक जीवन ठेवणारे आणि यत्न क न कुटुम्बा चे आधुनिक पाळन–पोषण करणारे. ज्या मुळे कुटुम्ब संतुष्ट रहणार आणि सहयोग देणार अतः तुमचा दांपत्य जीवन सुखी आणि सहयोग ची भावना युद्ध होणार.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में चन्द्र और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ऊँ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंकविज्ञान फलित

तुमचा जन्म दिनांक दोन होण्या पासून अंक ज्योतिष आधार वर तुमचा मूळांक दोन आहे, मूळांक दोन चा स्वामी चन्द्र आहे. म्हणून आपण कल्पनाशील, कळाप्रिय आणि स्नेहशील स्वभाव चे व्यक्ति रहणारे. तुमची कल्पना शक्ति उच्च कोटी ची रहणारी पण शारीरिक शक्ति चांगली नाय रहणारी बुद्धि विवेक चागली होणारी आणि कार्य सफळ होणार. तुमचे मूलांक स्वामी चन्द्रमा सारख्या तुमची समय कधीं खोटी कधीं खरी तसेच विचार स्थिर नाय रहणार. तुमची योजने स्थिर नाय रहणारी एक योजना सोडून दुसरी योजने प्रारम्भ करायची संवय होणारी, धैर्य आणि कोशिस करायची क्षमता कमी होणारी. या मुळे कधी कोणी कार्य सफळ आणि पूर्ण नाय होणार. आत्म विश्वास आपल्या मधे कमी होणार. आणि स्वतः वर भरोसा नाय होणार या मुळे कधीं–मधीं निराश होउ सकतो. तुमची सामाजिक स्थित उत्तम रहणारी मानसिक स्थित सामान्य समाजातीळ लोक प्रिय रहणारे तसेच स्वतः परिश्रम पासून सामाजिक स्थित निर्मित करणारे. तुम्हाला आयुष्य अनुसार डोके, पोटे, लघवी सम्बन्धी रोगाचे कारण त्रास आणि मानसिक तनाव शीत रोग पण होउ सकतो. पाणी पासून उत्पन्न रोग कफ, सर्दी जुकाम डोके दुःखी वगेरे चा सामना होउ सकतो.

भाग्यांक 2 स्वामी चन्द्र आहे यांचा प्रभाव पासून कल्पना शक्ति चांगली होणारी वौद्धिक स्तर उच्च कोटी चा होणार, बुद्धी चे कार्य मधे विशेष रुचि होणारी शरीराचे परिश्रम चा कार्य मधे रुचि नाय होणारी. चन्द्रमा सारख्या भाग्य चा सितारा कमी–जास्ती होणार आणि कधी अड़चणे उत्पन्न होणार असे समयावर धैर्य ठेवाय ची आवश्यकता होणारी, कारण किं तुमचा भाग्य सितारा पुनः पूनम सारख्या प्रकाश वान होणार आणि धैर्य नाय ठेवाय ची कमजोरी होणारी.तुमचा भाग्य परिवर्तित होणार स्थिर कधी पण नाय होणार पूर्ण जीवन पर्यन्त भाग्य ची कमी नेहमी अनुभव होणारी तुम्हाला अधिकारी पासून लाभ होणार धन–धान्य पासून सुखी रहणारे आपळी प्रकृति वर नियंत्रण ठेवाय ला पाहिजे, असा नाय झाला तर एक कार्य नंतर दुसरे कार्य सोडून पुठे जाय ची संवय पासून कार्य उसीर सम्पन्न होणारे कधी–कधी–असफळ पण होउ सकतो.

आपल्या मूळांक 2 आहे, आणि भाग्यांक पण 2 आहे–हे दोधांचे स्वामी चन्द्र आहे, मूलांक आणि भाग्यांक एकच होण्या चे आपल्या आपल्या मधे चन्द्रमा चे गुण आणि अवगुण फार मात्रा मधे होणार. यांच्या प्रभावाची कारणे कल्पना ची शक्ति जास्ती आणि चांगली होणारी आणि फार हुसार मषतिष्क होइळ. समाजा चा स्थिति चांगली रहणारी, आणि आपळे समया वर चांगला भाग्योदय होणार, आपळे भाग्योदय वुद्धि कारणे होणार, आणि असे रोजगार आणि व्यापारांचे कार्य होणार जेवड़ा मधे शरीरांचा उपयोग कमी आणि वुद्धि चा जास्त होइळ. भाग्योदया मधे लहान मोठी अडचने येणार, या कारणे आपल्या वुद्धि चा त्रास होइळ, कोण पण निर्णया साठी विचार करुन निर्णय करा. आर्थिक स्थिति आणि धान्य सम्पत्ती ची सोय मिळेल व्यापार आणि रोजगारां मधे दक्षता आणि कार्य कुशळता मिळेल. आपल्या भाग्योदय 20 वर्षां ची आयुष्य मधे शुरु होऊन 29 वर्ष पर्यन्त उन्नति मिळेल. आणि 38 वर्षां ची आयुष्य वर पूर्ण भाग्योदय आयुष्य. आपळे मूळांक 2 ची मित्रता 7 आणि 9 ते आहे आणि भाग्यांक ची मित्रता पण 9 ते आहे या

साठी जीवना मधे 2, 7, 9, चे अंक विशेष योग दान देणार आणि हा अंका चे प्रभावातून जीवना मधे घटना पण होणार आहे. आपल्या मूळांक आणि भाग्यांक हे दोनी एकच आहे, ह्या साठी मूलांक–भाग्यांक दोघांचे पूर्ण वृद्धी आपळे जीवना च्या प्रमुख घटना हा अंकाची संबनधित मास, तारीख वर्ष दिवस आणि सन्–या वर्षां चे आयु मधे घटणार, या कारणे कधी हा अंका चे सम्वनधित तारीख मास, दिवस, ईस्वी, सन् या संबनधित आयु चा वर्षा मधे विशेष घटना समयी लक्ष ठेऊन कार्य करायला पाहिचे, पत्र लेखन, मोठे अधिकारयांचा सम्पर्क आणि कार्या चे शुरुआत सर्व असे समयवर शुभ होणार आहे आणि जीवना चे घटना पण या समया वर होणार आहे या साठी जीवना चे समस्त घटणे वघा आणि लक्ष ठेवा ज्या अंक आपल्या साठी खरे आहे ते जीवना मधे वापरा आणि मोठे योजने वनवा आणि स्वतः चा जीवना चा भाग्योदय करावे. आपळे फरवरी जुलाई सितम्बर महीना विशेष घटनां चा आहे कोण पण नवीन कार्य असा दिवसा मधे प्रारम्भ करा, आपळे मूळांक आणि भाग्यांक पण भेंटाय ला पाहिजे ला पाहिजे या समयी सर्व शुभ आहे. मूळांक 2 आणि भाग्यांक प्रभाव पासून 2, 7, 9, च्या ईस्वी सन् तुमचा साठी विशेष घटना चा वर्ष आहे. तुम्हाला असे वर्ष पूर्ण बरा आहे, यांचेयोग– 2, 7, 9 आहे. 2 – 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74. 7 – 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70, 79. 9 – 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72हे वर्ष आपळे जीवना चा परिवर्तन कारी वर्ष आहे आणि हा वर्ष मधे विशेष घटना घटित होणारी तसेच स्मारक होणारी.

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्भ काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रुग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरें की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान

करके सुखानुभूति करेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मी, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

पंचम भाव में शनि हो तो जातक आलसी, सन्तानयुक्त, चंचल, उदासीन, विद्वान, भ्रमणशील एवं बातरोगी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं कूर होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म वृश्चिक लग्नामध्ये झाला असल्याने शारीरिकघ्ष्ट्या आपण धष्टपुष्ट व निरोगी तसेच बलवान असाल. समर्पित व्यक्ती असल्याने कष्टाने सर्व कामे कराल. आपले वैशिष्ट्य म्हणजे आपण निर्भिड व्यक्ती असून स्वपराक्रम व साहसाने इतरेजनांना प्रभावित कराल. धनऐश्वर्य व वैभवयुक्त असाल आणि स्वकष्टाने भौतिक सुखसाधने प्राप्त करून त्याचा आनंदाने उपभोग घ्याल. विद्वान पुरूष असल्याने व विभिन्न विषयांचे ज्ञान असल्याने समाज आपल्याला यथोचित मान देईल. कुळ व कुटुंबामध्ये श्रेष्ठ बनाल व कुटुंबाचे पोषण तसेच सुख व सहयोग द्याल. मित्र व नातेवाईकांशी जवळीक असेल आणि त्यांना मदत करण्यास तत्पर असाल. भावंडे कमी असतील.

आपण एक महत्वाकांक्षी व्यक्ती असाल आणि मोठमोठी कामे करण्यात मग्न असाल. आपल्यामध्ये नेहमी आत्मशक्तीची प्रबलता राहील. आपण विद्वान व्यक्ती असाल परंतु कधी कधी इतरेजनांबद्दल द्वेष किंवा ईर्षा उत्पन्न होईल. त्याचबरोबर आपल्या प्रापंचिक व्यापात इतके गुरफटले जाल की त्यातून आरोग्यावर परिणाम होईल. इतरेजनांनी तुमच्या कामात अडथळे निर्माण केले तर प्रचंड क्रोधीत व्हाल. सत्यावर आपली श्रद्धा असेल आणि धनसंग्रह ही तुमची व्यक्तिविशेषता असेल. या संग्रहवृत्तीमुळे स्वजन रूष्ट होतील. स्वतःवर नियंत्रण ठेवायला तुम्हाला जमते, पण संवेदनशीलता व नैतिकतेचा अभाव असेल आणि काळानुसार पावले उचलण्याची वृत्ती असेल. नेतृत्वगुण आपल्यात आहेत, पण त्यात क्रौर्यही आहे. आयुष्यात विज्ञान किंवा गणित क्षेत्रात प्रसिद्धी मिळू शकते.

बुद्धिमान व्यक्ती असाल आणि सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त करण्याची प्रतिभा असेल. कधी कधी इतरेजनांबरोबर विवाद होतील, ज्यामुळे सामाजिक प्रभावात न्यूनत्व येईल. इतरांनी त्रास दिला तर वाणीमध्ये कठोरता येईल. अशाप्रकारे निडर, परिश्रमी, संग्रही, महत्वाकांक्षी व शत्रूहंता वृत्तीने सुखाने जीवन जगाल. यथोक्तम–

श्ररोनरोळत्यंतविचारसारोवद्यविद्याधिकता समेतः।
प्रसूतिकाले किल लग्नशाली भवेदलिस्तस्य कलिः सदैवः।।

– जातकाभरणम

अर्थात वृश्चिक लग्नामध्ये उत्पन्न झालेला जातक शूरवीर, तत्ववेत्ता, आपल्या विचारांना चुकीच्या दिशेने नेणारा आणि विवादात लीन राहातो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये गुरूची धनु राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एक आत्मविश्वासी व्यक्ती असाल आणि आपल्या विचारांचे कोणताही मुलाहिजा न बाळगता इतरांसमोर प्रगटीकरण कराल. यामुळे लोक प्रभावित होतील. जीवनातील संकटे व अडथळ्यांना घ्ढतेने सामना करून त्याचे निराकारण कराल. सत्यावर आपली निष्ठा राहील आणि त्याप्रमाणे चालण्यास तत्पर असाल. आपल्याला योग्य वाटेल तेच बोलाल आणि इतर आपले बोलणे कसे घेत आहेत किंवा त्यांच्यावर काय परिणाम होईल याची चिंता करत नाही. नजीकच्या नातेवाईकांशी औपचारिक संबंध ठेवाल पण काळानुसार त्यांच्याशी घनिष्ठ संबंध ठेवण्यासही उत्सुक राहाल.

आपले कौटुंबिक जीवन सामान्यपणे सुखी राहील. वाणी अत्यंत मधुर व ओजस्वी असेल व त्याद्वारे लोकांवर प्रभाव पाडाल. प्रापंचिक धनऐश्वर्य व भौतिक सुखसाधनांनी युक्त असाल आणि आनंदाने त्याचा उपभोग घ्याल. प्रवृत्ती धार्मिक राहील आणि वेळोवेळी धार्मिक कार्य व उत्सवाचे आयोजन करत राहाल. स्थिर धनाचे स्वामी, वाहनादिने युक्त यशस्वी व्यक्ती असाल. रसयुक्त पदार्थ आपल्याला आवडतात आणि धर्मोन्नतीसाठी सदैव आपले योगदान देत राहाल.

पराक्रम, संबंधी, प्रकाशन, लाहान–प्रवासं

आपल्या जन्मसमयी तृतीय भावामध्ये शनिची मकर राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एक बुद्धिजीवी व्यक्ती असाल आणि आपली स्मरणशक्ती चांगली असेल तसेच कोणत्याही विषयाचे ज्ञान सहज प्राप्त करण्याची क्षमता असेल. भावंडे असतील आणि त्यांचे पूर्ण सुख व सहयोग प्राप्त होईल. त्याचबरोबर ते आपल्यासाठी कर्तव्यपरायण व आज्ञाधारक असतील, तुम्च्यावर त्यांचे गाढ प्रेम असेल. कौटुंबिक शांती व सुखासाठी इतरांच्या दोषांकडे दुर्लक्ष कराल.

आपण एक पराक्रमी व साहसी व्यक्ती असाल तसेच कष्टाची कामे करण्यास समर्थ असाल. नीतिज्ञानही असेल आणि सल्लागाराचे काम उत्तम करू शकाल. कौटुंबिक अडचणी व संकटांचे निवारण करण्यास समर्थ असाल आणि हाती घेतलेले काम तडीस जात नाही तोपर्यंत थांबत नाही. दळणवळणाची साधने, जसे, फोन, दूरदर्शन, वाहनसंबंधी सुविधा प्राप्त करून त्याचा उपभोग घेताना स्वतःला इतरांपेक्षा श्रेष्ठ समजाल. संगीताची गोडी असेल. सर्व भौतिक सुखांचा उपभोग घ्याल. वेळोवेळी लघु–दीर्घ प्रवास होत राहतील व त्यातून अपेक्षित लाभ व धन प्राप्त कराल. तसेच त्यातून आपल्याला कीती मिळून समाजामध्ये मान वाढेल. वर्तमानपत्रे तसेच इतर माहितीपूर्ण लेख चवीने वाचाल व फावल्या वेळेत याचा सदुपयोग कराल. याव्यतिरिक्त आपण बातचीत व विचारांनी शांत प्रकृति, पुत्र, पौत्रादि युक्त, गुरू व मित्रप्रेमी, धनवान व आपल्या क्षेत्रात प्रसिद्ध असाल.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावात शनिची कुंभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली आई एक बुद्धिमान स्त्री असेल आणि कुटुंबामध्ये पती व मुलांशी पूर्ण सहयोग करेल. ती परिर्तनप्रिय असल्यामुळे ती घरात असताना नेहमी काही ना काही बदल होत असतील. कष्टाळू स्त्री असेल आणि पतीच्या खांद्याला खांदा लावून सर्व जबाबदाऱ्या पार पाडेल. सर्व कर्तव्ये प्रामाणिकपणे पार पाडेल.

आपल्याला सुंदर व आकर्षक घर आवडते. बाग, अंगण असावे असे वाटते. आपले घर आधुनिक उपकरणे व संसाधनांनी सुसज्ज ठेवाल. तरूणावस्थेत घर बदलत राहील, पण वृद्ध ावस्थेत स्वतःचे घर होईल. वाहनसुखसुद्धा प्राप्त होईल आणि उत्तम वाहन लाभेल. पैतृक संपत्ती जरी प्राप्त झाली तरी त्याचा उपभोग घेण्यात अनेक अडथळे येतील. उच्च शिक्षण प्राप्त कराल. आयुर्विज्ञान, इंजीनिअरिंग व स्पर्धात्मक परिक्षांमध्ये आपल्याला अपेक्षित लाभ व यश प्राप्त होईल. आपल्याला गुप्त धनसुद्धा प्राप्त होऊ शकते. ज्योतिषादि गुप्त विद्यांचे ज्ञान असेल. त्याचबरोबर छातीचे डॉक्टरही होऊ शकता. पत्नीचे सुख, मिष्ठान्नप्रेमी, विद्वान, उत्सवी वृत्तीने आपला काळ घालवाल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये गुरूची मीन राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे आपण दार्शनिक, कमी विश्राम घेणारे म्हणजे कार्यतत्पर असाल. कल्पनाशील असाल. जीवनसाथीच्या रूपात सुंदर पत्नीची इच्छा ठेवाल आणि तीसुद्धा बुद्धिमान व कलावान असेल. संकीर्ण विचारांच्या स्त्रीपेक्षा विशाल हृदय व उन्मुक्त विचारांची स्त्री पत्नी म्हणून आवडते. पत्नीकडून मर्यादित प्रेम व संतुष्टीची अपेक्षा ठेवता.

संतती असेल आणि त्यांच्यापासून आपल्याला पूर्ण सुख व सहयोग वृद्धावस्थेत प्राप्त होईल व ते आपली श्रद्धापूर्वक सेवा करतील. तुम्ही मुलांच्या शिक्षणाची उत्तम व्यवस्था कराल आणि तेसुद्धा उच्च शिक्षण प्राप्त करण्यास समर्थ असतील. प्राचीन वैदिक ग्रंथांचे परिशीलन करण्यामध्ये रूची राहील. ज्योतिषज्ञानसुद्धा घ्याल. पूर्वजन्म व पुण्य कर्मांवर विश्वास असेल आणि वर्तमान काळातील सुखदु:खांचा संबंध पूर्वजन्मातील कर्माशी जोडाल. विचारांनी जरी आधुनिक असला तरी पुरातन रीतीरिवाजांवर विश्वास ठेवून त्याचे पालन कराल. आपली मुले सुंदर व गोरी असतील.

रोग, शत्रु, सेवक आणि मामा

आपल्या जन्मसमयी षष्ठ भावामध्ये मंगळाची मेष राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे आपले विरोधी किंवा शत्रू उच्चाधिकारी किंवा श्रेष्ठ व्यक्ती असेल. त्याचबरोबर आपल्या शत्रूंची संख्याही अधिक असेल आणि समाजातील प्रत्येक क्षेत्रात आपले विरोधक उत्पन्न होतील. तुमचे सेवक जरी प्रामाणिक असले तरी कधी कधी त्यांच्या चोरी करण्याच्या सवयीमुळे तुम्हाला त्रास होऊ शकतो. त्याचबरोबर तुमच्या गोष्टीसुद्धा त्यांना माहीत असतील, आणि संधी मिळताच लोकांसमोर त्या उघड करून तुमच्या मानसन्मानाला धक्का पोचवतील. आपण खर्चिक असाल आणि मुक्त मनाने पैसे खर्च करण्याच्या सवयीमुळे आर्थिक अडचणींना तोंड द्यावे लागेल आणि कर्जबाजारीसुद्धा होण्याचा संभव आहे. सहजरित्या कर्ज परत न फेडल्यामुळे धनको तुमच्या खटलेसुद्धा दाखल करू शकतात. त्यामुळे शक्यतो कर्ज न घेण्याचा प्रयत्न करावा. इतर फौजदारी खटल्यांमुळे आपल्याला आर्थिक नुकसान होऊ शकते, पण खूप परिश्रम आणि समयानंतर त्यात यश मिळेल.

आपले मामा आणि मामीचा स्वभाव चांगला असेल आणि समाजात त्यांना सन्मान असेल. परंतु ते थोडेसे कंजूष असतील आणि त्यामुळे जेवढी आपुलकी, प्रेम ते दाखवतील त्या तुलनेत खूप कमी मदत करतील. त्याचबरोबर कार्यारंभी मदत न करता कार्य पूर्णत्वाला येताना मदत करतील. खाण्यापिण्याच्या बाबतीत सांभाळून राहावे कारण रक्तविकाराचे त्रास होऊ शकतात.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये शुक्राची वृषभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली पत्नी सुंदर, सुशील व आकर्षक व्यक्तिमत्वाची असेल. तुम्ही तिला आयुष्यभर सर्व भौतिक व प्रापंचिक सुख देण्याचा प्रयत्न कराल व तिच्या गरजा पूर्ण करण्याकडे नेहमी ध्यान द्याल. ती प्रामाणिक, विश्वासू व उदार वृत्तीची भाग्यवान स्त्री असेल. ती गोड बोलणारी, शांत, पतिव्रता, शिलाई, विणकाम किंवा चित्रकलेमध्ये प्रवीण व धार्मिक असेल. तिच्या गुणांवर तुम्ही फिदा असाल आणि नेहमी तिच्याकडे आकृष्ट राहून तिच्या कौटुंबिक मानसन्मानाची काळजी घ्याल. दोघांमध्ये परस्पर सामंजस्य उत्तम असल्यामुळे परस्पर प्रेम भावनेमुळे दाम्पत्यजीवन सुखात जाईल.

तुम्ही भाग्यवान व्यक्ती आहात आणि धनऐश्वर्य व वैभवाने युक्त असाल. जुगार किंवा सट्टयातूनसुद्धा पैसा मिळवू शकता. उत्तम धनार्जन होत असल्यामुळे आर्थिक स्थिती सामान्यतः चांगली राहील. तुम्च्यासाठी औषधी विभाग, रासायनिक शोधकार्य, सेना आदि क्षेत्र उपजीविकेसाठी उत्तम असेल. प्रेमाच्या बाबतीत तुम्ही अत्यधिक शृंगारप्रिय आहात आणि त्याचा पूर्ण आनंद घ्याल. आपल्यासाठी वृषभ, कर्क, मीन तसेच कन्या लग्नाचे जातक विवाहसंबंध, व्यापारात भागीदारी आणि मैत्रीसाठी चांगले आहेत. व्यापारात भागीदाराची निवड आपल्या बुद्धि मत्तेचा वापर करून करावी.

हुण्डा, बीमा आयुष्य आणि आपघात

आपल्या जन्मसमयी अष्टम भावामध्ये बुधाची मिथुन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे अध्यात्म विज्ञानामध्ये खूप रूची असेल. ज्योतिष, तंत्र, मंत्र इत्यादिवर श्रद्धा असेल आणि संधी मिळाली तर या क्षेत्रामध्ये काम करण्यास तत्पर असाल. अतिंद्रिय शक्ती उत्तम असल्यामुळे अंतप्रज्ञेद्वारे भविष्यवाणी करण्यास समर्थ असाल. खरे पाहता विश्वातील असामान्य गोष्टी समजून घेण्यात तुम्हाला खूप रस असेल आणि या विषयासंबंधी वेळोवेळी काम कराल. ज्योतिष किंवा आध्यात्मिक क्षेत्रात विशेषी कीती किंवा सन्मानसुद्धा मिळू शकतो.

वडिलधाऱ्यांकडून पैतृक संपत्ती किंवा मालमत्तेची प्राप्ती होईल आणि खूप चल–अचल संपत्ती आपल्या नावावर असेल. त्यामुळे आपण पूर्ण संतुष्ट व प्रसन्न असाल. संकटकाळात आपली मालमत्ता विकून आर्थिक संपन्न होऊ शकता. आयुष्य आरामात घालवाल आणि सर्व सुख सुविधा असतील. विवाहाच्या वेळी आपल्याला आपल्या मागणीप्रमाणे भरपूर धन प्राप्त होऊ शकते. यात धन, आभूषणे, वाहन तसेच इतर अहेर असतील. विम्यातूनसुद्धा आपल्याला लाभ होऊ शकतो. विम्याच्या एजन्सीद्वारे सुद्धा पैसे कमवू शकाल. आयुष्यात चोरी, दरोडा किंवा अन्य दुर्घटना होण्याची शक्यता कमी आहे. आयुष्य उत्तम असेल आणि आयुष्य सुखी व प्रसन्नपणे घालवण्यास समर्थ असाल.

सौभाग्य, प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा आणि लाम–प्रवास

आपल्या जन्मसमयी नवम भावामध्ये चंद्राची कर्क राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे आपण एक भाग्यशाली व्यक्ती असाल. तुम्ही इतरांसमोर गरजेपेक्षा जरा जास्त धार्मिकतेचे प्रदर्शन करण्याचा प्रयत्न कराल आणि कुळपरंपरेनुसार धर्माचे पालन कराल. देवावर श्रद्धा असेल आणि नित्य पूजा किंवा अन्य साधनेतून आत्मसंतुष्टी मिळवाल, पण कधी कधी एकदम उदासीनताही दाखवाल. त्यामुळे नित्य पूजा नित्य असणार नाही.

उच्च शिक्षण प्राप्त करण्यासाठी प्रयत्नरत राहाल. त्याशिवाय आध्यात्मिक, तंत्र, मंत्र व ज्योतिषविषयक अध्ययनसुद्धा करण्याचा प्रयत्न कराल. संतवाणी ऐकण्याची आवड असेल. प्रवृत्ती परिवर्तनशील असल्यामुळे वेळेनुसार आपले शब्द आणि वचन फिरवाल. अनेक तीर्थयात्रा कराल आणि आपल्या धर्मातील पवित्र ग्रंथांचे श्रद्धेने अध्ययन कराल. आयुष्यात दूरचे प्रवास होऊन त्यात लाभ मिळेल पण तुमच्या वृत्ती व आर्थिक कंजुषीमुळे मान सन्मानात नयूनत्व येईल.

एक आदर्श व प्रसिद्ध व्यक्ती असाल. अनेकदा धर्मार्थ दान देण्याचा विचार कराल पण प्रत्यक्षात ते एक नाटक असेल. जिथे पैसे खर्च होतात ते काम करणे तुम्हाला आवडत नाही, पण स्वतःसाठी मात्र प्रमाणापेक्षा जास्त खर्च कराल. इतरेजनांच्या सेवेसाठी किंवा मदतीसाठी पैसे खर्च करताना हात आखडतील. नातवंडांपासून तुम्हाला सुख व आनंद मिळे. वास्तवात आपल्या पूर्वजन्मीच्या पुण्यामुळे या जीवनामध्ये सुख ऐश्वर्य भोगत आहात, पण पुढील जन्मी असेच सुख मिळण्यासाठी आताच काही चांगले कर्म करणे गरजेचे आहे, हे लक्षात ठेवा. एरवी, आपण धार्मिक वृत्तीचे, उपवास करणारे, तीर्थयात्री व श्रद्धाळू आहात.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये सूर्याची सिंह राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्या वडिलांचे स्वास्थ्य उत्तम असेल. त्याचबरोबर त्यांना अधिकार व विशेष सन्मान प्राप्त करण्यात रूची असेल. मनाने प्रसन्न स्वभावाचे असतील व मानवजातीप्रति मनामध्ये दया भाव असेल. धार्मिक कार्य करण्यास नेहमी उत्सुक असतील आणि न्यायनिवाडा करताना आपल्या बुद्धिमत्तेची प्रचिती देतील. प्रवृत्ती क्षमाशील राहील व चांगले नियोजक किंवा नेत्याच्या रूपाने समाजात प्रसिद्ध असतील.

व्यावसायिकघ्ष्ट्या रसायनशास्त्र, संशोधन, गुन्हा अन्वेषण, औषधक्षेत्र, संरक्षण आदि विभाग आपल्यासाठी उत्तम व अनुकूल असतील आणि या क्षेत्रात आपल्याला सहज उन्नती व कीर्ती प्राप्त होईल. त्याचबरोबर आधुनिक वैज्ञानिक क्षेत्र किंवा संगणकसंबंधित विषयामध्ये आपल्याला रूची उत्पन्न होऊ शकते. राजकारणात प्रत्यक्ष संबंध कमीच असेल पण राजकारण्यांकडून यथोचित लाभ व सहयोग प्राप्त होत राहील. सरकारी विभागामध्ये अधिकारी व्यक्ती असाल किंवा एखाद्या कंपनीमध्ये उच्च पद प्राप्त करण्यास समर्थ असाल. कोर्टप्रकरणात यश मिळेल व त्यातून धनलाभ होईल. याव्यतिरिक्त तुम्ही पराक्रमी उग्रस्वभावी, साहसी कामे करण्यास उत्सुक असाल.

लाभ, मित्र, समाज, मोठा भाऊ आणि आकांक्षा

आपल्या जन्मसमयी एकादश भावामध्ये बुधाची कन्या राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एक महत्वाकांक्षी व्यक्ती असाल आणि मनामध्ये अनेकानेक इच्छाआकांक्षा घोळत असतील. एक पराक्रमी व परिश्रमी व्यक्ती असल्यामुळे यातील बहुतांशी इच्छाआकांक्षा पूर्ण होतील. यामध्ये आर्थिक महत्वाकांक्षा प्रबळ असेल. त्याचबरोबर विभिन्न मार्गांनी धनार्जन केल्यामुळे आर्थिक स्थिती सुध्द असेल. आपण लेखन, ज्योतिष, कनिशन एजंट, गणित किंवा शिक्षण क्षेत्रामध्ये कार्यरत असू शकता किंवा यातून भरपूर लाभ होऊ शकतो. त्याचबरोबर व्यापारातूनही उत्पन्न वाढेल.

मोठ्या भावांपेक्षा बहिणींकडून पूर्ण सुख व सहयोग प्राप्त होईल आणि त्यांची आईसमान माया तुम्च्यावर असेल. मित्रमंडळींच्या सहवासात अत्यंत प्रसन्न वाटेल आणि आपले सर्व मित्र चतुर, चलाख व शिक्षित असतील. वय वाढेल तसे मित्रांना तुम्ही मार्गदर्शन कराल आणि ते सुद्धा तुमचा सल्ला नेहमी मागतील. सामाजिकघ्ष्ट्यासुद्धा तुम्ही उच्च असाल आणि समाजामध्ये प्रतिष्ठित व आदरणीय समजले जाल. इतरेजनांची सेवा व परोपकारसुद्धा वेळोवेळी कराल.

घाटे, बन्धन, कर्जे, आवास परिवर्तन आणि मोक्ष

आपल्या जन्मसमयी द्वादश भावामध्ये शुक्राची तूळ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण आर्थिक क्षेत्रामध्ये सुघ्ढ, धन, वाहन व व्यापारादि क्षेत्रात उच्च स्थितीमध्ये असाल. एक अधिकारी व्यक्ती असाल आणि सुंदर घराचे मालक असाल. पैसा येत राहील कारण पैसे कसे कमवायचे तुम्हाला चांगले माहीत आहे. तुम्ही सरकारी किंवा निमसरकारी क्षेत्र किंवा संस्थांमध्ये गुंतवणूक करून त्यातून वेळोवेळी लाभ मिळवाल. त्याचबरोबर आपण एक प्रामाणिक उद्योगपतीसुद्धा होऊ शकता. आजीवन आर्थिक घ्ष्ट्या सुरक्षित असाल. बचत उत्तम असेल.

आपले राहणीमान व खाणेपिणे उच्च पातळीवरील असेल आणि ते तुम्ही नेहमी सांभाळाल, पण त्यामुळे खूप खर्च सहन करावा लागेल. आपल्याला स्वादिष्ट व महागडे भोजन चांगले आवडते. यासाठी चांगल्या हॉटेलमध्ये जाणे आवडते. मित्रांसाठी सुद्धा मुक्त मनाने खर्च कराल.

प्रवास नेहमी होत राहील आणि त्यातून आपल्याला लाभ व सन्मान प्राप्त होईल. देश तसेच विदेशात कार्यानिमित्त तसेच पर्यटनानिमित्त फिराल. कारण चांगली ठिकाणे, चांगली घ्श्ये पाहणे आपल्याला आवडते.

फलादेश - 2025

यंदा गुरु गोचरीने सप्तम भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यसाठी चांगळे असेळ. व्यापार किंवा नोकरीत वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे असेळ. व्यापार किंवा नोकरीत उन्नती होईळ किंवा अचानक ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर बेरोजगारांना काम मिळण्याची शक्यता आहे. यंदा अविवाहितांचे विवाह होण्याचा योग आहे. कौटुम्बिक सुखासाठी हे वर्ष चांगळे असेळ. पत्नीकडून सहकार्य मिळेळ. परस्पर संबंध उत्तम रहातीळ. ह्या काळात समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व सन्मान मिळवाळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर खर्च पण वाढेळ. अन्य गोचरफळे व दशाफळे पण चांगळी असल्यानी हे वर्ष चांगळे व भाग्यकारक आहे.

यंदा शनी चतुर्थ भावात असेळ. त्याचा प्रभाव सामान्यतः चांगळा असेळ. नोकरी व व्यापारात उन्नतीची शकयता आहे. राजकारणात संतुष्टी मिळेळ. भावंडे व कुटुंबातीळ ळोकांचे सहकार्य मिळेळ. आईची प्रकृती चांगळी असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे जाईळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा एरवादे नवीन कार्य किंवा घर वा इस्टेटीसंबंधी कार्य सुरु करण्याची शक्यता आहे. सुखातीळा अडथळे आळे तरी भविष्यात ळाभ होईळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ असेळ त्यामुळे सफळता मिळेळ. पण शनीच्या प्रभावाने मानसिक तणाव निर्माण होऊ शकतो. व महत्वाच्या कार्यात विलम्ब संभवतो. म्हणून हा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमिपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मंवल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे सर्व अडचणी दूर होतीळ व प्रसन्नता मिळेळ.

यंदा राहू गोचरीने तिसन्या भावात व केतू नवत्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. यंदा मान, प्रतिष्ठा व पराक्रमात वाढ होईळ. सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव होऊन ते समर्पण करतीळ. सर्व मानसिक चिंता संपतीळ. आर्थिक–दृष्टया ह्या काळात उन्नती होईळ. भरपूर प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. कार्यक्षेत्रात ह्या काळात स्वकष्टाने सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर मित्रांकडून सहकार्य मिळेळ. बांधवाविषयी चिंता उत्पन्न होऊ शकते. नवमस्थ केतू मुळे वेळप्रसंगी कार्यसिद्धीसाठी परिश्रम करावे ळागतीळ. पण अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूल असल्याने हे वर्ष सौभाग्यकारक असेळ.

केतु ची महादशा मधीं राहु चा अंतर 02/09/2025 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर गुरु चा अंतर प्रारंभ होणार। राहु चतुर्थ भाव मधीं कुम्भ राशि मधी स्थित आहे। पण गुरु अष्ट्ं भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूळ नाय रहणार अतः कार्य सफळता साठी अडचणे येणारी आर्थिक स्थिति चांगळी नाय रहणारी. कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होउ सकतो अतः ह्या वेळी कोणी पूंजी खर्चे नाय कराय ला पाहिजे. कुटुम्ब मधे सुख शान्ती आणि सहयोग नाय रहणार. असे समय वर मित्र जास्ती सहयोग नाय देणारे, अतः कोण्या वर जास्ती विश्वास क नका काही तरी इतर प्रयोजने पासून लाभ आणि सम्मान प्राप्त होउ सकतो. अतः धैर्य बरोबर समय व्यतीत करावे काही शत्रु त्रास उत्पन्न करणारे अतः जोखम कार्य पासून सावध रहावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ नाय रहणार अतः सगड़े अडचणे उत्पन्न होउ सकतो आणि विशेष प्रयोजने सफळ नाय होणारी. नौकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद रहणार. आर्थिक त्रास होउ सकतो. कुटुम्ब सुख शान्ती मधे कमी रहणारी तसेच परस्पर मतभेद रहणार या वेळी स्वास्थ्य पण प्रभावित होऊ सकतो आध्यात्म मधे चि उत्पन्न होणारी तसेच अनुभव प्राप्त होणार अतः संयम पासून समय व्यतीत करावे.

फलादेश - 2026

यंदा गोचरीने गुरु अष्टम भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने पूर्ण कराळ. व त्यात सफळता पण मिळेळ. शत्रु व विरोधक ह्या काळात निर्बळ असतीळ. व्यापार व नोकरीमध्ये किंवा राजकारणात सफळता मिळेळ धन, मान–सन्मान मिळेळ. ह्या काळात अचानक ळाभ होण्याची शक्यता आहे. ज्योतिष किंवा तंत्र–मंत्राची आवड असेळ. व त्याचे ज्ञान मिळवण्यास समर्थ असाळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे उन्नती होऊन मानसिक समाधान मिळेळ. शासन किंवा उच्चाधिकान्यांकडून ळाभ संभवतो. म्हणून हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ.

यंदा शनी चतुर्थ भावात असेळ. त्याचा प्रभाव सामान्यतः चांगळा असेळ. नोकरी व व्यापारात उन्नतीची शकयता आहे. राजकारणात संतुष्टी मिळेळ. भावंडे व कुटुंबातीळ ळोकांचे सहकार्य मिळेळ. आईची प्रकृती चांगळी असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे जाईळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा एरवादे नवीन कार्य किंवा घर वा इस्टेटीसंबंधी कार्य सुरु करण्याची शक्यता आहे. सुखातीळा अडथळे आळे तरी भविष्यात ळाभ होईळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ असेळ त्यामुळे सफळता मिळेळ. पण शनीच्या प्रभावाने मानसिक तणाव निर्माण होऊ शकतो. व महत्वाच्या कार्यात विलम्ब संभवतो. म्हणून हा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमिपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मंवल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे सर्व अडचणी दूर होतीळ व प्रसन्नता मिळेळ.

यंदा राहू गोचरीने तिसन्या भावात व केतू नवत्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. यंदा मान, प्रतिष्ठा व पराक्रमात वाढ होईळ. सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव होऊन ते समर्पण करतीळ. सर्व मानसिक चिंता संपतीळ. आर्थिक–दृष्टया ह्या काळात उन्नती होईळ. भरपूर प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. कार्यक्षेत्रात ह्या काळात स्वकष्टाने सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर मित्रांकडून सहकार्य मिळेळ. बांधवाविषयी चिंता उत्पन्न होऊ शकते. नवमस्थ केतू मुळे वेळप्रसंगी कार्यसिद्धीसाठी परिश्रम करावे ळागतीळ. पण अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूल असल्याने हे वर्ष सौभाग्यकारक असेळ.

केतु ची महादशा मधीं गुरु चा अंतर 06/02/2026 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर शनि चा अंतर प्रारंभ होणार। गुरु अष्ट्ं भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहे। पण शनि पंचम भाव मधीं मीन राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ रहणार अतः शुभ परिणाम प्राप्त होणार. परिश्रम पासून सफळता प्राप्त होणारी तसेच उन्नति प्राप्त करणारे आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धनार्जन होणार म्हणजे मिळकत वृद्धी होणारी. नौकरी मधे पदोन्नति होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर चांगला संबन्ध रहणार. कुटुम्ब सुख शान्ती चांगली रहणारी तसेच परस्पर मधुर संबन्ध रहणार. नवीन पूंजी लाभ होउ सकतो पण जोखम कार्य क नका.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ नाय रहणार अतः शुभ आणि विशेष कार्य मधे

सफळता नाय भेंटणारी. जूने कार्य पूर्ण नाय होणारे कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी कमी तसेच परस्पर मतभेद उत्पन्न होणार आर्थिक स्थिति प्रतिकूल रहणारी कधीं–मधीं आर्थिक त्रास उत्पन्न होऊ सकतो. व्यापार आणि उन्नती मार्ग मधे अडचणे येणारी आणि नवीन प्रयोजने सफळ नाय होणारी, नौकरी मधे पदोन्नती साठी उशीर होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद होऊ सकतो. मित्र आणि सम्बन्धी सहयोग नाय देणारे अतः धैर्य बरोबर समय व्यतीत करावे.

फलादेश - 2027

गोचरीने यंदा गुरु नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. धर्माविषयी श्रद्धा वाढेळ आणि परोपकाराची कार्ये कराळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. जुनी ळांबळेळी कार्ये पूर्ण होतीळ. नवीन व्यापारविषयक किंवा दुसन्या ळाभदायक योजना बनवाळ. कार्यक्षेत्रात उन्नती संभवते. नोकरी किंवा राजकारणात जबाबदारीचे स्थान मिळेळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ख्याती पसरेळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वण चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व दशाफळ पण अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने व परिश्रभाने सम्पन्न काराळ. ह्या काळात तुमच्या दृष्टिकोनात बदळ होण्याची शक्यता आहे. ळोकांशी संबंध चांगळे राहतीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे रहातीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात ळाभ व धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर मिळकतीची साधने वाढतीळ. संततीसौख्य चांगळे असेळ व त्यांची उन्नती संभवते. पत्नीची प्रकृती चांगळी असेळ, परस्पर संबंधात मधुरता राहीळ व सहकार्य मिळेळ.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण शुभ व अनकूळ असेळ. त्यामुळे प्रत्येक क्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर राजकारणी ळोकांशी संपर्क स्थापित होईळ ज्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा तुम्हाळा विशेष ळाभ होण्याची शक्यता आहे. म्हणून कार्यसिद्धीस तत्पर असावे व वेळेचा सदुपयोग करावा.

यंदा राहू गोचरीने द्वितीयात व केतू अष्टमात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात कौटुंबिक सुख–शांती व समृद्धी अनुकूल असेळ. परस्पर सहकार्य राहीळ. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक उद्विग्नता राहीळ. सांसारिक कार्ये परिश्रमाने साध्य होतीळ. आर्थिक स्थिती सामानय असेळ. आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती झाळी तरी खर्चही अधिक असेळ. परंतु त्यामुळे त्रास होणार नाही. त्याचबरोबर इस्टेटीसंबंधी ळाभ संभवतो.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ शुभ आहे. त्यामुळे कार्यसिद्धी व उन्नती अनुभवाळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ.

ह्या वर्ष शुक्र ची महादशा शुरु होत आहे। अतः ह्या समय तुमची जीवन शारणी तसेच कार्य क्षेत्र मधीं परिवर्तन होणार। ह्या वर्ष चा प्रारंभ केतु ची महादशा मधीं शनि चा आखेर अंतर पासून होत आहे। आणि वर्ष ची समाप्ति शुक्र ची महादशा मधीं शुक्र चा पहिला अंतर पासून होणारी। तुमची जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी नवम् भाव मधीं कर्क राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः शुभ फळ अर्जित कराय साठी समर्थ रहणारे पण खूप परिश्रम होणार. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धन अर्जित करणारे असे समय वर धन खर्चे पण खूप होणार अतः व्यापार क्षेत्रातीळ जोखम कार्य कराय ला नाय पाहिजे. सांसारिक विशेष कार्य सावध होउन सम्पन्न कराय ला पाहिजे. आणि नोकरी मधे

उन्नति साठी अधिकारयां बरोवर मधुर सम्बन्ध ठेवाय ला पाहिजे. कोणी फायदे ची प्रवास सम्पन्न होणारी शत्रु वर विजय प्राप्त करणारे अतः असे समय वर वुद्धि पासून कार्य सम्पन्न करावे.

हा समय तुमचा साठी मिळा–जुळा फळ देणार पण शुभ फळ जास्ती भेंटणार अतः परिश्रम आणि योग्यता पासून इच्छित परिणाम प्राप्त करणारे. ह्या वेळी प्रभाव युध माणूस बरोबर संपर्क स्थापित होणार जूने कार्य पण पूर्ण होणारे. समाजातील सहयोग आणि सम्मान प्राप्त होणार, कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी मधे उन्नति होणारी तसेच परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार. काही तरी प्रवास पासून फायदे होणार. ह्या वेळी आवास सम्बन्धातील परिवर्तन होउ सकतो. अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2028

गोचरीने यंदा गुरु नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. धर्माविषयी श्रद्धा वाढेळ आणि परोपकाराची कार्ये कराळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. जुनी ळांबळेळी कार्ये पूर्ण होतीळ. नवीन व्यापारविषयक किंवा दुसन्या ळाभदायक योजना बनवाळ. कार्यक्षेत्रात उन्नती संभवते. नोकरी किंवा राजकारणात जबाबदारीचे स्थान मिळेळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ख्याती पसरेळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वण चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व दशाफळ पण अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने व परिश्रभाने सम्पन्न काराळ. ह्या काळात तुमच्या दृष्टिकोनात बदळ होण्याची शक्यता आहे. ळोकांशी संबंध चांगळे राहतीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे रहातीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात ळाभ व धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर मिळकतीची साधने वाढतीळ. संततीसौख्य चांगळे असेळ व त्यांची उन्नती संभवते. पत्नीची प्रकृती चांगळी असेळ, परस्पर संबंधात मधुरता राहीळ व सहकार्य मिळेळ.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण शुभ व अनकूळ असेळ. त्यामुळे प्रत्येक क्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर राजकारणी ळोकांशी संपर्क स्थापित होईळ ज्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा तुम्हाळा विशेष ळाभ होण्याची शक्यता आहे. म्हणून कार्यसिद्धीस तत्पर असावे व वेळेचा सदुपयोग करावा.

गोचरीने यंदा राहू ळग्नी व केतु सप्तमात असेळ, त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष सामान्य असेळ. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य मध्यम स्वरूपाचे असेळ. कौटुंबिक जीवन सुखाचे राहीळ. परस्पर संबंध चांगळे असतीळ परंतु पत्नीची प्रकृती बिधडू शकते. आर्थिक सिती ह्या काळात सामान्य असेळ. कार्यक्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचेबरोबर प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या काळात जुने संबंध कमी होतीळ व नवीन संबंध वाढतीळ. ज्यामुळे भविष्यात ळाभ होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ आहे. त्यामुळे सांसारिक कार्यात यश मिळून उन्नतीपथावर अग्रेसर व्हाळ. त्याचबरोबर आर्थिक स्त्रोत वाढतीळ. त्यामुळे हे वर्ष सामानयतः शुभ असेळ.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी नवम् भावात कर्क राशि मधीं स्थित आहे।

फलादेश - 2029

यंदा गोचरीने गुरु दहाव्या भावात आहे. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष चांगळे असेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नतीकरता काळ अनुकूळ आहे. इच्छित सफळता मिळवव्यास समर्थ असाळ. त्याचबरोबर राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यकति किंवा उच्चाधिकांन्यांकडून ळाभ व सहयोग मिळेळ. राज्यस्तरावर एरवादा सन्मान मिळू शकतो. ह्या काळात कुटुंबात सुख–शान्ती राहीळ व सर्व ळोक परस्परांवर प्रेम करतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष, चांगळे असेळ व भरपूर धनळाभचे योग संभवतात. पण या काळात कष्ट अधिक होतीळ व विश्रांतीचा अभाव असेळ. त्याचबरोबर इतरांशी चांगळे संबंध ठेवावे. अन्य गोचरफळ व दशा अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे आहे.

यंदा गोचरीने शनी पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने व परिश्रभाने सम्पन्न काराळ. ह्या काळात तुमच्या दृष्टिकोनात बदळ होण्याची शक्यता आहे. ळोकांशी संबंध चांगळे राहतीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे रहातीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात ळाभ व धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर मिळकतीची साधने वाढतीळ. संततीसौख्य चांगळे असेळ व त्यांची उन्नती संभवते. पत्नीची प्रकृती चांगळी असेळ, परस्पर संबंधात मधुरता राहीळ व सहकार्य मिळेळ.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण शुभ व अनकूळ असेळ. त्यामुळे प्रत्येक क्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर राजकारणी ळोकांशी संपर्क स्थापित होईळ ज्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा तुम्हाळा विशेष ळाभ होण्याची शक्यता आहे. म्हणून कार्यसिद्धीस तत्पर असावे व वेळेचा सदुपयोग करावा.

गोचरीने यंदा राहू ळग्नी व केतु सप्तमात असेळ, त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष सामान्य असेळ. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य मध्यम स्वरूपाचे असेळ. कौटुंबिक जीवन सुखाचे राहीळ. परस्पर संबंध चांगळे असतीळ परंतु पत्नीची प्रकृती बिधडू शकते. आर्थिक सिति ह्या काळात सामान्य असेळ. कार्यक्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचेबरोबर प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या काळात जुने संबंध कमी होतीळ व नवीन संबंध वाढतीळ. ज्यामुळे भविष्यात ळाभ होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ आहे. त्यामुळे सांसारिक कार्यात यश मिळून उन्नतीपथावर अग्रेसर व्हाळ. त्याचबरोबर आर्थिक स्त्रोत वाढतीळ. त्यामुळे हे वर्ष सामानयतः शुभ असेळ.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी नवम् भावात कर्क राशि मधीं स्थित आहे।

फलादेश - 2030

गोचरीने यंदा गुरु अकराव्या भावात आहे. म्हणून हे वर्ष सुखाचे असेळ. ह्या काळात भरपूर धनप्राप्ती होईळ व आर्थिक स्थिती सृदृढ़ असेळ. व्यापारात किंवा नोकरीत अपेक्षित सफळता मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीची शक्यता आहे. ज्योतिषशास्त्रावरचा तुमचा विश्वास वाढेळ मानसिक संतुष्टि अनुभवाळ. सामाजिक क्षेत्रात प्रतिष्ठा वाढेळ व कीर्ति दूरवर पसरेळ. गोचरफळ व दशाफळ पण चांगळे आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे जाईळ.

गोचरीने शनी यंदा सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे असेळ. यंदा व्यापारात किंवा नोकरीत इच्छित सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती सुदृढ़ असेळ व भरपूर धनप्राप्ती होईळ. ह्या काळात व्यापारात आश्चर्यजनक व उन्नतीकारक परिवर्तन होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर नोकरीत महत्वाचे पद मिळेळ. ह्या काळात ळाभदायक प्रवास सम्पन्न काराळ. ज्यामुळे तुमचा प्रभाव वाढेळ. ह्या काळात शत्रूळा पराजित कराळ. एरवाद्या स्पर्धात्मक परीक्षेत किंवा खटल्यात सफळता मिळेळ. ह्याशिवाय अन्य गोचर अशुभ असळे तरी दशा शुभ असल्याने क्वचित्प्रसंगी शुभ फळांमध्ये कमी जाणवेळ पण कष्ट व बुधीच्या जोरावर तुम्ही इच्छित सफळता मिळावाळ.

यंदा गोचरीने राहू बाराव्या भावात तर केतू सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष मिश्रित (शुभाशुभ) फळे देईळ. ह्या काळात प्रकृती मध्यम असेळ. मानसिक चिंता सतावतीळ. दूरवरचे प्रवास किंवा परदेशी जाण्याचा योग आहे. ज्यावर खर्च अधिक होईळ. त्याचबरोबर करमणुकीच्या गोष्टींवर खर्च कराळ. त्याचबरोबर करमणुकीच्या गोष्टींवर खर्च कराळ. त्यामुळे आर्थिक त्रास संभवतो. पण हाव्या भावातीळ केतूमुळे कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ व समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या काळात शत्रूंवर विजय मिळवाळ. पण डोळयाचे विकार होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर अन्य गोचर अशुभ पण दशा शुभ असेळ. त्यामुळे शुभ फळांबरोबरच अशुभ फळेही मिळतीळ.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी नवम् भावात कर्क राशि मधीं स्थित आहे।

फलादेश - 2031

गोचरीने गुरु यंदा बाराव्या भावात असेळ. प्रकृती मध्यम असळी तरी मानसिकदृष्टया अशांती अनुभवाळ. आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. खर्च वाढता असल्याने त्रास होईळ. यंदा एरवादे मंगळ कार्य घडेळ ज्यावर खर्च संभवतो. नोकरीत उन्नतीकरता कष्ट करावे ळागतीळ व कमीअधिक प्रमाणात सफळता मिळेळ. यंदा प्रवास संभवतात. त्याचबरोबर खर्च वाढल्याने आर्थिक विषमता राहीळ. पण भविष्यात लाभ संभवतो.त्याचबरोबर या काळात अन्य गोचर शुभ पण दशा मध्यम असेळ. सांसारिक कार्यात कष्टानेच ळाभ व सुखप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर प्रयत्नपूर्वक मिळकतीच्या साधनांमध्ये वाद होईळ. नियमितपणे गुरुची पूजा, व्रत तथा दानादि करावे.

गोचरीने शनी यंदा सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे असेळ. यंदा व्यापारात किंवा नोकरीत इच्छित सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती सुदृढ़ असेळ व भरपूर धनप्राप्ती होईळ. ह्या काळात व्यापारात आश्चर्यजनक व उन्नतीकारक परिवर्तन होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर नोकरीत महत्वाचे पद मिळेळ. ह्या काळात ळाभदायक प्रवास सम्पन्न काराळ. ज्यामुळे तुमचा प्रभाव वाढेळ. ह्या काळात शत्रूळा पराजित कराळ. एरवाद्या स्पर्धात्मक परीक्षेत किंवा खटल्यात सफळता मिळेळ. ह्याशिवाय अन्य गोचर अशुभ असळे तरी दशा शुभ असल्याने क्वचित्प्रसंगी शुभ फळांमध्ये कमी जाणवेळ पण कष्ट व बुधीच्या जोरावर तुम्ही इच्छित सफळता मिळावाळ.

यंदा गोचरीने राहू बाराव्या भावात तर केतू सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष मिश्रित (शुभाशुभ) फळे देईळ. ह्या काळात प्रकृती मध्यम असेळ. मानसिक चिंता सतावतीळ. दूरवरचे प्रवास किंवा परदेशी जाण्याचा योग आहे. ज्यावर खर्च अधिक होईळ. त्याचबरोबर करमणुकीच्या गोष्टींवर खर्च कराळ. त्याचबरोबर करमणुकीच्या गोष्टींवर खर्च कराळ. त्यामुळे आर्थिक त्रास संभवतो. पण हाव्या भावातीळ केतूमुळे कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ व समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या काळात शत्रूंवर विजय मिळवाळ. पण डोळ्याचे विकार होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर अन्य गोचर अशुभ पण दशा शुभ असेळ. त्यामुळे शुभ फळांबरोबरच अशुभ फळेही मिळतीळ.

शुक्र ची महादशा मधीं शुक्र चा अंतर 14/07/2031 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर रवि चा अंतर प्रारंभ होणार। शुक्र नवम् भाव मधीं कर्क राशि मधी स्थित आहे। पण रवि दशम् भाव मधीं सिंह राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी मिळा–जुळा फळ देणार पण शुभ फळ जास्ती भेंटणार अतः परिश्रम आणि योग्यता पासून इच्छित परिणाम प्राप्त करणारे. ह्या वेळी प्रभाव युद्द माणूस बरोबर संपर्क स्थापित होणार जूने कार्य पण पूर्ण होणारे. समाजातीळ सहयोग आणि सम्मान प्राप्त होणार, कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी मधे उन्नति होणारी तसेच परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार. काही तरी प्रवास पासून फायदे होणार. ह्या वेळी आवास सम्बन्धातीळ परिवर्तन होउ सकतो. अतः समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी अत्यंत शुभ आणि महत्व पूर्ण आहे अतः साहस आणि आत्म विश्वास उत्पन्न होणार. उत्तम कार्य पासून समाज प्रभावित होणार आणि सम्मान प्रदान करणार. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धन लाभ होणार आणि सहयोग संवन्ध, स्थापित होणार. सूर्य अंतर्दशा मधे आपण नेहमी मान सम्मान आणि यश प्राप्त करणारे मित्र पासून वांछित लाभ प्राप्त होणार तसेच उच्च पद प्राप्त होणार. कोणी प्रतियागिता परीक्षा मधे सफळता प्राप्त करणारे आणि शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी कोर्ट केश वगरे मधे लाभ आणि सफळता प्राप्त करणारे आणि शत्रु वर विजय प्राप्त होणारी कोर्ट केश वगेरे मधे लाभ आणि सफलता प्राप्त होणारी कुटुम्ब सुख, समृद्धी आणि शान्ती प्राप्त होणारी.

फलादेश - 2032

गुरु ह्यावर्षी गोचरीने तुमच्या पत्रिकेत द्वितीय भावात असेळ. त्याच्या शुभ प्रभवाने तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. कौटुम्बिक सुखशान्ती व समृद्ध ीकरता हे वर्ष चांगळे आहे. ळोक प्रेमाने वागतीळ. ह्यावर्षी तुम्हाळा पुत्रप्राप्ती संभवते. खर्च वाढल्याने मन खिन्न असेळ. सामाजिक प्रतिष्ठेकरता हे वर्ष शुभ असेळ व समाजात प्रतिष्ठित व्यक्ती म्हणून आदर मिळवाळ. धार्मिक कार्यांची आवड निर्माण होईळ व वाणीमध्ये माधुर्य व ओजस्विता वाढेळ. अन्य ळोक तुमच्या बोळण्याने प्रभावित होतीळ. ह्यावर्षी माळमन्ता व व्यापारात इच्छित ळाभ मिळवाळ. पण यंदा अन्य गोचरफळ जास्त शुभ नसेळ व अशुभ फळे मिळतीळ. पण दशाफळ अनुकूळ असेळ. तथापि कधी–कधी उपर्युक्त चांगल्या फळांमध्ये न्यूनता येईळ, पण अत्यधिक परिश्रम व संघर्षानी चांगळी फळे मिळतीळ.

गोचरीने यंदा शनीची स्थिती सातव्या भावात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुम्ही पराक्रम व कष्टाने कार्यक्षेत्रात उन्नती कराळ. नोकरी किंवा राजकारणात एखादी सफळता मिळू शकते. ह्या काळात पत्नी व आईची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर कवचित्प्रसंगी परस्पर संबंधात तणाव निर्माण होतीळ. चिंतीत असाळ. पण दैनंदिन कार्ये कष्टपूर्वक सम्पन्न कराळ, व त्यात सफळता पण मिळेळ. आर्थिक स्थिती ह्या काळात मध्यम असेळ पण भविष्यात ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर प्रवासाचे योग आहेत. पण त्यातून ळाभ कमी व खर्च जास्त होईळ.त्याचबरोबर अन्य गोचरफळ शुभ परंतु दशा विशेष अनुकूळ नसेळ. त्यामुळे अडथळे येतीळ. पण त्यातून मार्ग काढाळ व सफळता मिळावाळ. त्याचबरोबर तुम्ही घर किंवा इस्टेटीसंबंधी एरवादी योजना बनवू शकता.

गोचरीने यंदा राहू अकराव्या भावात व केतू पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळे देणारे असेळ. वेळप्रसंगी अशुभ फळे पण मिळतीळ. व्यापार व नोकरीत ह्या काळात कष्टाने सफळता मिळेळ. ळाभ मार्ग प्रशस्त होतीळ. नोकरी किंवा राजकारणात ह्या काळात पदप्राप्ती होईळ. ज्यामुळे समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. आर्थिकदृष्ट्या हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ असेळ. धनवृद्धी होईळ. परंतु कधी–कधी क्रोध प्रदर्शित कराळ. तसेच मुळांकडून त्रास संभवतो. ह्या काळात त्यांच्या प्रकृतीची काळजी ह्यावी. त्याचबरोबर अन्य गोचर प्रतिकूळ आहे तर दशा शुभ आहे. त्यामुळे ह्या वर्षी शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

शुक्र ची महादशा मधीं रवि चा अंतर 14/07/2032 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर चन्द्र चा अंतर प्रारंभ होणार। रवि दशम् भाव मधीं सिंह राशि मधी स्थित आहे। पण चन्द्र द्वितीय भाव मधीं धनु राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आहे अतः सूर्य प्रभाव पासून साहस आणि आत्म विश्वास उत्पन्न होणार. शुभ आणि विशेष कार्य सफळ होणार जुने कार्य सफल होणार आणि आकांक्षा पूर्ण होणारी कार्य क्षेत्र आणि सामाजिक स्थिति परिवर्तन होणार. मोठे अधिकारयां पासून संवन्ध स्थापित होणार आणि मित्र वर्ग हार्दिक सहयोग प्रदान करणारे. शत्रु वर विजय प्राप्त

होणारी समय सदुपयोगी आहे अतः प्रयत्न क न सफळता प्राप्त करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि महत्वपूर्ण आहे अतः आर्थिक स्थित चांगली रहणारी अनेक प्रकारांचे धन लाभ होणार नौकरी मधे पदोन्नती होणारी कुटुम्विक सुख शान्ती आणि परस्पर संबन्ध मधुर रहणार. कोणी मंगळ कार्य पण संपन्न होणार समान आणि यश प्रतिष्ठा प्राप्त करणारे, मोठे अधिकारयां पासून संबन्ध स्थापित होणार तसेच सहयोग प्राप्त होणार. कोणी प्रवास पासून भविष्य साठी चांगली प्रयोजने तैयार होणारी अतः समय सदुपयोग करा आणि उन्नती मार्ग वर कार्य करा.

फलादेश - 2033

गोचरीने यंदा गुरु तृतीय भावात असेळ. म्हणून त्याच्या प्रभावाने तुम्ही दूर वा जवळचे प्रवास कराळ व त्यापासून कमीअधिक प्रमाणात ळाभ होईळ. साहित्य व दर्शनशास्त्राविषयी आवड ह्या काळात निर्माण होऊ शकते. ह्या वर्षी जुन्या मित्रांकडून ळाभ होईळ व सहकार्य मिळेळ. त्याचप्रमाणे नवीन मित्रांची ओळख होईळ ज्यामुळे भविष्यात ळाभ संभवतो. शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्याच्या दृष्टीने हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ व संकुचितपणा सोडून तुम्ही विशाळतेचे प्रदर्शन कराळ. फळतः समाजात मान–सन्मान वाढेळ. पण अन्य गोचर ह्या काळात चांगळे नाही तरी दशाफळ चांगळे असल्यानी शुभ फळांमध्ये कधी–कधी कमतरता दिसेळ. पण अतिरिक्त परिश्रम व संघर्षानी तुम्ही चांगळी फळे मिळवू शकता.

गोचरीने यंदा शनीची स्थिती सातव्या भावात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुम्ही पराक्रम व कष्टाने कार्यक्षेत्रात उन्नती कराळ. नोकरी किंवा राजकारणात एखादी सफळता मिळू शकते. ह्या काळात पत्नी व आईची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर कवचित्प्रसंगी परस्पर संबंधात तणाव निर्माण होतीळ. चिंतीत असाळ. पण दैनंदिन कार्ये कष्टपूर्वक सम्पन्न कराळ, व त्यात सफळता पण मिळेळ. आर्थिक स्थिती ह्या काळात मध्यम असेळ पण भविष्यात ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर प्रवासाचे योग आहेत. पण त्यातून ळाभ कमी व खर्च जास्त होईळ.त्याचबरोबर अन्य गोचरफळ शुभ परंतु दशा विशेष अनुकूळ नसेळ. त्यामुळे अडथळे येतीळ. पण त्यातून मार्ग काढाळ व सफळता मिळावाळ. त्याचबरोबर तुम्ही घर किंवा इस्टेटीसंबंधी एरवादी योजना बनवू शकता.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

ह्या वर्ष शुक्र ची महादशा मधीं चन्द्र चा अंतर रहणार। चन्द्र द्वितीय भाव मधीं धनु राशि मधीं स्थित आहात पण शुक्र नवम् भाव मधीं कर्क राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आहे, अतः उत्साह आणि पराक्रम वृद्धी होणारी. उन्नती मार्ग सफळ होणार, भविष्य साठी नवीन कार्य ची आशा उत्पन्न होणारी. विषय परिस्थित साठी सफळ रहणारे व्यापार क्षेत्र मधे उत्तम धन लाभ होणार कुटुम्ब सुख शान्ती चांगली रहणारी आणि परस्पर मधुर संवन्ध स्थापित होणार. कोणी मंगळ उत्सव होणार अतः समय सदुपयोग करावे आणि हुसार रहावे.

फलादेश - 2034

गोचरीने गुरु यंदा चतुर्थ भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात शारीरिकदृष्टया तुम्ही सुखी असाळ. कौटुम्बिक सुखात वाढ होईळ. व सर्व ळोक मिळून मिसळून वागतीळ. ह्या वर्षी तुमच्या योजना पूर्ण होतीळ. व्यापार व कार्यक्षेत्रातीळ उन्नतीकरता हे वर्ष शुभ व अनुकूळ असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ व आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती होईळ. जवळचे ळोक प्रशंसा करतीळ व प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या वर्षी माळमत्ता व घराच्या दृष्टीने सुख व ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर आई व सासवरच्या ळोकांकडून सहकार्य व ळाभ होऊ शकतो. गोचरफळ ह्या काळात अशुभ असळे तरी दशाफळ शुभ असेळ. म्हणून उपर्युक्त फळांमध्ये कमतरता राहीळ. पण परिश्रमाने त्यात तुम्ही सफळता मिळवू शकता.

गोचरीने यंदा शनीची स्थिती सातव्या भावात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुम्ही पराक्रम व कष्टाने कार्यक्षेत्रात उन्नती कराळ. नोकरी किंवा राजकारणात एखादी सफळता मिळू शकते. ह्या काळात पत्नी व आईची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर कवचित्प्रसंगी परस्पर संबंधात तणाव निर्माण होतीळ. चिंतीत असाळ. पण दैनंदिन कार्ये कष्टपूर्वक सम्पन्न कराळ, व त्यात सफळता पण मिळेळ. आर्थिक स्थिती ह्या काळात मध्यम असेळ पण भविष्यात ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर प्रवासाचे योग आहेत. पण त्यातून ळाभ कमी व खर्च जास्त होईळ.त्याचबरोबर अन्य गोचरफळ शुभ परंतु दशा विशेष अनुकूळ नसेळ. त्यामुळे अडथळे येतीळ. पण त्यातून मार्ग काढाळ व सफळता मिळावाळ. त्याचबरोबर तुम्ही घर किंवा इस्टेटीसंबंधी एरवादी योजना बनवू शकता.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

शुक्र ची महादशा मधीं चन्द्र चा अंतर 14/03/2034 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर मंगळ चा अंतर प्रारंभ होणार। चन्द्र द्वितीय भाव मधीं धनु राशि मधी स्थित आहे। पण मंगळ एकादश भाव मधीं कन्या राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी सामान्य उत्तम आहे अतः साहस आत्म विश्वास चांगला रहणार. महत्वपूर्ण कार्य सफळ होणार आणि शुभ अवसर चांगला रहणार. कुटुम्ब सुख शान्ती उत्तम रहणारी साहित्य कला कविता मधे चि उत्पन्न होणारी. आणि लाभ होणार मान–सम्मान आणि यश प्राप्त होणार आर्थिक स्थिति उत्तम रहणारी आणि कुटुम्ब मधे मांगळिक कार्य सम्पन्न होणार मित्र आणि सम्वन्धी पासून सहयोग प्राप्त होणार आणि अतिरिक्त लाभ होणार. कोणी

प्रवास पण होणारी आणि फायदे पण अतः समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि उन्नति कारक आहे अतः ह्या वेळी इच्छा होणारी तसेच जूने कार्य पूर्ण होणारे. व्यापार क्षेत्र मधे सफळता प्राप्त होणारी तसेच नोकरी मधे उन्नति होउ सकतो. मोठे अधिकारयां पासून मधुर संबन्ध रहणार तसेच धन लाभ होणार आणि वांछित कार्य सफळ होणार. काही तरी प्रवास आणि प्रवास पासून फायदे होणार कुटुम्ब मधे परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार अतः समय सदुपयोग करावे.

दशा विश्लेषण

महादशा :– केतु
(02/09/2025 - 14/03/2028)

केतु की महादशा 02/09/2025 को आरम्भ और 14/03/2028 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु दशम भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति, समृद्धि, विरोधियों पर विजय तथा कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको यश ओर ख्याति मिलेगी और जीवन में प्रगति तथा लाभ होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप खुश और आशावादी होंगे। केतु के कारण आपको संक्रामक बीमारी तथा विषाणुजन्य बुखार, चर्मरोग, हृदय-पीड़ा, निचले अंगों में पीड़ा बुखार फोड़ा तथा अल्सर आदि हो सकते हैं। समय पर उपाय करने से इनसे बचाव हो सकता है।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। व्यवसाय-व्यापार में उपार्जन अच्छा होगा। शत्रुओं-विरोधियों पर विजय मिलेगी। सट्टा-कार्य कम करें। पिता से कुछ लाभ होगा। जीविका-व्यवसाय के लिए कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, परिष्कृत कला, इंजीनियरिंग, सम्पर्क अधिकारी का कार्य, न्यायिक सेवा, प्रबन्धन तथा भाषा के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। रत्न, विलासिता-सामग्री, कम्प्यूटर, चमड़े के सामान, कपड़े, रबड़ तथा प्लास्टिक आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को कार्य स्थान में अनुकूल परिवर्तन आय में वृद्धि तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आपको वरिष्ठ कर्मचारियों का अनुग्रह तथा सहकर्मियों-सहयोगियों का सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों के जीवन में प्रगति, आय में वृद्धि तथा लाभ और व्यापार का विस्तार होगा। आर्थिक और व्यावसायिक उन्नति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। आपकी जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी और साझेदारी में लाभ होगा। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और बड़ी दोनों यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे। आपको परीक्षा तथा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। भाषा, दवा, प्रबन्धन, इन्जीनियरिंग तथा विधि के विषयों

में आपकी रुचि होगी। आप कूटनीतिक और स्नेही हैं और आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी। समाज सेवा में आपकी रुचि होगी।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों की विरोधियों पर विजय और कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी। उन्हें आपकी सहायता की जरूरत हो सकती है। आपके जीवनसाथी को सुख, जमीन जायदाद में वृद्धि और कुछ परिवर्तन होगा। आपकी माता को साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी जबकि पिता की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी और उनके साथ अचानक कोई घटना घटेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक लाभ और हानि और कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्या होगी जबकि बड़ों के आवास या व्यवसाय में परिवर्तन, यात्रा और व्यय होगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति और जीवन में प्रगति होगी। शुक्र की दशा में बच्चों से सुख, शिशु का जन्म, सफलता तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यवसाय में लाभ होगा। मंगल के कारण जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और सगे-संबंधियों से सहायता मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में यश और ख्याति की प्राप्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सफलता मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन-समृद्धि, यश तथा सफलता मिलेगी।

अंर्तदशा :- केतु - गुरु
(02/09/2025 - 06/02/2026)

आपके लिए केतु महादशा 02/09/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 02/09/2025 को प्रारंभ होकर 06/02/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आपको अचानक धनागम हो सकता है। जीवनसाथी के धन से लाभ हो सकता है। विरासत में धन मिल सकता है। पराविद्या, ज्योतिष आदि में रुचि हो सकती है। आप धनी बनेंगे, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपकी शिक्षा उत्तम होगी। मधुर वाणी द्वारा प्रभावशाली बनेंगे। खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्रा हो सकती है, अध्यात्म में रुचि संभव है।

आपके जीवनसाथी की आय बढ़ेगी, वे धनी बनेंगे, सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके पिता की यात्राएं हो सकती हैं। माता भाग्यशाली रहेंगी, धनागम उत्तम होगा। आपके भाई-बहनों के लिए शत्रुओं पर विजय, उत्तम स्वास्थ्य, मामा पक्ष के लोगों से लाभ, कार्यक्षेत्र में सफलता और प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान के बहुत से मित्र होंगे, शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो लघु यात्राएं हो सकती हैं। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; मामूली व्याधि संभव है। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीली वस्तुएं दान में दें।

अंर्तदशा :- केतु - शनि
(06/02/2026 - 18/03/2027)

आपके लिए केतु महादशा 02/09/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 06/02/2026 को प्रारंभ होकर 18/03/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आपका ज्ञानार्जन उत्तम होगा। सर्जनात्मक कार्य करेंगे। विवाह हो सकता है या विवाह/साझेदारी के कारण ज़िम्मेदारियां बढ़ सकती हैं। धनार्जन उत्तम होगा, समृद्धि बढ़ेगी। प्रभावशाली मित्र होंगे जो लाभकारी सिद्ध होंगे।

आपके जीवनसाथी की आय बढ़ेगी; निवेश से लाभ होगा। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि होगी। माता की आय में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए लघु यात्रा,

महादशा :– शुक्र
(14/03/2028 - 14/03/2048)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 14/03/2028 को आरम्भ होकर 14/03/2048 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र नवम भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है, और संगीत, नाटक और आनन्द का द्योतक है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में निम्न का जबकि मीन राशि में उच्च का होता है। यह विवाह का कारक भी है। नवम भाव में स्थित होकर यह आपकी जन्म कुण्डली के तृतीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् तृतीय भाव विश्वास, भाग्य, धार्मिक तथा अध्यात्मिक आस्था, ध्यान, त्याग, दान, पिता, गुरु, लम्बी यात्रा, उच्च शिक्षा, विदेश यात्रा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फल स्वरूप आपको कोई क्षति नहीं होगी तथा आप बिना किसी समस्या के एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र नवम भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप आपको इस दशा काल में चल तथा अचल सम्पत्ति अर्जित करने का अवसर मिलेगा। आप अपने कर्म और पिता सहित गुरु जनों के आशीर्वाद से काफी धन एकत्र कर पाएँगे।

व्यवसाय :

शुक्र नवम् भाव में स्थित है जिसके फलस्वरूप आप अपने पारिवारिक व्यवसाय को जारी रखेंगे। आप भाग्यशाली हैं, आपको ख्याति मिलेगी, शिक्षा-प्रशिक्षण आपके पारिवारिक व्यवसाय को बड़े स्तर में ले जाने में सहायक होगा।

आप विदेश यात्रा कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

नवम भाव में स्थित शुक्र के फलस्वरूप आपके पिता दीर्घायु और समृद्धिशाली होंगे। आपकी दान-पुण्य के कार्यों में रुचि हो सकती है। आप अपने परिवार की परंपरा का निर्वाह करते हुए धनोपार्जन करेंगे। आपके जीवन साथी आपके सहयोगी होंगे। और परिवार को एकरूपता से प्रगति के पथ पर ले जाएंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपके पदचिह्नों का अनुसरण करेंगे।

अंर्तदशा :– शुक्र – शुक्र
(14/03/2028 - 14/07/2031)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/03/2028 को प्रारंभ होकर 14/03/2048 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 14/03/2028 को प्रारंभ होकर 14/07/2031 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभ ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 3रे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका व्यवहार नीतिपूर्ण रहेगा, वाणी मृदु होगी। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से संबंध बिगड़ सकते हैं, जिससे धनहानि संभव है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

- चींटिओं को चीनी और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।
- लक्ष्मीजी की उपासना करें।

योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

चक्रवर्ती राजयोग

एकोऽपि विहगः कुर्यात्पंचमांशगतो नृपम्।
समस्तबलसम्पन्नश्चक्रवर्तिनमेव च ।।
।। सारावली ।। अ. 35 /श्लोक 64।।

यदि कोई भी ग्रह कुण्डली में अपने पंचमांश में स्थित हो तो जातक राजा होता है और यदि पूर्णबली हो तो चक्रवर्त्ती राजा होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण प्रतिष्ठत हो रहा है। फलस्वरूप आप एक प्रसिद्ध सम्मानित देश-विदेशों में प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले राष्ट्राध्यक्ष/राज्याध्यक्ष अथवा सर्वोच्चाधिकारी होकर पूर्ण राज-सुख प्राप्त करेंगे।

अमलयोग

चन्द्राव्द्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19–2

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.–49

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये शुभदृष्टिसमन्विते ।
शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा बुद्धिमान्नीतिमान् भवेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.–3

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश शुभग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में हो तो बुद्धिमान् तथा नीतिमान् योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 36 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान् तथा नीतिमान् होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रहीन योग

शुक्रेन्दुवर्गे सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युतेऽथ दृष्टे ।
शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः ।।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.–1

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से पंचम भाव शुक्र या चंद्रमा से दृष्ट, युक्त और वर्ग में हो और उसपर शनि एवं मंगल की दृष्टि हो तो पुत्रहीन योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,मंगल,शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।
सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।।
।। फलदीपिका–अ.14/श्लो.–23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यिद उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

गजकेसरी योग

''केन्द्रस्थिते देवगुरौ शशाङ्काद्योगस्तदाहुर्गजकेसरीति।
दृष्टे सितार्येन्दुसुतैः शशाङ्के नीचास्तहीनैर्गजकेसरीस्यात्।।''
।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 1 ।

चन्द्रमा से केन्द्र में गुरु हो तो गजकेसरी योग होता है और चन्द्रमा नीच अस्तादि में न गये हुये शुक्र, गुरु और बुध से देखा जाता हो तो भी गजकेशरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में गजकेसरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धनी, मेधावी, गुणी तथा राजप्रिय सम्मानित पुरुष होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 34 ।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध,गुरु योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

केमद्रुम योग

''चेत्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।
प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 43

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो "केमद्रुम" योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "केमद्रुम" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 51

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. –योगाध्याय–श्लो. 51

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : मंगल,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।